PUNCHER LIFE

ज़िंदगी उलझी है, दिमाग़ नहीं

RAKESH KUMAR SARVODAYA

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Rakesh Kumar Sarvodaya 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-672-1

Cover design: Yash Singhal
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: July 2025

Puncher LIFE

यह सिर्फ़ एक कहानी नहीं, एक अनुभव है।

चार दोस्त, एक सपना, और एक शहर – मुंबई।

यह उपन्यास दिखाता है कि कैसे एक आम आदमी जब सपनों की नगरी में कदम रखता है, तो वो सिर्फ़ नौकरी नहीं, बल्कि खुद को भी तलाशता है।

हँसी, तकरार, संघर्ष, मोहब्बत, धोखा, और जीवन की वो हर गली... जहाँ पंचर तो टायर में होता है, मगर ज़िंदगी रुक जाती है।

पढ़िए "Puncher LIFE" – क्योंकि हर ज़िंदगी कभी ना कभी पंचर ज़रूर होती है।

पाठकों को ख़ास सन्देश : -

‘‘बिना "कामयाबी" के आपका "संघर्ष"

"दुनिया" की नज़रो में पूरी तरह से "शून्य" है’’

और

जिनके ‘‘शब्द’’ अच्छे हो

ज़रूरी नहीं उनका ‘‘दिल’’ भी उतना ही ‘‘अच्छा’’ हो।

इसलिए कभी भी किसी भी ‘‘लेखक की लेखनी’’ और उसके अच्छे ‘‘शब्दों’’ से उसके ‘‘चरित्र’’ का अंदाज़ा तुरंत मत लगाना। यहाँ सब कुछ गोलमाल है।

Puncher Life

Rakesh Kumar Sarvodaya

Acknowledgement

इस उपन्यास "Puncher LIFE" की यात्रा ज़रूरत बन गई , लिखना तो नहीं चाहता था , मगर लिखना पड़ा , पूरा होने के बाद पता चला काश पहले कर लिया होता ।

मैं धन्यवाद देता हूँ कुछ दोस्तों का जिसमे “Usha Danu” जी सबसे “प्रमुख” है, सबसे प्रमुख मतलब एकदम सुनसान अँधेरे में एक दीपक की तरह । Sheeba Udhayakumar जी का जो हिंदुस्ताम टाइम्स मुंबई की लाइफ और नौकरी से लेकर आज तक बेहद ख़ास है, Rajesh Mohite जो मुंबई की यात्रा शुरू होने से लेकर आज तक साथ साथ और कुछ आस पास ही है, Surender Pal का हम लगभग मुंबई की चप्पे चप्पे की ख़बर रखने वाले और एक साथ रहने की वजह से ज़रूरी बाते हमेशा करते आये, और मुंबई में अपनी एक अलग पहचान बनाने में लगे रहे, आगे भी कोशिश जारी रहेगी। Rahul Jogi जी, जो उन्नाव से है एक शानदार लेखक है, उनकी और मेरी बातचीत हर मुद्दे पर बड़ी गहराई से और गंभीर होती हैं, Navi Mumbai Airoli में मैने 10 साल बिताए, Nanu's Mens Parlour के मालिक संतोष सेन और नानू भाई जी और सागर से मेरा ख़ास लगाव रहा है। Hindustan Times Media Mumbai 2009 में मेरे Boss Mr. Rajesh Kannan GM Sales Head जीवन में आये और जिन्दगी को एक नई राह और जीने की वजह मिली, Mr. Adarsh Hoizal और Mr. Farhan Azmi जी का भी विशेष योगदान रहा, जिन्होंने ज़रूरत पड़ने पर हर संभव मेरी मदद की, कुछ ऐसे भी है जिन्होंने हमेशा साथ रहने का वादा किया था, जो आज जिंदगी से ही पूरी तरह से लापता है, शायद भविष्य में बात हो, मैंने पुरे एक साल Airtel Payments Bank गुरुग्राम हेड ऑफिस में नौकरी की, वहां काम करते समय Mr. Sumrin Segal सर जो DVP है, सर के साथ मेरा सबसे अच्छा समय बीता, बहुत लम्बे समय के बाद मैंने किसी बड़ी कंपनी में नौकरी की थी, Sumrin सर को

बैंकिंग की शानदार Knowledge से लेकर जिंदगी को देखने का उनका नज़रिया बेहद ख़ूबसूरत है, वैसे तो इंग्लिश में बातचीत करने वाले आपको ऑफिस में बहुत से लोग मिल जायेंगे मगर Sumrin सर जी की इंग्लिश जितनी दमदार है उनकी हिंदी उतनी ही ख़ूबसूरत है, Sumrin Segal सर का बहुत बहुत शुक्रिया, Vaishali Sharma जी का विशेष आभार जिन्होंने मुझपर विश्वास दिखाया और मेरे काम की सहारना की, हमारे सीनियर मेनेजर Mr. Harish Saroha सर का भी दिल से शुक्रिया, और गुरुग्राम Airtel की कैंटीन इतनी बड़ी जैसे पुरे भारत को खाने पर आमंत्रित किया हो, Mr. Sunil Mittal सर का शानदार शुक्रिया, अपने कर्मचारियों का इतने अच्छे से ख्याल रखने के लिए, दोहपर का समय बेहद ख़ूबसूरत होता था, बेहद ख़ास Shishir Shukla और Ashwani Kumar जैसे दोस्तों का साथ रहा एक साल एक महीने की तरह बीत गया, Ravi Payal और मेरी दोस्ती मुंबई की लाइफ में बिलकुल फ़िल्मी कहानी जैसी रही है, परिवार की बात करू तो मेरे छोटे भाई Satvinder Kumar का जो आज एक अच्छा गीतकार बनने की और अग्रसर है, और आने वाले समय में अपनी एक अलग पहचान बनाने में कामयाब रहेगा, मेरी बड़ी बहन, जो इस समय दिल्ली सरकार में एक शिक्षिका हैं, केवल पाठ्यक्रम नहीं पढ़ातीं वह उन "नन्हे मनों" की सोच, समझ और संस्कारों की नींव रखती हैं, जो आज के बच्चे हैं और कल के भारत निर्माण में अपना योगदान देंगे। हमारे जीवन में जब भी कोई संकट आया, वह सदैव जीवन रक्षक बनकर खड़ी रहीं न सिर्फ सलाह की तरह, बल्कि शक्ति की तरह।

मेरी छोटी बहन रेखा, अब अपने सपनों की उड़ान भर रही है। वह एक सफल व्यवसायी महिला बनने की दिशा में पूरे आत्मविश्वास के साथ अग्रसर है। उसका साहस और समर्पण हमें यह सिखाता है कि सपनों की कोई सीमा नहीं होती, बस उड़ान सच्ची होनी चाहिए।

और हमारे बड़े भाई पवन जिन्होंने हिंदुस्तान टाइम्स मीडिया में वर्षों की नौकरी करके अपने अनुभवों की पूंजी बनाई, और आज वही पूंजी उन्हें एक सफल व्यवसायी के रूप में स्थापित कर चुकी है। उनके संघर्ष और निर्णय लेने की क्षमता हमेशा प्रेरणादायक रही है। भाई बहनों की जितनी तारीफ़ की जाये वो

कम ही होगी, और इन सभी के ऊपर सर्वोपरि मेरी माँ Rajkumari का जो पिछले 10 सालो से हम दोनों भाईयों का जो हर कदम पर हर हाल में हमारे साथ रही, हर दिन एक नई उर्जा के साथ, और "मैं" 42 साल तक अविवाहित रहकर दिल्ली और मुंबई को सपनों में पिरोता रहा , हिंदुस्तान टाइम्स मीडिया की एक अच्छी नौकरी से लेकर एक "कामयाब बेरोज़गारी" तक का सफ़र बड़ा ही शानदार रहा है, Sandesh Gour भाई जी का जो एक सफल एक्टर और मॉडल है बेहद अहम् है आज मेरे जीवन में, श्री Raj Chouhan जी, जो बडे भाई जैसे कामयाब एक्टर मॉडल है जो गुरुग्राम से है, हम समय समय पर जिंदगी को बेहतर बनाने की दिशा में प्रत्यनशील है, मेरे पिताजी के गाँव Rewari – Hariyana, और माँ के गाँव Rawaldhi – Charkhi Dadri – Hariyana के बडे भाई Sunder Singh Bhargava जो एक शानदार गीतकार है, हम दोनों हमेशा अपने गीत, कविता कुछ भी लिखते है तो एक दुसरे को ज़रूर सुनाते है, अगर बात की जाये तो लेखनी में मेरे सम्मानित गुरु श्री Rakesh Chaturvedi ॐ सर और श्री Ajit Varma जी जिनके साथ हम फिल्म लाइन से जुड़े ज़रूरी अनुभव लिए, और भारत की प्रसिद सीनियर पत्रकार और लेखिका श्रीमती Roshmila Bhattacharya जी का जिन्होंने मुझे ये उपन्यास लिखने की सलाह दी , और मेरा मार्गदर्शन किया।

विशेष आभार श्री Rakesh Chaturvedi ॐ जी और श्री अजित वर्मा जी का जिनकी लेखनी और अनुभव से मुझे सही दिशा मिली, और मैंने अपनी इस फ़िल्मी कहानी को एक उपन्यास में ढाल दिया।

मैंने दोस्ती की गहराई को इस उपन्यास में बड़े ही खूबसूरत तरीके से दिखाया है, जबकि मैं पिछले 20 सालों से एक लाइन हमेशा बोलता आया हूँ, "यारी दोस्ती बेकार की बाते

" फिर भी दोस्ती जैसी चीज़े शायद होती ही होगी।

ये फ़िल्मी कहानी जैसा उपन्यास पढने वाले दुनियाभर के तमाम लोगो को सिर्फ एक बात कहना चाहूँगा, इस उपन्यास की कहानी आप आम जीवन जीने वाले

सभी लोगों में देखते नज़र आने वाले हो, सभी कहते है, *हमेशा अपने दिल की सुनो, अपने दिल की सुनो, मगर दिल की चलती ही कहाँ है मेरे भाई।*

Chapter Wise

अध्याय 1 एक कॉल, तीन ज़िंदगियाँ – चली मुंबई शहर की ओर............ 1

अध्याय 2 सफ़र की शुरुआत उम्मीदों के साथ...................................... 3

अध्याय 3 नई जगह, नए लोग – मुंबई शहर सपनों का शहर.................... 5

अध्याय 4 पहला दिन, पहली मुलाकात – अजनबी दोस्त 8

अध्याय 4A नया ठिकाना – दोस्तों का सफ़रनामा................................ 11

अध्याय 5 तस्वीरें और तकरार - डॉक्टर फोटोग्राफर............................ 13

अध्याय 6 कॉल पर पहली मुलाक़ात – प्यार की शुरुवात.................... 15

अध्याय 7 बॉस, टारगेट और मन की भड़ास.. 18

अध्याय 8 स्कोर, सेल्स की नौकरी और नोंक झोंक............................ 20

अध्याय 9 मुंबई की पहली बीयर और ढेर सारी गालियाँ 22

अध्याय 10 दूध बनाम बीयर — सुबह की खोज................................. 27

अध्याय 10A ‘नशा’ वाली चाय और लल्लन भइया की चुप्पी............ 29

अध्याय 11 तस्वीरों के पीछे छुपे चेहरे.. 31

अध्याय 12 प्लानिंग – सेल्स मीटिंग – हवा में बातें 35

अध्याय 13 मायानगरी की हैरान और रंगीन रातें................................ 37

अध्याय 14 रात की सड़क फूटपात और कुछ सवाल मुंबई से................ 40

अध्याय 15 खर्चे, कमाई और एक हल्की सी उम्मीद.......................... 43

अध्याय 16 जाम, जज़्बात और जुगाड़ 45

अध्याय 17 उम्मीद की इंस्टॉलमेंट.. 47

अध्याय 18 अप्रैल फूल या पहला प्यार ? 49
अध्याय 19 उलझन की रात – प्यार का इम्तिहान................................ 52
अध्याय 20 एक उम्मीद की सुबह.. 54
अध्याय 21 स्टेशन से महालक्ष्मी मंदिर तक 56
अध्याय 22 सिटी मॉल के शरीफ़ लफंगे... 58
अध्याय 23 मंडे वाली मंडली... 62
अध्याय 23-A राशिफल और राजवीर का सच्चा प्यार........................ 64
अध्याय 24 राहुल रॉय की वापसी 67
अध्याय 24A छोटू का नामकरण 69
अध्याय 25 इंतज़ार अब और नहीं... 71
अध्याय 26 बंदी-गृह में स्वागत.. 72
अध्याय 27 मुंबई की रात, सपनों का शहर.. 74
अध्याय 28 कभी भी कुछ भी हो सकता है – मुंबई शहर...................... 77
अध्याय 29 अब तेरी बारी... 80
अध्याय 30 "Keep Calm & Kaam Se Kaam".......................... 82
अध्याय 31 "शॉट्स के पीछे भागता डॉक्टर" 84
अध्याय 32 "अब राज की बारी" राज खुलेगा राज 86
अध्याय 33 "पूजा का मिलना" धुप में "छाँव".................................... 88
अध्याय 34 ”दो दिल एक जान" सब कहानी है 90
अध्याय 35 "मुंबई में सब कुछ फ़िल्मी है"... 93
अध्याय 36 "EMI की घंटी" दिमाग़ की दही..................................... 96
अध्याय 36 A "बैलेंस ने जवाब दे दिया" जेब ख़ाली, मगज़ मारी 98

अध्याय 37 "जो था, अब नहीं रहा" ये मुंबई है यहां सब कुछ फ़िल्मी है. 101
अध्याय 38 "नेता जी , जो जी जान से युवाओं के लिए करते है
भाषण-बाज़ी.. 103
अध्याय 39 "जुहू की शाम और उम्मीद का एक पोस्टर".................. 105
अध्याय 40 EMI की सुबह – लग गई लंका 107
अध्याय 40-A EMI वाले पीछा नहीं छोड़ते – जान चाहे EMI
ना जाए 110
अध्याय 40-B छत वाली दावत – और जिन्दगी ने ली करवट............ 112
अध्याय 41 केक, कॉल और कर्ज जो आसानी से अब पीछा नहीं
छोड़ने वाला था 114
अध्याय 42 मुंबई की वो रात , जो चारो को अब चारोखाने चित
करने वाली थी 117
अध्याय 43 "भास्कर अड्डा" (पोस्टर लोन वाला) वसई 120
अध्याय 44 "सौदा और सवाल" लोचे की घंटी 124
अध्याय 44-A "सुबह लेकर आई उम्मीदों भरी किरण".................... 126
अध्याय 45 "पैसे आए, तो प्लान बना" 128
अध्याय 45A "गौरव और ग्रांट रोड का टकराव"............................ 130
अध्याय 46 "अंतिम इच्छा - डांस बार"... 134
अध्याय 47 “डांस बार और ईमानदार से डर”.................................. 137
अध्याय 48 “रात, एक्सीडेंट और वक़्त की दौड़” 141
अध्याय 49 “सुबह लेकर आई राहत भाई सांस”.............................. 144
अध्याय 50 “पैसों की परछाई” कब तक साथ देगी.......................... 147
अध्याय 51 नेताओं की फ़ोटो – बेफ़िक्र होकर करे जनता की फ़िक्र..... 149

अध्याय 52 “कर्ज़ की परछाई” 151
अध्याय 53 “काजू-बादाम वाला रिश्ता” 153
अध्याय 54 “वापसी उसी मोड़ पर” 155
अध्याय 55 “कॉल जो नहीं लगा” क्या मामला है 157
अध्याय 56 “तालों के पीछे दोस्ती”.. 159
अध्याय 57 “छत कहीं और सही, साथ अपना हो” 162
अध्याय 58 “सांसे अभी बाकी हैं” 164
अध्याय 59 “एक रात की छांव” अपने दोस्त अमर के घर................. 167
अध्याय 60 “रिंगिंग फोन, टूटती उम्मीदें” 169
अध्याय 61 “पूरा मुंबई बेरोज़गारी ने घुमा दिया”.............................. 171
अध्याय 61 A साया बन गए दोस्त (सूरज हमेशा के लिए अस्त) 173
अध्याय 62 विलन से हीरो – सपना या हक़ीकत 177
अध्याय 63 तलाश और जिम्मेदारी – जान अटक गई 180
अध्याय 63 A पांच करोड़ की उम्मीद 184
अध्याय 64 सुराग की तलाश – मुसीबत के साक्षात दर्शन................. 186
अध्याय 65 Grant Road की रात.. 188
अध्याय 66 जिम्मेदारी बड़ी भारी – रातों के ख़िलाड़ी....................... 191
अध्याय 67 भूख, बिस्कुट और इंतज़ार... 193
अध्याय 68 पोस्टर पर सूरज – ये तो होना ही था.............................. 195
अध्याय 69 आधी बात, अधूरी कॉल.. 197
अध्याय 70 एक अनजाना चेहरा, एक जानी-पहचानी उम्मीद............. 199
अध्याय 71 वो फोटो... और वो बच्ची.. 201

अध्याय 72 अनेक सवाल , जवाब ख़ाली 204
अध्याय 73 भिवंडी का सुराग.. 207
अध्याय 74 पंचर की रात – लाइफ पंचर – ट्रक ड्राईवर..................... 209
अध्याय 75 साए पीछे-पीछे – लापता हो गए 212
अध्याय 76 खोए हुए निशान.. 214
अध्याय 77 वापसी उसी मोड़ पर – जिन्दगी या मौत........................ 216
अध्याय 78 वापसी, मगर इस बार बेख़ौफ़ 218
अध्याय 79 गुंडे खुद हुए लापता 221
अध्याय 80 आख़िरी जश्न या अगली जंग ?..................................... 223
अध्याय 81 सौ करोड़ की चुप्पी.. 226
अध्याय 82 "राज-नीति का पर्दाफाश"... 229
अध्याय 83 "पंचर लाइफ से बॉलीवुड तक" 232
उपन्यास 'Puncher Life' की झलकियाँ (Key Highlights)........... 235
लेखक परिचय 237

अध्याय 1

एक कॉल, तीन ज़िंदगियाँ – चली मुंबई शहर की और

सितम्बर की एक आम दोपहर थी। आसमान में हल्के बादल थे, और दिल्ली की गलियों में हमेशा की तरह वही पुराना शोर था—रिक्शों की आवाज़, बच्चों की चिल्लम चाली और गली के नुक्कड़ वाले समोसे की खुशबू।

राज जिसकी उम्र अभी 30 साल हैं, राज के मोबाइल की घंटी बजी। ट्रू-कॉलर स्क्रीन पर 'HR - Mumbai' चमक रहा था। उसने चौंककर फोन उठाया।

"हेलो?"

"राज जी, बधाई हो! आपका टेलीफोनिक इंटरव्यू क्लियर हो गया है। सारे डॉक्यूमेंट्स भी वेरिफाई हो गए हैं। आपको आने वाली सात अक्टूबर को मुंबई में जॉइन करना है।"

राज एक पल के लिए सन्न रह गया। मानो किसी ने उसके सीने में एक साथ हज़ारों सपनों का तूफ़ान भर दिया हो।

उधर सूरज (27) अपने कमरे में बैठा पुरानी जॉब के फॉर्म्स जला रहा था, जैसे अतीत को खुद ही राख कर देना चाहता हो। तभी उसका फोन बजा। वही Mumbai HR की कॉल। मुंबई की नौकरी की ख़बर सुनते ही उसके चेहरे पर ऐसी मुस्कान आई, जैसे बचपन की पतंग फिर से उड़ गई हो।

"माँ! हो गया! मैं जा रहा हूँ मुंबई!" सूरज ने आवाज़ लगाई। उसकी माँ चूल्हे से झांकती हुई बाहर आईं, आँखों में चमक और होंठों पर दुआ।

विजय, (28) जो अभी तक अपने जीवन को 'चलो देखते हैं' मोड में जी रहा था, अचानक संजीदा हो गया। उसने Mumbai कॉल के बाद अपना ट्रॉली बैग निकाला। धूल ज़रा हटाई, और फिर कपड़े फोल्ड करने लगा — सपनों की सिलवटों के साथ।

तीनों दोस्तों की जिंदगियों ने उस दिन एक साथ करवट ली। अलग-अलग घरों में, लेकिन एक ही शहर की ओर कदम बढ़ाते हुए।

मुंबई। सपनों की नगरी।

अब वो बस गिनती के दिन थे — सात अक्टूबर की ओर उल्टी गिनती शुरू हो चुकी थी।

अध्याय 2

सफ़र की शुरुआत उम्मीदों के साथ

5 अक्टूबर की सुबह हल्की धूप के साथ जागी थी। हवा में ठंडक थी, लेकिन दिलों में उमंग की गर्माहट थी।

रेवाड़ी, हरियाणा – सूरज का गाँव

सूरज अपने पुराने लेकिन वफादार दोस्त बबलू की बाइक पर बैठा था। दोनों की हँसी सड़क पर दौड़ रही थी, जैसे बचपन फिर से जी उठे। स्टेशन का रास्ता धूल भरा था, लेकिन सूरज की आँखों में चमक थी—मुंबई की चमक।

"भाई, बस यूँ ही याद रखना... बड़ा आदमी बन के लौटूँगा," सूरज ने मुस्कराते हुए कहा।

"जा बे, पहले टाइम पर ट्रेन पकड़ ले," बबलू ने मज़ाक किया, लेकिन उसकी आँखों में एक गर्व छिपा था।

रेवाड़ी स्टेशन की भीड़, अनाउंसमेंट की आवाज़ें, और प्लेटफार्म पर खड़ी *गरीब रथ एक्सप्रेस* सूरज के लिए ये सिर्फ ट्रेन नहीं थी, ये एक पुल था... गाँव से सपनों के शहर तक।

जैसे ही ट्रेन चली, सूरज की आँखें कुछ देर तक उस प्लेटफार्म को देखती रहीं — बबलू को, उस पुराने स्टेशन बोर्ड को, और अपने पीछे छूटते बचपन को।

आगरा – विजय की सुबह

विजय का बैग ज्यादा भारी नहीं था, लेकिन उसके कदमों में एक अजीब सी जिम्मेदारी थी। वो अपने पिता की पुरानी जैकेट पहने स्टेशन पर पहुंचा। आगरा केंट स्टेशन की भीड़भाड़ और सुबह की चाय की खुशबू में एक सुकून था, लेकिन विजय का ध्यान पंजाब मेल की ओर था।

"मुंबई... क्या तू वाकई तैयार है मेरे लिए?" उसने ट्रेन के डिब्बे में चढ़ते हुए खुद से पूछा।

जैसे ही ट्रेन ने रफ्तार पकड़ी, खिड़की से बाहर झांकते हुए उसे अपनी माँ की आँखें याद आईं—वो आँखें जो कुछ कहे बिना बहुत कुछ कह जाती हैं।

नई दिल्ली – राज की उड़ान

6 अक्टूबर की दोपहर। दिल्ली राजधानी का ट्रैफिक हमेशा की तरह थका देने वाला था। राज ऑटो में बैठा था—ब्लैक टी-शर्ट, आंखों पर चश्मा, और बैग उसके घुटनों के बीच रखा हुआ।

एयरपोर्ट के गेट पर उतरते हुए उसने एक गहरी सांस ली। *"मुंबई शहर मेरा दूसरा घर बनने वाला है..."* उसने खुद से कहा।

फ्लाइट की सीट पर बैठते ही वो सोच में डूब गया—क्या मुंबई में उसे सिर्फ नौकरी मिलेगी, या ज़िंदगी का कोई और रूप भी?

वो तीनों अब अलग-अलग दिशाओं से, अलग-अलग रफ्तारों से, लेकिन एक ही मंज़िल की ओर बढ़ रहे थे।

मुंबई।

जहाँ न तो कोई पूरी तरह से अकेला होता है, न ही पूरी तरह से अपना।

अध्याय 3
नई जगह, नए लोग – मुंबई शहर सपनों का शहर

मुंबई, 6 अक्टूबर की सुबह।

बोरीवली स्टेशन की भीड़ से निकलते हुए सूरज और विजय की आँखें बार-बार मुंबई रेलवे के इंडिकेटर पर टिक रही थीं। दोनों अनजान मगर एक ही मंजिल की तरफ बढ़ते कदम, भारी बैग, हल्की गर्मी और नए शहर का तनाव, सबकुछ एक साथ उनके कंधों पर था।

यही तो सपना था ना ?" सूरज ने पसीना पोंछते हुए अपने आप से कहा।

विजय भी मुंबई बोरीवली स्टेशन की भीड़भाड़ को देखकर हैरान मगर खुश था और मन ही मन अपने आप से बातें कर, खुंद के सवालों का खुद जवाब देकर हंस रहा था ?

कुछ घंटों की खोजबीन और लोकल की धक्कामुक्की के बाद, दोनों ने अंधेरी वेस्ट में एक छोटा सा गेस्ट हाउस बुक कर लिया। AC नहीं था, लेकिन मुंबई में एक बिस्तर मिल जाना भी किसी जंग जीतने जैसा था।

तीनों का दफ्तर, मतलब ऑफिस अँधेरी - ईस्ट वेस्ट में था, इसलिए दोनों ने वही से अगले दिन ऑफिस जाने का फैलसा किया. अब दोनो शाम ढलने का और अगले दिन के उगने का इंतजार करने लगे .

शाम होते-होते... 6 अक्टूबर राज की फ्लाइट मुंबई एयरपोर्ट पर उतरी। जबकि विजय और सूरज सुबह ही मुंबई के दर्शन कर चुके थे और अगले दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे , वो बाकी दोनों से कुछ अलग था, फ्लाइट से

आया था, दिल्ली शहर में पला बढ़ा, लेकिन दिल में वही जोश, वही बेचैनी लिए।

तो राज भी सीधे एअरपोर्ट से अँधेरी वेस्ट स्टेशन के गेस्ट हाउस में जाकर आराम फरमाने लगे, सभी ने वही से अगले दिन ऑफिस जाने का निर्णय लिया.

रात के खाने का वक्त हुआ। तीनों ने तय किया कि बाहर चलकर कुछ अच्छा खाया जाए—शहर का पहला खाना, जो अब तक अजनबी थे अब किस्मत उनको एक साथ लेकर आने वाली थी .

एक लोकल रेस्टोरेंट, अंधेरी वेस्ट

टेबल पर थाली तो थी, लेकिन ध्यान कहीं और था।

एक कोने में बैठा **गौरव**, कॉल पर बात कर रहा था।

"नहीं डियर, मैं इतना वेट नहीं कर सकता... आपको अगर रूम चाहिए तो कल तक बता देना।"

तीनों दोस्तों के कान अचानक ज़रा ज़्यादा सक्रिय हो गए। विजय, सूरज और राज उनको ध्यान खाने पर कम और गौरव की बातों पर ज्यादा था, जैसे कोई रेडार ने सिग्नल पकड़ लिया हो।

गौरव ने कॉल खत्म किया ही था कि तीनों एक साथ उसके टेबल के पास पहुँच गए।

राज (गंभीर लहजे में):

"सर, आप क्या एजेंट हो?"

सूरज (बिलकुल बेधड़क):

"मुझे अर्जेंट रूम चाहिए!"

विजय (मुस्कराते हुए):

"सर, आपका घर किस लोकेशन पर है?"

गौरव थोड़ा चौंका, फिर गहरी साँस लेते हुए बोला—

"नहीं भाई, मैं कोई एजेंट नहीं हूँ। मेरा नाम गौरव है। मैं यहीं अंधेरी में रहता हूँ। मेरा रूम यही पास में है। पर रूम चाहिए किसे?"

तीनों एक साथ बोले,

"मुझे चाहिए!"

गौरव हँस पड़ा।

"ठीक है, पहले खाना खा लो आराम से। फिर मेरे साथ चलो।"

भूख अब दूसरी प्राथमिकता थी। तीनों ने झटपट खाना निपटाया और गौरव के साथ पैदल उसके फ्लैट की ओर चल दिए।

रात का अंधेरा धीरे-धीरे गहराता जा रहा था, लेकिन शहर का उजाला इन नए दोस्तों के चेहरों पर उतर आया था।

गौरव का रूम 2 BHK था, साफ-सुथरा होने के साथ साथ एक अच्छी खासी जगह पर था तीन जज़्बाती लड़कों के लिए।

राज ने कहा, "हम तीनों मिलकर रेंट पे कर देंगे।"

गौरव ने मुस्कराकर चाभियाँ बढ़ा दीं, और कहा भाई यहाँ डिपाजिट के बिना कोई रूम नहीं मिलता, मगर मुझे लगता है इस बार बहुत कुछ बदलने वाला है,

"कल शाम से तुम लोग शिफ्ट हो जाना।"

तीनों दोस्तों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

मुंबई अब थोड़ी और 'अपनी' लगने लगी थी।

अध्याय 4
पहला दिन, पहली मुलाकात – अजनबी दोस्त

मुंबई में सुबह की हलचल कुछ अलग ही होती है—ट्रैफिक की चिल्लाहट, लोकल ट्रेन की सीटी, और नए सपनों की भागदौड़।

राज, सूरज और विजय, तीनों अपने-अपने ऑफिस की ओर निकलते हैं। हर कोई थोड़ा नर्वस था, लेकिन चेहरे पर आत्मविश्वास भी था। आज उनका पहला दिन था।

राज का ऑफिस

राज जैसे ही ऑफिस पहुँचा, सामने उसके बॉस दीपक गुप्ता खड़े थे — साफ-सुथरे कपड़े, सधी हुई मुस्कान।

बॉस - दीपक गुप्ता - राज

"हेल्लो राज, कैसे हो आप? मुंबई कैसा लगा, मेरा

मतलब मुंबई आते समय कोई प्रॉब्लम तो नहीं

हुई, ऑफिस सर्च करने में कोई परेशानी तो नहीं

हुई?"

राज

"नो सर, सब ठीक रहा, कल रात ही फ्लाइट से

आया, अब जैसे ही टाइम मिलेगा मुंबई घुमने

जायेंगे।"

बॉस - दीपक गुप्ता - राज

"ओके डिअर, बट काम सबसे पहले, उसके बाद

मौज - मस्ती, याद रखना।"

राज

"ओके सर।"

सूरज का ऑफिस

सूरज की मुलाकात उसके बॉस संतोष से होती है। संतोष एकदम बेफिक्र और हँसमुख अंदाज़ में बोलते हैं—

बॉस - संतोष - सूरज

"सूरज, *ALL IS WELL*!"

सूरज

"यस सर, सब ठीक है। ऑफिस बड़ा ही अच्छा है।"

बॉस - संतोष - सूरज

"यहाँ के लोग भी बड़े अच्छे हैं, मगर तब तक

जब तक उनका काम निकल नहीं जाता।"

सूरज

"क्या सर? मैं कुछ समझा नहीं।"

बॉस - संतोष - सूरज

"जल्दी समझ जाओगे।"

सूरज हल्के से मुस्कराता है, लेकिन बात उसके दिल में कहीं अटक जाती है।

विजय का ऑफिस

विजय के ऑफिस में माहौल थोड़ा कॉर्पोरेट और प्रोफेशनल था। बॉस स्वेता जी थीं—सॉफ्ट स्पोकन लेकिन स्ट्रिक्ट।

बॉस - स्वेता - विजय

"हेल्लो विजय, *How are you?*"

विजय

"Ma'am, I am fine."

बॉस - स्वेता - विजय

"विजय, आप सोनाली से मिल लेना, वो आपको

सभी ज़रूरी काम समझा देगी।"

विजय

"ओके मेम।"

दोपहर तक सभी दोस्त अपने-अपने काम में जुट चुके थे, लेकिन दिल में एक ही बात थी—आज शाम को वो अपने **नए घर** में शिफ्ट होने जा रहे थे।

सभी के चेहरे पर थकान कम और उत्साह ज्यादा था।

अध्याय 4A
नया ठिकाना – दोस्तों का सफ़रनामा

शाम के लगभग आठ बजे होंगे। थके-हारे लेकिन खुश चेहरे लिए राज, सूरज और विजय अपना-अपना सामान लेकर अंधेरी वेस्ट की उसी बिल्डिंग के चौथे माले पर पहुँचे, जहाँ अब उनका नया ठिकाना था।

गौरव दरवाज़े पर ही खड़ा था, जैसे उनका इंतज़ार कर रहा हो।

फ्लैट दो बेडरूम, एक हॉल और किचन वाला था—**2 BHK**। सादा लेकिन साफ। शहर के हिसाब से काफ़ी बढ़िया।

जैसे ही तीनों अंदर आए, गौरव ने मुस्कुराकर स्वागत किया।

गौरव

"आप सभी का आपके नए घर में स्वागत है। वैसे

तो मैं ये रूम रेंट पर नहीं देना चाहता था, पर

लेकिन मैं तुम्हारी तरह खुशकिस्मत नहीं हूँ,

मतलब मेरी जॉब गए हुए 6 महीने हो चुके हैं।

इसलिए मैंने डिसाइड किया कि मैं अपना घर गेस्ट

हाउस बना दूँ। मैं इस रूम में रहूँगा, आप सभी

सोच लो अपने हिसाब से—जिसको जैसा अच्छा

लगे, रह सकता है, पूरी आज़ादी से।"

तीनों दोस्तों ने एक-दूसरे की तरफ देखा, फिर मुस्कुराकर गौरव से बोले,

"थैंक यू वेरी मच सर!"

इसके बाद सब अपने-अपने सामान को अनपैक करने और सेट करने में लग गए।

बॉक्स खुल रहे थे, बैग्स खाली हो रहे थे, और एक नया सफर... अब सच में शुरू हो चुका था।

अध्याय 5
तस्वीरें और तकरार - डॉक्टर फोटोग्राफर

शाम ढल चुकी थी और चर्चगेट की सड़कों पर हलकी ठंडक और समंदर की नमी फैली हुई थी। भीड़ अपने-अपने रास्तों पर थी, लेकिन एक इंसान ऐसा था जिसकी निगाहें राहगीरों के चेहरों पर टिकी थीं—उसका नाम था **डॉक्टर फोटोग्राफर**।

उसकी आदत थी—जहाँ भी कोई खूबसूरत लड़की दिखे, वहाँ कैमरा क्लिक करने से खुद को रोक नहीं पाता था।

इसी शाम उसे एक नई लड़की दिखी। एक अलग ही स्टाइल, अलग ही कॉन्फिडेंस… उसका नाम था **पूजा रेड्डी**।

डॉक्टर फोटोग्राफर उसे दूर से ही देखे जा रहा था। कैमरा हाथ में था, लेकिन नजरें कुछ और ही कैप्चर कर रही थीं।

डॉक्टर फोटोग्राफर

(लड़की को घूरे जा रहा है)

तभी पूजा खुद उसके पास आ गई, आँखों में तीखा सवाल लिए।

पूजा रेड्डी

"क्यूँ बे कमीने, कभी किसी लड़की को इतने छोटे

छोटे कपड़ों में नहीं देखा?"

डॉक्टर एकदम स्टाइल में, बिना हड़बड़ाए जवाब देता है—

डॉक्टर फोटोग्राफर

"नहीं, कभी भी नहीं। मैंने आज तक किसी भी

लड़की को इतने छोटे छोटे कपड़ों में नहीं देखा।"

फिर थोड़ी देर बाद वह अपने मोबाइल की गैलरी खोलता है, और पूजा को कुछ तस्वीरें दिखाता है।

डॉक्टर फोटोग्राफर

"हमने आज तक सिर्फ लड़की को इतने छोटे छोटे

कपड़ों में ही देखा है।"

(मोबाइल स्क्रीन पर बिकनी पहने लड़कियों की फोटो एक के बाद एक फ्लैश हो रही थी।)

पूजा थोड़ी हैरान, थोड़ी इम्प्रेस्ड सी बोलती है—

पूजा रेड्डी

"बड़े पहुंचे हुए लगते हो।"

डॉक्टर मुस्कराते हुए अपनी जेब से एक विज़िटिंग कार्ड निकालता है और पूजा की ओर बढ़ा देता है।

पूजा कार्ड लेती है और थोड़ी संजीदगी से कहती है—

(पूजा ऑफिस में मिलने का वादा करती है।)

इस छोटी सी मुठभेड़ में तकरार भी थी और कहीं न कहीं एक कनेक्शन भी। दोनों की ज़िंदगियों में यह पहली मुलाकात थी, लेकिन शायद आखिरी नहीं।

अध्याय 6
कॉल पर पहली मुलाक़ात – प्यार की शुरुवात

ऑफिस का माहौल रोज़ जैसा ही था—की-बोर्ड की आवाज़ें, कॉफी की खुशबू और मेल्स की लंबी कतार।

राज अपने डेस्क पर बैठा काम कर रहा था। टेबल पर एक कॉफी मग रखा था, जिसमें अब तक की गर्माहट महज़ आदत बन चुकी थी।

उसी वक्त उसके मोबाइल पर एक कॉल आया—**सिम्मी** का।

यह उनकी पहली बातचीत थी, और राज के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान फैल गई।

राज

"हेल्लो सिम्मी जी, कैसे हो आप? आपने जो कल

मेल किया था, उसे आज घर जाने से पहले ही

आपको पूरा करके सेंड कर दूंगा।"

सिम्मी

"ओके राज, आपने तो अभी कुछ दिन पहले ही जॉइनिंग किया है।

आपकी आवाज़ और बातों से नहीं लगता कि आप मुंबई से हो।"

राज थोड़ी सी हँसी के साथ बोला—

राज

"सही कहा आपने, मैं दिल्ली से हूँ।"

सिम्मी

"मुंबई घूमने गए या नहीं? मुंबई में कहाँ रहते हो?"

राज ने एक लंबी सांस ली, मानो थकान उसके जवाब में शामिल हो रही हो—

राज

"मुंबई घूमने की अभी फुर्सत ही कहाँ मिली है,

पूरा दिन काम और घर जाते ही आराम।"

सिम्मी

"फैमिली के साथ हो या दोस्तों के?"

राज

"गेस्ट हाउस में। कुल मिलाकर मेरे साथ और तीन

दोस्त भी हैं। अच्छा लग रहा है... टाइम मिलते ही

मुंबई दर्शन भी कर लेंगे।"

सिम्मी

"ओके, वेरी गुड। तो याद से मेरा काम आज घर

जाने से पहले ज़रूर कर देना। और हाँ, प्लीज़

WhatsApp नंबर ज़रूर मेसेज कर देना।

कुछ अर्जेंट रहा तो आपको तुरंत इंफॉर्म करूँगी।"

राज

"सिम्मी जी, मेरा WhatsApp नंबर भी यही है। आप इसे ही सेव कर लेना।

ओके सिम्मी जी।"

(राज मुस्कुराता है, फिर एक नज़र अपनी स्क्रीन पर डालता है।)

उसकी उंगलियाँ कीबोर्ड पर चलने ही लगी थीं कि तभी—

दूसरा कॉल आ जाता है।

अध्याय 7
बॉस, टारगेट और मन की भड़ास

मुंबई की भीड़ में एक अकेला लड़का—**विजय**, जिसने बड़े अरमानों के साथ इस शहर की ओर कदम बढ़ाया था।

अभी कुछ ही दिन हुए थे इस नई ज़िंदगी को जिए हुए, और विजय एक रिटेल कंपनी में **असिस्टेंट मैनेजर** बन चुका था।

ऑफिस की कुर्सी तो मिल गई थी, मगर उसपर बैठने का आराम नहीं था—क्योंकि उसकी बॉस थी… **स्वेता मेम**।

विजय के और स्वेता के बीच की केमिस्ट्री ऐसी थी जैसे गीली लकड़ी और आग—धुआं ही धुआं।

विजय अकसर मन ही मन सोचता…

"पता नहीं कहाँ फँस गया इन लेडीज़ बॉस के बीच... बेटा तू ही बोलता था, 'काश मुंबई जाकर लड़कियाँ मेरे आगे-पीछे हों।' अब भुगत बेटा, अब देख कैसी हालत हो रही है तेरी..."

अभी वो ये सोच ही रहा था कि सामने से स्वेता मेम अपनी हाई हील्स की टक-टक के साथ उसकी डेस्क पर आ पहुँचीं।

बॉस - स्वेता

"हेल्लो विजय, काम कैसा चल रहा है? जो लास्ट

वीक टारगेट दिया था, उस पर कुछ काम हुआ?"

विजय

(सीधा और शांत सा जवाब देता है)

"Yes, अभी काम स्टार्ट ही किया है। अगले वीक

तक काफी हद तक मैं उसे पूरा कर दूंगा।"

मेम के चेहरे पर हल्की सी शिकन और तीखी तुलना की बू आ गई।

बॉस - स्वेता

"सोनाली को देखो। तुमसे कुछ दिन पहले इसने भी

ज्वाइन किया है, मगर सभी टारगेट डेडलाइन से

पहले ओवर कर देती है। जाओ सोनाली से कुछ

सीखो।"

विजय के चेहरे पर बनावटी मुस्कान फैल जाती है।

विजय

"ओके मेम, मैं सोनाली से बात कर लेता हूँ।"

(जैसे ही मेम मुड़ी, विजय मन ही मन बड़बड़ाता है...)

"तुझे पता भी है उसका टारगेट कैसे पूरा हो रहा है..."

विजय ने अपनी कुर्सी पर थोड़ा पीछे झुकते हुए आंखें बंद कीं, और गहरी सांस लेते हुए सोचा—

"भगवान, ये मुंबई सपनों की नगरी है या बॉस के तानों की?"

अध्याय 8
स्कोर, सेल्स की नौकरी और नोंक झोंक

मुंबई की दोपहर, सूरज के ऑफिस की खिड़की से हल्की धूप झाँक रही थी।

सूरज—जो एक टेलीकॉम कंपनी में एरिया मैनेजर था—अपनी टीम के बीच हमेशा एक दोस्त की तरह पेश आता, मगर जब बात काम की हो, तो उसकी आँखें परफॉर्मेंस स्कोर तक घुस जाती थीं।

आज फिर वही दिन था।

वो टीम फ्लोर पर आया, और मज़ाकिया अंदाज़ में शुरू हुआ—

सूरज

"Hi, क्या हाल चाल है? कुछ काम भी हो रहा है

या ऐसे ही धूप सेंक रहे हो... और जूते तोड़ रहे हो?"

(टीम के लड़के सब एकदम शांत हो गए, जैसे अचानक कोई टेस्ट अनाउंस हो गया हो। सूरज का चेहरा सख्त नहीं था, पर उसकी बातों में तंज़ छुपा था।)

सूरज

"तो अमित, बताओ तुमने कितना स्कोर किया है?"

अमित

"सर, पूरी कोशिश कर रहा हूँ... जल्दी ही फिनिश कर दूँगा।"

सूरज

"अरे भाई, स्कोर कितना किया है, ये बताओ!

काम कितना हुआ है—'कोशिश' से KPI नहीं बनते।"

(फिर उसकी नजर धीरज पर गई।)

सूरज

"और भाई, आपके क्या हाल हैं?"

धीरज

"बस सर, चल रहा है... कुछ खास स्कोर नहीं है।"

अब सूरज थोड़ा गंभीर हुआ, मगर लहजे में अभी भी वो 'भाईवाला चेतावनी' वाला टोन बरकरार था—

सूरज

"सुनो अब ध्यान से—परसों मेरी बॉस के साथ रिव्यू

मीटिंग है। कल दोपहर तक का टाइम है।

वरना तुम्हारे साथ-साथ मेरी भी वाट लगेगी।

मेरी सिर्फ वाट लगेगी...

तुम्हारी पता नहीं क्या-क्या लगेगी।

समझे कुछ?"

(टीम के चेहरे पर हल्की मुस्कान थी, मगर साथ में एक अनकही टेंशन भी घुल गई थी। तभी सूरज का फोन बजा। स्क्रीन पर 'राज कॉलिंग' लिखा था।)

राज (फोन पर)

"भाई, आज ज़रा जल्दी घर आ जाना। थोड़ा मूड फ्रेश करना है।"

सूरज फोन के उस पार मुस्कराया—

Ok ब्रो।"

अध्याय 9
मुंबई की पहली बीयर और ढेर सारी गालियाँ

गौरव का 2 BHK फ्लैट रात की चुप्पी में हल्के शोर से गूंज रहा था। चार लड़के, चार शहरों से निकले, एक शहर में टिके और अब एक ही छत के नीचे बैठे थे। ऑफिस की टेंशन, मुंबई की दौड़ और नए-नए चेहरों के बीच एक साँझ थी—थोड़ी थकाऊ, थोड़ी मुस्कुराहट भरी।

सभी दोस्त अपने-अपने ऑफिस की बातें कर रहे थे। तभी गौरव, जो पहले से ही कुछ प्लान कर चुका था, बोला—

गौरव

"सबसे पहले बीयर ऑर्डर करो, फिर उसके बाद कुछ बात।"

राज ने ज़िम्मेदारी ली और बीयर का ऑर्डर दिया। कुछ ही देर में दरवाज़े पर नॉक हुआ और बीयर सामने थी।

सूरज

"भाई मैं तो नहीं पीता।"

विजय

"अबे पी ले, मुंबई घूमना है कि नहीं?"

सूरज

"अबे साले, इसको पीकर मुंबई घूमूं?"

राज

"विजय सच तो बोल रहा है, बेटा आज रात ही मुंबई की सैर कर ले।"

गौरव

"और सुनाओ बंदुओ, ऑफिस में क्या चल रहा है?

कोई बंदी-वंदी पटाई क्या?

या फिर पूरा दिन 'Yes Boss / No Boss' में ही एनर्जी वेस्ट हो रही है?"

(हँसते हुए बियर की बोतल उठाता है)

राज

"भाई अभी तक तो कुछ पता नहीं, शायद आगे कुछ हो जाए।"

विजय

"वाह मेरे शेर, मतलब तेरा जुगाड़ हो गया?"

राज

"जुगाड़ नहीं... हम ऐसे क्रैक्टर के नहीं हैं, होगा तो सच्चा प्यार ही होगा।"

गौरव

"सच्चा प्यार? और वो भी दिल्ली वाले?

हम तो पहली बार सुन रहे हैं ये!

बेटा ये मुंबई है, यहाँ सब कुछ फ़िल्मी है। ध्यान से!"

राज

"ओके, गुरु जी।"

सूरज

"वैसे तो हम सब में सबसे ज्यादा किस्मत वाला तो विजय निकला।

साले की बॉस भी लेडीज़ है, टीम में भी सभी लड़कियाँ हैं। क्यों बे?"

विजय

"बेटा ले लो मेरे मज़े! अगर लेडीज़ बॉस तुम्हें मिलती ना...

सारा भूत ही उतर जाता।

साली किस्मत ही फूट गई है...

UP वाले लोंडे को गालियाँ भी इंग्लिश में देनी पड़ रही है—

'Oh Shit', 'Oh F*ck'!

बहन की आँख... दिमाग की ऐसी की तैसी हो जाती है...

खुलकर गाली भी नहीं दे सकता भाई लड़कियों में।"

सूरज

"यार हमने तो YouTube पर देखा था,

मुंबई की लड़कियाँ ख़ूब गालियाँ देती हैं!"

(इतना कहकर सूरज थोड़ा झूमने लगता है। बीयर का असर चढ़ गया था।)

सूरज

"भैंस की पूँछ! भाई रे यो के मिला दियो?

मुंबई घूमने की बात कर रहे थे!"

गौरव

"तुझे गालियाँ खानी है? बे!"

सूरज

"यहाँ तो पैर के नीचे से ज़मीन खिसक रही है।

आज के बाद हाथ नहीं लगाऊंगा मैं।

भाई मुझे संभालो!"

(सभी दोस्त हँसने लगते हैं।)

राज

"भाई जी, हम तो प्यार के मामले में बिलकुल क्लियर हैं।

सोचा नहीं था, मुंबई में दिल्ली की गाली इतनी फेमस होगी।

यार, छोले-भठूरे की याद आ रही है।

वड़ा पाव, मिसल पाव... अब तो वही ब्रेकफास्ट, लंच, डिनर बनकर रह गया है।"

गौरव

"मिसल पाव तो सूरज का फेवरेट है!

इसको पहली बार खिलाया—जैसे ही भाई साहब ने ग्रेवी में फरसान डाली, तो ये बोला,

'अरे भाई, ये तरी में नमकीन क्यों डाल दी?'

इसने मिसल पाव बोला करे के—

'ये भगवान, इससे तो अच्छा लाल मिर्च-नमक-घी की रोटी चपोड़कर दे देता भाई!'"

राज (विजय से)

"और बताओ बेटा, सोनाली के क्या हाल चाल हैं?"

विजय

"भाई पता नहीं... मुझसे कुछ दिन पहले ही ऑफिस जॉइन किया है,

सारे टारगेट टाइम लाइन से पहले कम्प्लीट।

और तो और, आजकल तो आउट ऑफ स्टेट भी फ्लाइट से जाती है!"

गौरव

"बेटा, फ्लैट से फ्लाइट तक पहुँची होगी! नज़र रखो...

पता चलेगा तुझे भी मुम्बैया की लाइफ का।"

सूरज

"भाई मुझे तो अब आ रही है नींद... मेरी तरफ से सभी को राम राम।"

(सभी दोस्त हँसते-हँसते एक-दूसरे को **गुड नाइट** कहते हैं, और जहाँ-जहाँ बैठे होते हैं, वहीं पड़े-पड़े सो जाते हैं...)

अध्याय 10

दूध बनाम बीयर — सुबह की खोज

मुंबई की वो सुबह हल्की-सी ठंडी थी। कमरे में खिड़की से आती रोशनी से दीवारें धीरे-धीरे चमकने लगी थीं। बाकी सब गहरी नींद में थे, पर आज एक नया चमत्कार हुआ।

सूरज की नींद सबसे पहले खुली।

उसने आंखें मसलते हुए देखा—राज पहले से जग चुका था और मोबाइल पर कुछ स्क्रॉल कर रहा था।

सूरज

"राज, आज तो बड़ी जल्दी उठ गए। कहीं जाना है क्या?"

राज

(थोड़ी मुस्कान के साथ)

"तू आज बड़ी जल्दी उठ गया भाई... क्या बात है?"

सूरज

(थोड़ी सी हैरानी और खोज जैसी आवाज़ में)

"आज समझ में आया...

तुम सब लोग इतनी दारू और बीयर पीते हो,

फिर भी रात को लेट सोने के बाद सुबह जल्दी उठ जाते हो...

और नींद भी पूरी हो जाती है।"

(एक सेकेंड रुककर, जैसे कोई राज़ खुल गया हो)

"अब समझ आया... ये सब बीयर का कमाल था!

मैं तो हमेशा दूध पीकर सोता रहा—

और हर सुबह सोचता रहा कि मेरी नींद पूरी क्यों नहीं होती!"

राज

(हँसते हुए)

"तो फिर अबसे... बीयर SEER!"

सूरज

(हँसते हुए सिर हिलाता है)

"हाँ भाई, ज़रूर! जब भी सुबह जल्दी उठकर कहीं जाना हो तो बीयर ही सही!"

(दोनों ज़ोर से हँस पड़ते हैं।)

बाकी सब अभी तक सो रहे थे, लेकिन कमरे में सूरज और राज की हँसी सुबह को थोड़ी और हल्की, थोड़ी और मजेदार बना गई थी।

अध्याय 10A
‘नशा’ वाली चाय और लल्लन भइया की चुप्पी

सूरज और राज, सुबह-सुबह शहर की सड़कों पर थोड़ी ताज़गी लेने के लिए बाहर निकले थे। कुछ ही दूर चलते हुए, वो हमेशा वाली छोटी-सी चाय की दुकान पर पहुँचे, जिसका नाम अब “**नशा चाय वाला**” बन चुका था। पहले इसका नाम ‘निशा चाय वाला’ था, पर अब बोर्ड की पेंटिंग किसी नशेड़ी दोस्त की भावनाओं में बहकर बदली जा चुकी थी।

राज

(चाय वाले को देखते हुए, मुस्कराकर आवाज़ लगाता है)

“कैसे हो लल्लन भैया जी?”

लल्लन भइया

(चाय छानते हुए, नज़रों में अपनापन और चेहरे पर वही पुरानी मुस्कान लिए बोले)

“बस तुम्हारी दुआ से सब ठीक-ठाक चल रहा है बाबू।”

सूरज

(पास की पनवाड़ी की दुकान की ओर मुड़ते हुए)

“राज, तू रुक... मैं आता हूँ।”

वो दो सिगरेट खरीदकर लाया और एक राज की ओर बढ़ा दी। दोनों ने सिगरेट सुलगाई और चाय के लिए दो कटिंग का ऑर्डर दे दिया।

कुछ ही मिनटों में, लल्लन भइया दो छोटे-छोटे ग्लास में गर्म चाय थमा देते हैं।

दोनों दोस्तों ने ग्लास उठाकर सिगरेट के साथ हल्के-से टकराया, जैसे चीयर्स कह रहे हों — ज़िंदगी के इसी छोटे-से पल की ख़ुशी में।

कैमरा धीरे-धीरे ऊपर जाता है।

चाय की दुकान का साइनबोर्ड फ्रेम में आता है—जहाँ अब "नशा चाय वाला" लिखा है।

निशा कब 'नशा' बनी, ये कोई नहीं जानता। पर अब दुकान पर वही लिखा था।

लल्लन भइया, जो अबतक सब देख रहे थे, एक अजीब-सी उलझी हुई मुस्कान चेहरे पर लाते हैं। उनके मन में एक ही विचार चलता है—

"साले दिन में ही नशा करने लगे हैं... चाय से ज़्यादा सिगरेट की भाप उड़ रही है।"

पर वो कुछ नहीं कहते।

चाय छानते हुए, मन ही मन एक दो देसी गालियाँ बुदबुदाते हैं — जैसे हर दिन का ये 'रूटीन ड्रामा' अब उनके लिए आदत बन चुका हो।

अध्याय 11
तस्वीरों के पीछे छुपे चेहरे

दोपहर की धूप बाहर धधक रही थी, लेकिन डॉक्टर फोटोग्राफर के ऑफिस के केबिन में एसी की ठंडी हवा और टेबल पर बिखरी हुई लड़कियों की तस्वीरें माहौल को अलग ही बना रही थीं।

टिक टिक टिक...

दरवाज़े पर नॉक हुआ।

डॉक्टर फोटोग्राफर

(हल्के मुस्कान के साथ)

"हेल्लो पूजा जी, कैसे हो आप?"

पूजा रेड्डी

(दरवाज़ा खोलते हुए अंदर आई और हल्के मज़ाक में कहा)

"आपने बुलाया, और हम चले आए… इतना सीधा ऑफर तो मुंबई में कम ही मिलता है।"

डॉक्टर फोटोग्राफर

(हँसते हुए, कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए)

"और बताइए, हम आपकी क्या सेवा… नहीं, पानीनीनी कर सकते हैं?"

पूजा रेड्डी

(बैठते हुए, हल्की थकावट में डूबे स्वर में)

"काम की तलाश में पूरा मुंबई नाप लिया… पर हर जगह कोई न कोई शर्त, कोई ना कोई मोड़ आ जाता है।"

डॉक्टर फोटोग्राफर

(शरारती मुस्कान के साथ)

"आपको देखकर तो कोई भी... मेरा मतलब है... आपको काम देने में देर नहीं करेगा। फिर ये सारा झंझट क्यों?"

पूजा

(हल्का सा सिर हिलाते हुए)

"जालिम जमाना है डॉक्टर साहब... काम के साथ-साथ इज़्ज़त भी दांव पर लग जाती है। हर कोई बस तमाम कर देना चाहता है।"

डॉक्टर फोटोग्राफर

(मन में सोचता है — "तो मेरा शक सही था")

"अब जब आप यहाँ आ ही गई हैं, तो समझिए आपकी परेशानियाँ भी यहीं रह जाएँगी।"

पूजा रेड्डी

(धीरे-धीरे उसकी आँखों में नमी उतरने लगती है। बात करते-करते वह थोड़ा झुक जाती है, और उसकी डीप नेक कुर्ती से डॉक्टर का ध्यान बहकने लगता है।)

डॉक्टर फोटोग्राफर

(अपनी कुर्सी छोड़कर उसके पास आ बैठता है)

"बताइए पूजा जी... मैं आपके लिए और क्या कर सकता हूँ?"

पूजा

(थोड़ी उलझन और भावुकता में, आवाज़ धीमी हो जाती है)

"क्या आप… मेरे दुख और दर्द उठा सकते हैं?"

डॉक्टर फोटोग्राफर

(हल्की सी हिचकिचाहट में)

"मैं... मैं तुम्हारे दू… दू… दुःख और दर्द दोनों उठा सकता हूँ।"

ठाक!!

अचानक दरवाज़ा खुलता है। डॉक्टर का बॉस अंदर आता है।

डॉक्टर बॉस

(सिचुएशन को देखकर मुस्कुराता है)

"अगर कोई अर्जेंट मीटिंग चल रही है तो मैं बाहर चला जाता हूँ।"

डॉक्टर फोटोग्राफर

(घबराकर)

"नहीं बॉस, ऐसा कुछ भी नहीं है।"

बॉस

(अभी भी उसी अंदाज़ में)

"अरे, अर्जेंट है तो चला जाता हूँ… कोई दिक्कत नहीं।"

पूजा रेड्डी

(बिलकुल सीधे बॉस की ओर देखती है और कहती है)

"सर, ये बहुत अच्छे हैं… ये मेरे दुख और दर्द दोनों उठाने को तैयार हैं।"

बॉस

(हल्की हँसी में)

"अच्छा, ये बात है?"

डॉक्टर पूजा को बाहर तक छोड़ आता है और वापिस लौटता है।

बॉस

(टेबल पर पड़ी तस्वीरें देखते हुए)

"कोई मिली क्या?"

डॉक्टर फोटोग्राफर

"बस बॉस… काम चालू आहे।"

बॉस

(एक-एक तस्वीर को गौर से देखते हुए)

"ये जो नई तस्वीरें हैं, इनमें ये वाली कौन है?"

डॉक्टर फोटोग्राफर

(हाथ उस फोटो पर रखते हुए)

"वो… पूजा रेड्डी है।"

बॉस

"अरे भाई, ऐसा नाम मत लिया करो… मेरी हार्टबीट ही तेज़ हो जाती है।

कल गोवा जाना है, जल्दी से कुछ 'इंतज़ाम' कर दो।"

डॉक्टर फोटोग्राफर

(नज़रों में इशारा और हल्की मुस्कान के साथ)

"बॉस, आपकी फ्लाइट टेकऑफ से पहले, लड़की लैंड हो जाएगी।"

अध्याय 12

प्लानिंग – सेल्स मीटिंग – हवा में बातें

दोपहर के ढलते सूरज की रोशनी ऑफिस की खिड़की से अंदर आ रही थी। सूरज अपने केबिन में बैठा, अपनी टीम के सामने वाइटबोर्ड पर कुछ नए प्लान्स समझा रहा था। उसके अंदाज़ में आत्मविश्वास था, और टीम में उसे लेकर एक अजीब सा अपनापन।

सूरज

(हँसी के साथ)

"और बताओ मुंबई के शेरो! मेरे फील्ड के सिकंदर, टारगेट पूरे हुए या फिर आज भी बहाने बनाओगे?"

अमित

(हाथ जोड़ते हुए मजाक में)

"सर इस बार तो सब कुछ टाइम से पहले हो गया। आप जो ज्ञान की गंगा बहाते हो, उसी में डुबकी लगा ली।"

सूरज

(मुस्कराता है, टेबल पर हाथ रखकर झुकते हुए)

"वैरी गुड! कोई और है जिसको मेरे ज्ञान से फायदा हुआ हो, या सब अभी भी कोचिंग क्लास में ही अटके हैं?"

टीम एक साथ हँसते हुए

"काम चालू है सर!"

सूरज मुस्कराता है, लेकिन उसी पल उसके मोबाइल की स्क्रीन चमकती है।
"राज कॉलिंग..."

वो कॉल उठाता है।

राज (फोन पर)

"भाई आज रात ठीक 9 बजे घर पहुंच जाना। एक छोटा सा प्लान है।"

सूरज

"ओके बॉस, मैं आ जाऊँगा टाइम पे।"

फोन कटते ही सूरज की आवाज़ फिर से टीम के लिए तेज़ हो जाती है।

सूरज

"तो फिर ठीक है। सभी जल्दी से जल्दी काम पूरा कर लेना। कल का सूरज नया टारगेट लेकर आएगा!"

टीम तालियों के साथ माहौल को हल्का कर देती है। सूरज वापस अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है, लेकिन चेहरे पर अब एक हल्की सी उत्सुकता तैर रही थी — क्या राज ने फिर से कोई नई हरकत प्लान की है?

अध्याय 13
मायानगरी की हैरान और रंगीन रातें

टीवी पर कोई पुरानी फिल्म चल रही थी, लेकिन कमरे में बैठने वाले चारों दोस्तों के चेहरे पर ऐसी मायूसी थी जैसे किसी युद्ध में हार कर लौटे हों। सबके चेहरों पर थकान थी, और शायद थोड़ा-सा पछतावा भी — *"हम यहाँ क्यों आये?"*

उसी दौरान दरवाजे की घंटी बजी।

डिंग डॉन्ग...

राज ने जाकर दरवाजा खोला।

गौरव, एक हाथ में बाइक की चाबी, दूसरे हाथ में चालाकी भरी मुस्कान।

गौरव

"क्या हुआ? सबके चेहरे ऐसे लटक गए जैसे किसी ने ब्रेकअप के बाद सेल्फी खींच ली हो!"

राज

(आँखें तरेरते हुए)

"क्यों बे, तेरे पास क्या कोई जादू की छड़ी है जो तु सब कुछ ठीक कर देगा?"

गौरव

"भाई, हो भी सकती है।"

सूरज

(थोड़ा थका हुआ, पर तंज के अंदाज़ में)

"कुछ नहीं यार, जब से मुंबई में आए हैं, लग रहा है जैसे लाइफ ने हर मोड़ पर धोखा दिया हो। गाँव की सादी ज़िंदगी ही अच्छी थी। अब समझ आया, मुंबई रात को क्यों जागती है।"

विजय

(हैरानी से)

"क्यों बे, क्या समझ आया?"

सूरज

"हम जैसे फूटी किस्मत वाले लोगों के लिए ही मुंबई रात को खुलती है, दिन तो सिर्फ अमीरों के लिए होता है।"

राज

"अबे गौरव, तू ही बता इसे कुछ। रात की मुंबई तो दिन से भी ज़्यादा ज़िंदा होती है।"

गौरव

(सिर हिलाते हुए)

"सही बोले मेरे शेर। तो फिर प्लान बनाओ, करना क्या है?"

विजय

"भाई कल छुट्टी है, दिन भर मुंबई घूमते हैं।"

गौरव

(चुटकी लेते हुए)

"क्यों बे, तुम्हारे बीवी-बच्चे हैं क्या जो दिन में घूमोगे?"

सूरज

(हैरान)

"मतलब?"

गौरव

"मतलब बेटा, तुम सब हो कंवारे। और कंवारों के लिए असली ज़िंदगी तो रात में शुरू होती है।"

(एक सेकंड का सन्नाटा, फिर सबके चेहरे पर एक शरारती मुस्कान फैल जाती है — जैसे किसी खुराफाती प्लान पर सबका दिल एक हो गया हो।)

विजय

"सही कहां भाई तूने।"

गौरव

"तो फिर तीस मिनट में हो जाओ रेडी। मुंबई की रात हमसे मिलने आ रही है!"

अध्याय 14
रात की सड़क फूटपात और कुछ सवाल मुंबई से

मीरा रोड का डांस बार अब पीछे छूट चुका था, लेकिन उसकी हल्की गूंज अभी भी कानों में थिरक रही थी। सब दोस्त बार से बाहर आकर एक पान की दुकान के पास रुके — रात के कोई 1 या 2 बज रहे होंगे, पर दुकान वैसे ही गुलज़ार थी जैसे दिन के उजाले में होती है।

विजय

(सिगरेट सुलगाते हुए)

"कमाल है यार मुंबई, जहाँ भी देखो — पान बीड़ी की दुकानें ऐसे खुली रहती हैं जैसे रात का ही इंतज़ार करती हों।"

राज

(थोड़ा नशे में मुस्कुराते हुए)

"नशे का असली मजा तो यहीं है भाई... हर 100 मीटर पर एक बार, एक पान की दुकान — जैसे शहर हमें खुद बुला रहा हो।"

सूरज

"हाँ यार, सही कहा..."

(सूरज की नज़र अचानक सड़क पार सो रहे लोगों पर जाती है — फूटपाथ पर फैले चादर, खुले आसमान के नीचे सोती ज़िंदगियाँ। एक गहरी सांस लेकर वो बोलता है...)

सूरज

"हम हमेशा बोलते रहते हैं ना — हमारी लाइफ कब पटरी पर आएगी?

शायद इनकी तो पूरी ज़िंदगी ही पटरी पर गुज़र जाती है...

ये लोग क्या सोचते होंगे?"

(उसकी आवाज़ में उबासी और भावुकता दोनों घुली होती है।)

(एक पल का सन्नाटा, सबके चेहरे अचानक गंभीर हो जाते हैं — जैसे मस्ती की रात में कोई आइना रख गया हो उनके सामने।)

विजय

"भाई तू ऐसी बातें मत कर... सब अच्छा ही होगा। हमें यहाँ आए हुए अभी दिन ही कितने हुए हैं।"

राज

(हौसला देते हुए)

"हाँ भाई, सब जल्दी ही All Is Well होगा।"

(राज खड़ा हो जाता है, विजय फुटपाथ के किनारे बैठा होता है, और सूरज कुछ दूरी पर सिगरेट पी रहा होता है। राज पीछे से आवाज़ लगाता है...)

राज

"ए देख! बोल साले!"

(पर वो फ्रंट साइड से बोलता है — सूरज तुरंत टोकता है...)

सूरज

"अबे उल्टा हो जा साले, बैठ जा।"

(राज जैसे ही नीचे बैठता है, उसकी टीशर्ट पर लिखा हुआ शब्द 'अपना टाइम आएगा' विजय की नज़र में आता है। वो एक सेकंड को रुकता है, फिर ठहाका लगाकर उसकी पीठ पर चढ़ जाता है — जैसे अपनी उम्मीदों को फिर से पीठ पर उठा लिया हो।)

विजय

"तूने सही कहा मेरे भाई!"

(वो मज़ाक में राज की पीठ पर लदकर रोड पर लेट जाता है, और वहीं सब ठहाके लगाते हैं। कुछ देर बाद, जैसे ही हँसी थमती है, सब चुपचाप अपनी-अपनी दिशा में घर लौटने लगते हैं। कोई कुछ नहीं कहता — पर सबके चेहरों पर अब फिर से एक उम्मीद चमक रही होती है।)

अध्याय 15
खर्चे, कमाई और एक हल्की सी उम्मीद

शनिवार की सुबह नहीं, बल्कि दोपहर अपने आप में बहुत सुस्त और खामोश थी। कमरे में हल्की सी धूप दाख़िल हो रही थी, टीवी की आवाज़ पंखे की घरघराहट से टकरा रही थी और चारों दोस्त सो कर उठे चेहरों के साथ लिविंग रूम में जमा थे।

राज

(रिमोट घुमाते हुए, जैसे कोई बड़ा राज खोलने वाला हो)

"यार अब तो खर्चे बहुत बढ़ गए हैं। लगता है हर चीज़ जेब के बाहर निकल गई है।"

विजय

(चाय का कप हाथ में लेकर)

"हाँ यार, सैलरी तो ऐसे लगती है जैसे किसी ATM से लोन ले रहे हो... घर पैसे भेजो तो खुद के लिए कुछ बचता ही नहीं।"

सूरज

(हँसते हुए, पर हल्की सी चुभन के साथ)

"तो बेटा, ये *बियर seer* थोड़ा कम करो।"

राज

(फिर भी तर्क से पीछे नहीं हटता)

"अबे! दिमाग नहीं चलेगा वरना। जीना अगर ज़रूरी है तो पीना भी ज़रूरी है, भाई!"

(सभी हँस पड़ते हैं, लेकिन इस हँसी में एक हल्का सा तनाव छुपा होता है।)

गौरव

(थोड़ा गंभीर होकर)

"देखो, अगर सच में चीज़ें मुश्किल हो रही हैं, तो एक हल है मेरे पास। क्यों न तुम लोग थोड़ा-बहुत अपनी ज़रूरत के हिसाब से लोन ले लो?"

(एक पल को सब चुप हो जाते हैं — जैसे गौरव ने पहली बार सही में कुछ काम की बात कह दी हो।)

राज

"बुरा आइडिया नहीं है... पर प्रोसेस लंबी होती है, ना?"

गौरव

"अरे नहीं भाई, मेरा एक दोस्त है — सागर। बैंक में लोन डिपार्टमेंट में है। मैं उसे आज रात बार में बुला लूंगा, वहीं बैठकर सब बात कर लेंगे।"

(सभी के चेहरों पर थोड़ी उम्मीद की रौशनी चमकती है।)

विजय

"ठीक है भाई, एक बार उससे मिल लेते हैं।"

सूरज

"हाँ, कम से कम पता तो चले हम काबिल कितने हैं, लोन के ही सही!"

(हँसी फिर से लौट आती है, और सीन धीरे-धीरे टीवी की आवाज़ में डूब जाता है।)

अध्याय 16
जाम, जज़्बात और जुगाड़

शाम की भीड़ से भरे उस बार में धुंआ, शोर और ग्लासों की टकराहट के बीच एक टेबल पर पाँच दोस्त ज़िंदगी की टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों को सीधा करने की कोशिश में जुटे थे। टेबल पर खाली बोतलों की गिनती जितनी बढ़ रही थी, उतने ही खुलते जा रहे थे सबके दिल।

सूरज ग्लास थामे बैठे-बैठे कहीं खोया हुआ था।

सूरज

"यार... घर की बहुत याद आ रही है।"

राज

(हँसते हुए)

"हाँ भाई! दारू पीते ही तेरे अंदर का ‘संवेदनशील सूरज’ बाहर आ जाता है!"

सूरज

(थोड़ी सी संजीदगी और थोड़ा नाटक)

"तो क्या पीने के बाद भी हम दिल की बात ना करें?"

विजय

(राज की तरफ इशारा करते हुए)

"अबे सूरज तू तो फिर भी ठीक है... राज जब पी लेता है ना, तो माइक समझ के मुँह नहीं बंद करता!"

राज

(जैसे कोई नेता हो)

"तो फिर काम की बात कर ही लेते हैं भाई! सागर भाई को बेवकूफ बनाकर लाए हैं क्या? लोन-वोन की बात कर लो पहले, वरना बाद में याद नहीं रहेगा हम बार में क्यों आये थे।"

सागर (लोन वाला दोस्त)

(स्मार्ट और रिलैक्स मूड में)

"आप सब मंडे को ब्रांच आकर डॉक्यूमेंट्स दे देना। वैसे हो सकता है कुछ की ज़रूरत ही ना पड़े — सब ऑनलाइन हो जाएगा।"

राज

"ठीक है भाईजी! हम सब मंडे सुबह 10 बजे ब्रांच पे हाज़िर हो जाएंगे।"

(फिर ग्लास उठाकर, थोड़ी शायरीनुमा स्टाइल में)

"और हाँ, दारु अंदर जाएगी तो कुछ तो बाहर आएगा ही… कोई बोल के निकालेगा, कोई लिख के... कोई हिला के..."

(इशारा करता है सामने वाली टेबल की तरफ, जहाँ एक बंदा उल्टी कर रहा होता है, और बाकी के लोग उसे संभालने की कोशिश में लगे हैं)

सभी हँस पड़ते हैं।

हँसी इतनी बेकाबू थी कि उसमें थोड़ी चुप्पियाँ भी छुपी थीं — वही चुप्पियाँ जो जाम के नीचे दबकर बाहर नहीं आतीं।

अध्याय 17
उम्मीद की इंस्टॉलमेंट

सोमवार की सुबह हल्की नींद और भारी सपनों के साथ आई। चारों दोस्त, कैज़ुअल कपड़ों में थोड़े थके से और थोड़े एक्साइटेड, बैंक की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं। अंदर सागर पहले से ही उन्हें देखने की राह में था।

सागर (मुस्कुराते हुए)

"गुड मॉर्निंग सर! मैं आप सभी का इंतज़ार कर रहा था।"

राज

(थोड़ा सा खीझा, थोड़ी उम्मीद में लिपटा हुआ)

"आना तो ज़रूरी था भाई... अब और वेट नहीं होता।"

सूरज

(सपनों की दुनिया में खोया हुआ)

"हाँ भाई... लोन पास होते ही गोवा की टिकट फाइनल!"

विजय

(हँसते हुए, सूरज की खिंचाई करता है)

"साले को बस गोवा घूमना है! पहले EMI की चिंता कर ले!"

सागर

(प्रोफेशनल अंदाज़ में)

"सर लोन फाइनल होते ही, चाहें गोवा जाइए या स्विट्ज़रलैंड — बैंक की तरफ से कोई रोक नहीं है।"

(सभी हँसते हैं और फिर फॉर्मल बातचीत में लग जाते हैं — KYC, डॉक्यूमेंट्स अपलोड, पासबुक, सैलरी स्लिप... और वो तमाम डिजिटल औपचारिकताएं जो अब रूटीन बन चुकी हैं।)

राज

"तो फिर... सब ऑनलाइन ही हो जाएगा ना?"

सागर

"हाँ जी... कुछ भी मिसिंग हुआ तो मैं कॉल कर दूँगा।"

(थोड़ी देर बाद चारों दोस्त एक-एक करके हाथ मिलाते हैं, धन्यवाद कहते हैं और बैंक से निकल जाते हैं — अपने-अपने ऑफिस की ओर, उसी भागती दुनिया में जहाँ सपने भी टाइम स्लॉट में देखे जाते हैं।)

अध्याय 18
अप्रैल फूल या पहला प्यार ?

शनिवार की शाम धीरे-धीरे रात में ढल रही थी। ऑफिस में ट्यूबलाइट की ठंडी रौशनी के नीचे, राज अभी भी अपने सिस्टम पर काम कर रहा था। पूरे फ्लोर पर अब गिनती के ही लोग बचे थे। तभी उसका फोन वाइब्रेट हुआ—सिम्मी कॉलिंग।

सिम्मी (फोन पर, हल्की सी मुस्कान के साथ)

"हेल्लो राज, कैसे हो? और कहाँ हो इस वक्त?"

राज (थका लेकिन खुश कि सिम्मी ने कॉल किया)

"हेल्लो सिम्मी, अब तक ऑफिस में ही हूँ। और तुम? आज इतनी लेट क्यों हो? कुछ बहुत ज़रूरी काम है क्या? मुझे तो लग रहा है कि पूरी रात भी लग जाए, तब भी ये काम पूरा नहीं होगा।"

सिम्मी

"नहीं, कुछ खास नहीं... बस ऐसे ही।"

राज (थोड़ा सीरियस होकर)

"अच्छा ठीक है, फिर मैं कॉल रखता हूँ, बहुत सारा काम पेंडिंग है।"

(उसी पल सिम्मी की आवाज़ कुछ बदल जाती है)

सिम्मी (धीरे से)

"राज... I Love You."

कुछ पल के लिए सब थम सा जाता है। राज का हाथ कीबोर्ड पर रुक जाता है। उसका दिल धड़कता नहीं, जैसे छलांग मार रहा हो। वो सोचता है, **"क्या मैंने सही सुना?"**

राज (हँसते हुए, नर्वस अंदाज़ में)

"क्या? तू मज़ाक कर रही है न? अप्रैल फूल है आज।"

सिम्मी (सॉफ़्ट लेकिन सीरियस आवाज़ में)

"मैं सच बोल रही हूँ, कोई मज़ाक नहीं है।"

राज की आँखें भर आती हैं। वो अपनी सीट पर झुक जाता है, और धीरे-धीरे उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। इतना सच्चा, इतना सीधा इंसान... उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि कोई उसे भी चाहेगा।

राज (भीगे हुए शब्दों में)

"क्या... क्या तुम मुझे सच में प्यार करती हो? विश्वास नहीं हो रहा। कोई मुझे भी प्यार कर सकता है..."

(तभी उसकी नज़र लैपटॉप की स्क्रीन पर जाती है—**1st April**। वो एकदम से हँसने लगता है, ज़ोर ज़ोर से।)

सिम्मी (फोन पर, चौंककर)

"तुम इतनी ज़ोर-ज़ोर से हँस क्यों रहे हो?"

राज (हँसते हुए)

"क्योंकि मुझे पता है, तुम मज़ाक कर रही हो। आज अप्रैल फूल है!"

(फिर अचानक, सिम्मी की आवाज़ में वो भावनाओं की गर्मी लौट आती है)

सिम्मी

"मैं मज़ाक नहीं कर रही, राज। अगर तुम्हें मेरे प्यार पर यकीन है तो... कल दोपहर ठीक एक बजे महालक्ष्मी स्टेशन पर आ जाना।"

(और... कॉल कट)

राज कुछ देर तक फोन को यूँ ही देखता रहता है। उसकी आँखें अब भी गीली हैं, लेकिन चेहरा मुस्कान से भरा है। वो सोचता है—**"शायद... ये पहला अप्रैल ऐसा हो, जो मेरा सबसे सच्चा दिन बन जाए।"**

अध्याय 19

उलझन की रात – प्यार का इम्तिहान

रात के 1 बज चुके थे। गौरव के घर की लाइट्स बंद थीं, लेकिन राज की आँखों में नींद का कोई नामोनिशान नहीं था। बेड पर करवटें बदलते हुए वो बार-बार मोबाइल स्क्रीन को देखता—**कोई कॉल? कोई मेसेज?** नहीं।

उसके मन में सवालों की बारिश हो रही थी—

"क्या वो सच में आई लव यू कह रही थी?"

"या फिर सिर्फ अप्रैल फूल बना रही थी?"

"अगर मजाक था... तो इतना गहरा क्यों लगा?"

"और अगर सच था... तो फिर फोन स्विच ऑफ क्यों है?"

उसने कई बार कॉल ट्राई किया, लेकिन हर बार वही ठंडी आवाज़—**"The number you are trying to reach is switched off."**

वो बेचैनी से उठकर बालकनी में चला गया। मुंबई की रात अब भी ज़िंदा थी—नीचे सड़क पर कुछ गाड़ियाँ, दूर किसी के रेडियो से आती हल्की सी धुन, और हवा में मिली हलकी-सी शराब की महक। लेकिन इन सबके बीच, राज के भीतर एक सन्नाटा था।

2:30 AM

मोबाइल की स्क्रीन ब्लिंक करती है।

1 नया संदेश

राज की धड़कन एक पल को तेज़ हो जाती है।

वो तुरंत स्क्रीन स्लाइड करता है—**"बॉस का मेसेज।"**

राज, मंडे मॉर्निंग जल्दी आ जाना। दिल्ली से हेड ऑफिस वाले बॉस आ रहे हैं। मीटिंग है।

राज स्क्रीन देखता रह जाता है।

"एक वो है जिससे दिल जुड़ने लगा था... और एक ये है जिससे नौकरी जुड़ी है।"

वो मोबाइल को तकिये के नीचे रखकर फिर करवट लेता है, लेकिन नींद अब भी उससे कोसों दूर थी।

अध्याय 20

एक उम्मीद की सुबह

रविवार की सुबह थी। मुंबई के आसमान पर हल्की धूप तैर रही थी। गौरव के घर में अभी तक नींद पसरी हुई थी—कुशन बिखरे हुए, टीवी रिमोट सोफे के नीचे, और कॉफी मग में रात की ठंडी बची हुई चाय।

लेकिन एक चेहरा ऐसा था जिस पर आज अलग ही चमक थी—**राज।**

वो सबसे पहले उठा, नहा-धोकर तैयार हो गया। बालों में हल्का जैल, ढीली जींस, और वही पुरानी ग्रे टीशर्ट—जिसके पीछे लिखा था, **"अपना टाइम आएगा।"**

बिलकुल जैसे उसकी किस्मत आज कुछ तय करने वाली हो।

तभी सूरज की आँखें आधी खुलती हैं।

सूरज (नींद में आँखें मसलते हुए):

"अबे कहां निकल रहा है इतनी सुबह-सुबह? और तू तो सिंगल ही था न?"

राज (हल्की मुस्कान के साथ):

"भाई आज जाकर यही तो कन्फर्म करने वाला हूँ।"

सूरज (थोड़ा उठकर):

"क्या मतलब?"

राज (शोल्डर पर बैग टांगते हुए):

"वापस आकर बताता हूँ।"

राज दरवाज़ा खोलता है और बाहर निकल जाता है।

बाहर की हवा में सुबह की ठंडक थी। नीचे रोड पर कुछ बच्चे प्लास्टिक की बॉल से क्रिकेट खेल रहे थे, और पास की दुकान से ब्रेड पकौड़े की महक आ रही थी। राज एक ऑटो पकड़ता है—**"अंधेरी स्टेशन चलोगे?"**

ऑटो चलता है।

राज की आँखें आगे सड़क पर हैं, लेकिन दिल महालक्ष्मी स्टेशन की उस प्लेटफार्म पर अटका हुआ है।

अध्याय 21

स्टेशन से महालक्ष्मी मंदिर तक

महालक्ष्मी स्टेशन की भीड़ में भी आज राज के दिल की धड़कनें सबसे तेज़ थीं।

स्टेशन पर उतरते ही उसने अपने चारों ओर नज़रें दौड़ाईं। उसकी आँखों में वो बेचैनी थी, जो किसी अपने को ढूंढते हुए होती है।

जेब से मोबाइल निकाला और जैसे ही सिम्मी का नाम डायल करने ही वाला था—उसकी नज़र ब्रिज पर खड़ी **सिम्मी** पर पड़ी।

हल्की गुलाबी कुर्ती, खुले बाल, और होंठों पर एक मुस्कान—ऐसी मुस्कान जो कह रही थी, **"मैं आई थी... यकीन करने कि तुम आओगे।"**

राज कुछ पल वैसे ही खड़ा रह गया। शायद वो यही सोच रहा था कि **"क्या वाकई कोई मुझे भी चाह सकता है?"**

सिम्मी ने मुस्कराते हुए पूछा—

सिम्मी:

"क्यों राज जी, माता रानी के दर्शन करने आ गए?"

राज (हल्की हँसी के साथ):

"नहीं... हम तो अपनी देवी जी के दर्शन करने आए हैं।"

दोनों कुछ पल चुपचाप एक-दूसरे को देखते रहे।

फिर सिम्मी ने कहा:

"हाजी अली दरगाह चले? कभी गए हो वहाँ?"

राज:

"जैसा आप कहें... अब तो आपके साथ कहीं भी चलने को तैयार हूँ।"

सिम्मी ने सिर झुकाकर हल्का सा मुस्कराया, और दोनों प्लेटफॉर्म से बाहर निकलने लगे।

स्टेशन की भीड़, ऑटो वालों की आवाजें, और ट्रैफिक के शोर के बीच... **राज और सिम्मी की दुनिया में एक मीठी सी ख़ामोशी चल रही थी।**

और फिर बैकग्राउंड में कोई **लो-फी रोमांटिक सॉन्ग** बजने लगता है।

"दिल जो कह न सका, वो आँखों ने कह दिया..."

दोनों दरगाह की तरफ बढ़ते हैं, फिर मंदिर। नज़रें मिलती हैं, हाथ पास आते हैं, और ज़िन्दगी कुछ पल के लिए सुकून बन जाती है।

अध्याय 22
सिटी मॉल के शरीफ़ लफंगे

राज आज कुछ अलग ही मूड में था। सिम्मी से हुई मुलाक़ात उसके चेहरे पर वो चमक ले आई थी, जो केवल सच्चे प्यार की पहली फुहार लाती है।

उसने तुरन्त सूरज, विजय और गौरव को कॉल किया—**"आज शाम सिटी मॉल के बाहर मिलो, एक ज़रूरी अपडेट है।"**

शाम के वक़्त, अंधेरी के सिटी मॉल के बाहर की भीड़-भाड़ और रौनक़ हमेशा की तरह परफेक्ट थी।

विजय और सूरज मॉल के बाहर पड़ी सीढ़ियों पर बैठे राज का इंतज़ार कर रहे थे।

तभी सामने से एक लड़की गुज़री—**हाथों में शॉपिंग बैग, पीठ पर स्लिंग बैग, कान में हेडफोन**—वो जैसे मॉल की शान थी। तभी विजय की नज़र उस पर पड़ी।

विजय:

"सूरज भाई, ये लड़की इतने बैग्स के साथ चल रही है, इसके हाथ नहीं दुखते क्या?"

सूरज (आलसी मुस्कान के साथ):

"भाई, जब कोई लड़की मॉल से खाली हाथ निकले, तभी उसके हाथ ज़रूर दुखते होंगे।"

जैसे ही लड़की पास आई, विजय ने धीरे से **'सिटी'** मारी।

लड़की रुक गई, पलटी और सीधा बोली—

लड़की:

"सारे लफंगे मॉल के बाहर ही मिलते हैं, अंदर होते तो जीना हराम हो जाता!"

विजय (थोड़ा अकड़ के):

"मैडम जी, मॉल के बाहर बैठकर क्या अब 'सिटी' भी नहीं बजा सकते?"

तभी लड़की का बॉयफ्रेंड वहां पहुँच गया। लड़की ने सारी बात उसे बता दी। गुस्से में तमतमाया वो बोला—

"सिटी तो तुमने बजा ली, अब मेरी बैंड बजाने की बारी है!"

तभी वहां हाथापाई शुरू हो जाती है।

ऑटो से उतरते हुए राज ये सब देखता है और तुरंत बीच-बचाव करता है—

राज:

"अरे भाई, इतनी खूबसूरत जगह पर हिंसा करना अच्छी बात नहीं है।"

लड़की का बॉयफ्रेंड (अकड़ते हुए):

"अबे तू कौन है?"

राज (स्माइल के साथ):

"यारों का यार।"

राज सबकी तरफ से माफ़ी माँगता है। माहौल शांत होता है।

ऊपर मॉल के टॉप फ्लोर की खुली हवा वाली कैफे में चारों दोस्त चाय का ऑर्डर करते हैं।

गौरव:

"और भाई, कहाँ था सुबह से?"

राज (हँसते हुए):

"पहले ये बताओ, ये 'गंद' किसने मचाई थी?"

विजय:

"भाई, सिर्फ 'सिटी' ही मारी थी।"

राज:

"अच्छा हुआ लड़की का सिर्फ एक ही बॉयफ्रेंड था, वरना आज तुम सबकी बैंड बजी होती।"

सूरज:

"वो छोड़ यार, अब ये बता क्या हुआ?"

राज:

"सिम्मी ने ILU बोला था। मैंने तुम लोगों को नहीं बताया था, आज कन्फर्म करने गया था। मंदिर गए, दरगाह गए... मुझे लगता है मुझे भी अब प्यार हो गया है।"

सूरज (हैरानी से):

"मंदिर? क्यूँ भाई?"

राज:

"अबे साले, ये लड़कियों का क्या भरोसा, अगली बार पता नहीं कहाँ लेकर जाए।"

इतने में चाय आ जाती है।

राज के हाथ में एक लाल गुलाब है। वो विजय से पूछता है—

राज:

"ये गुलाब देखकर तुझे किसकी याद आती है?"

विजय (मुंह बनाकर):

"लाल गुलाब देखकर हम कुंवारों को बिना गर्लफ्रेंड के सिर्फ़ और सिर्फ़ चाचा नेहरू जी की याद आती है!"

(सभी ज़ोर से हँस पड़ते हैं)

तभी राज का फोन बजता है। सभी चाय खत्म करते हैं और घर की ओर निकल पड़ते हैं।

अध्याय 23
मंडे वाली मंडली

सैटरडे-सन्डे की मस्ती और लव एंगल के बाद अब बारी थी हकीकत में लौटने की — **मंडे मॉर्निंग**।

राज, विजय और सूरज — तीनों अपने-अपने मन भारी किए ऑफिस पहुँचे। हालाँकि, दिमाग अब भी वीकेंड में अटका हुआ था।

राज के डेस्क पर बैठते ही फोन बजा — सिम्मी का कॉल था।

दूसरी ओर, **विजय को भी अपनी गर्लफ्रेंड का कॉल आया**, जो उसे आफ्टरनून में घर बुला रही थी। दोनों की आँखों में चमक और चेहरों पर मुस्कान तैर गई।

राज ने ठान लिया — हाफ-डे तो लेना ही है।

राज धीरे-धीरे बॉस दीपक गुप्ता के केबिन में गया।

राज (थोड़ा संकोच में):

"बॉस, एक बहुत ज़रूरी काम आ गया है... मुझे आज हाफ-डे चाहिए।"

दीपक गुप्ता (थोड़ा तंज में मुस्कराते हुए):

"राज, कम से कम मंडे को तो मन लगाकर काम कर लिया करो।"

राज:

"सर, मैं वादा करता हूँ, आज रात पूरी मेहनत से सारा काम पूरा कर दूँगा।"

दीपक (गहरी नज़र डालते हुए):

"मुझे पता है इस उम्र में लड़के 'रात भर जागकर' क्या काम करते हैं। ठीक है, चले जाना... मगर काम पूरा चाहिए।"

राज (स्माइल के साथ):

"सर, शिकायत का मौका नहीं मिलेगा।"

बाहर निकलते ही राज ने विजय को कॉल किया—

राज:

"भाई, जल्दी आ जा, हम दोनों धूप में खड़े हैं।"

कुछ ही मिनट में विजय आता है। राज की ओर देखता है और मुस्कुराता हुआ कहता है—

विजय:

"तू तो बोल रहा था 'हम दोनों' धूप में खड़े हैं..."

राज (एक हाथ से अपने और अपनी परछाईं की ओर इशारा करते हुए):

"मैं... और ये।"

(दोनों खिलखिलाते हुए वहाँ से निकल जाते हैं, जैसे स्कूल से बंक मारने वाले दो बच्चे हों।)

अध्याय 23-A

राशिफल और राजवीर का सच्चा प्यार

दोपहर की वो मुंबई की गरम हवा राज के दिल में ठंडी साँसों की तरह उतर रही थी। विजय ने राज को सिम्मी के फ्लैट के बाहर छोड़ा और मुस्कराता हुआ निकल गया।

राज ने जैसे ही सिम्मी का दरवाज़ा खटखटाया, दरवाज़ा खुला और सामने खड़ी थी सिम्मी — हल्की सी मुस्कान लिए हुए।

लेकिन दरवाज़े से अंदर का नज़ारा देखकर **राज की आंखें फैल गईं।**

कैंडल्स जल रही थीं।

सॉफ़्ट रोमांटिक म्यूज़िक प्ले हो रहा था।

कहीं-कहीं गुलाब के फूल बिखरे हुए थे।

टीवी पर कोई पुराना मोहब्बत भरा गाना चल रहा था।

सिम्मी धीरे से बोली —

"राज, ठंडा लोगे या गरम?"

राज (हँसते हुए):

"बेबी, पूरी तैयारी करके रखी है... हमें ना ठंडा चाहिए, ना गरम... हम तो करेंगे बस एक-दूसरे को तंग।"

(दोनों बेड पर बैठते हैं। TV पर गाना चल रहा है और माहौल पूरी तरह से रोमांटिक हो चुका है।)

सिम्मी धीरे से पूछती है:

"राज, वो लाए हो?"

राज (कंफ्यूज़):

"क्या?"

सिम्मी हल्के इशारे से बताने की कोशिश करती है।

राज:

"अरे यार, मुझे लगा कोई पूजा-पाठ का सामान मंगाया होगा... अभी लेकर आता हूँ।"

सिम्मी (थोड़ा गुस्से में):

"रहने दो अब... कब जाओगे, कब आओगे।"

राज (शरमाते हुए):

"बेबी, मैं उसके बिना कुछ नहीं करूंगा।"

सिम्मी (हँसते हुए):

"तुम लड़के होकर डरते हो? डरना तो मुझे चाहिए..."

(सिम्मी किसी तरह राज को मना लेती है। दोनों चादर में आते हैं, सब कुछ जैसे शुरू ही होने वाला होता है...)

लेकिन...

राज की टांग अचानक टीवी के रिमोट से टकरा जाती है, और रोमांटिक गाने की जगह टीवी पर *अचानक 'Live Rashifal with Pandit Pandey' चैनल ऑन हो जाता है।*

टीवी से आवाज़ आती है:

"अब बारी है *तुला राशि* की... आज पुत्र प्राप्ति का योग है... भावनाओं पर संयम रखें... शुभ रंग – काला... शुभ अंक – 13..."

बेड के सामने लगे मिरर में राज खुद को देखकर धीरे-धीरे *"अलर्ट मोड"* में आ जाता है।

जैसे ही *"पुत्र प्राप्ति का योग"* दोहराया जाता है, **राज सीधा खड़ा हो जाता है** और फौरन चादर फेंककर भागने लगता है।

सिम्मी (हैरान होकर उसका हाथ पकड़ती है):

"क्या हुआ बेबी? अब क्या डर लग रहा है?"

राज (तेजी से बोलते हुए):

"बेबी अगर राज यहाँ रुका... तो नौ महीने बाद 'राजवीर' जरूर पैदा होगा!"

(राज किसी तरह खुद को छुड़ाकर फ्लैट से भाग जाता है, सिम्मी हँसते हुए पीछे से समझाने की कोशिश करती है, लेकिन वो जा चुका होता है...)

अध्याय 24
राहुल रॉय की वापसी

बुधवार की शाम, हल्की सी गर्मी और लोकल की थकान लिए हुए तीनों दोस्त — राज, विजय और सूरज — अँधेरी के मशहूर *"नानू मेंस पार्लर"* पहुँचते हैं।

राज (कुर्सी पर बैठते हुए):

"सोच रहा हूँ आज बाल भी कटवा ही लेता हूँ…"

सूरज (हँसते हुए):

"भाई मैं तो सिर्फ शेविंग ही करवाऊंगा। ज़्यादा एक्सपेरिमेंट का मूड नहीं है।"

विजय (आईने में खुद को देखकर):

"हम वैसे ही हैंडसम हैं, कुछ नहीं करवाना।"

(इसी बीच दरवाज़ा खुलता है और अंदर आता है एक 20-22 साल का लड़का — लंबे घुंघराले बाल, और चाल ढाल में एक अलग ही आत्मविश्वास।)

लड़का (जो सब उसे 'राहुल रॉय' कहने लगते हैं):

"हेल्लो नानू भाई! कैसे हो?"

नानू:

"बस भाई सब बढ़िया, बोलो कैसे आना हुआ आज?"

राहुल रॉय:

"नानू भाई, बाल तो देखो... पूरे राहुल रॉय जैसे हो गए हैं... तू वही स्टाइल मार दे भाई।"

(सब हँस रहे होते हैं, और टीवी पर न्यूज चैनल चल रहा होता है, राज हमेशा की तरह न्यूज में डूबा हुआ।)

नानू:

"मेरे भाई लोग तो अब राहुल रॉय की शक्ल तक भूल गए, बाल क्या याद रखेंगे!"

(वो बोलते-बोलते रिमोट उठाकर चैनल बदलता है और जैसे ही STAR GOLD लगाता है, स्क्रीन पर चल रही होती है — *फिल्म आशिकी* — और सामने राहुल रॉय।)

राहुल रॉय लड़का (उत्साहित होकर):

"देख भाई... राहुल रॉय आ गया... अब तो मेरे बाल उसी के जैसे कटेंगे!"

(वो बिना देर किए पूरे स्वैग में चेयर पर जाकर बैठ जाता है, चेहरा थोड़ा तिरछा, और बालों पर हाथ फेरते हुए — जैसे कि कैमरा कभी भी क्लोजअप ले लेगा।)

राज, विजय और सूरज एक-दूसरे को देखते हैं, और हँसी रोक नहीं पाते। पार्लर में एक हल्का-सा ठहाकों वाला माहौल बन जाता है।

राज (मुस्कराते हुए):

"भाई, ये पार्लर नहीं, 90s की फिल्म का सेट लग रहा है।"

अध्याय 24A
छोटू का नामकरण

पार्लर से फ्रेश होकर तीनों दोस्त बाहर निकलते हैं। शाम की ठंडी हवा और चेहरे पर ब्लेड की हल्की जलन — साथ में सिगरेट की झलक।

राज, सूरज और विजय, पार्लर के बाहर कोने की दीवार से टिककर स्मोकिंग कर रहे होते हैं। तभी अंदर से निकला वही लड़का, जिसे सब ‘राहुल रॉय’ बुला रहे थे, बाहर आता है — बालों में थोड़ा जैल, चाल में नया कॉन्फिडेंस।

तभी एक *गुंडा टाइप लड़का* तेज़ी से उसके पास आता है।

गुंडा (चीखते हुए):

"रे छोटे! इधर आ... कहाँ भाग रहा है, नज़रे बचाके!"

राहुल रॉय (डरे हुए स्वर में):

"नहीं भाई... मैंने आपको देखा ही नहीं…"

(गुंडा उसकी शर्ट पकड़ता है और एक झटके में उसकी जेब से पर्स निकाल लेता है। बिना कुछ बोले उसमें से कुछ नोट निकालता है, पर्स वापस फेंकता है और अपनी बाइक स्टार्ट करता है…)

तभी राज बोल पड़ता है — बिल्कुल ठेठ स्टाइल में, आवाज़ ऊँची और साफ़।

राज (ज़ोर से):

"अरे भाई साहब! ज़रा रुकिए... क्या बोला आपने — *छोटू?*"

(गुंडा चौंककर देखता है, बाइक स्टार्ट हो चुकी है, मगर राज की बात में रुकने की ताक़त है।)

राज (आगे बढ़ते हुए):

"एक बात बताओ, क्या तुमने इसका नाम छोटू रखा है? नामकरण भी किया था क्या?"

गुंडा (घूरते हुए):

"क्या मतलब?"

राज (धीरे-धीरे पास जाते हुए):

"मतलब ये कि जब तुम्हारे माँ-बाप ने तुम्हारा नाम रखा होगा, तो उन्होंने दावत दी होगी, मिठाइयाँ बँटी होंगी, अच्छा खासा खर्चा हुआ होगा..."

(राज अब उसके सामने खड़ा है)

"और तू आया किसी के बाल देखकर — 'छोटू' कहके नाम रख दिया? ऊपर से जेब भी काट ली? कम से कम नाम रखने का खर्चा ही बता देता..."

(गुंडा अब पूरी तरह *confused and exposed* है, आस-पास के लोग भी सुन रहे होते हैं, तो उसकी हवा निकल जाती है।)

(गुंडा झेंपता है, पर्स से सारे पैसे निकालकर राहुल को वापस देता है।)

फिर बिना कुछ कहे, घूरते हुए बाइक स्टार्ट करता है और वहाँ से निकल जाता है।

राहुल (थोड़ा भावुक होकर):

"थैंक यू भाई लोग... आपने तो आज बचा लिया!"

राज (हँसते हुए):

"अबे बाल कटवाने के बाद राहुल रॉय बन गया है... छोटू नहीं!"

तीनों दोस्त फिर से अपने ठहाकों के साथ निकल पड़ते हैं — शहर की सड़कों पर, नए किस्सों की तलाश में।

अध्याय 25
इंतज़ार अब और नहीं

सूरज अपने ऑफिस में अपनी टेबल पर बैठा लैपटॉप की स्क्रीन पर घूर रहा होता है, मगर मन कहीं और भटक रहा होता है।

एक हल्की सी मुस्कान के साथ वो फोन उठाता है और **आरती** को कॉल करता है।

सूरज (फोन पर):

"हैलो जान, क्या कर रही हो? देखो, राज और विजय अपनी वाली से मिलकर आ गए, अब हमारी भी बारी आनी चाहिए ना ?"

आरती (हल्की हँसी के साथ):

"हम्म… बोलो क्या प्लान है?"

सूरज:

"कल की छुट्टी ले सकती हो?"

आरती:

"फुल डे नहीं ले पाऊंगी… सुबह मेरी क्लाइंट के साथ अर्जेंट मीटिंग है। हाफ डे ले सकती हूँ।"

सूरज:

"बस! उतना ही चाहिए था, तुम हाफ डे की बात कर लो।"

आरती (क्लिक की आवाज के साथ):

"डन! अभी लीव अप्लाई कर दी।"

सूरज के चेहरे पर अब सुकून और एक्साइटमेंट दोनों दिखता है।

अध्याय 26
बंदी-गृह में स्वागत

अगले दिन **अंधेरी स्टेशन** की भीड़ में **सूरज और आरती** कॉल के बाद ऑफिस से हाफ डे लेकर एक-दूसरे को ढूंढते हुए मिलते हैं। एक मुस्कान और हल्का सा हाथ थामकर वे एक ऑटो पकड़ते हैं। कुछ ही मिनटों में सूरज अपने रूम पर आ जाता है।

आरती (आश्चर्य से):

"यहाँ कितने लोग रहते हैं?"

सूरज:

"सिर्फ चार। ऐसा क्यों पूछ रही हो?"

(आरती की नजर एक बंद दरवाज़े पर जाती है, जिस पर मोटे अक्षरों में लिखा होता है – 'बंदी गृह')

आरती (हँसते हुए):

"ये बंदी गृह क्या है? कोई पुलिस वाला भी रहता है क्या यहाँ?"

सूरज (आँख मारते हुए):

"जाने दो जानेमन... इसमें सज़ा मिलती है। तुम्हें भी मिलेगी!"

(आरती भौंहे चढ़ाकर हँस देती है। तभी डोरबेल बजती है, सूरज जल्दी से उठकर दरवाज़ा खोलता है।)

एक सेल्सगर्ल दरवाज़े पर खड़ी होती है — थकी हुई, मगर चालाक आँखों से सामान बेचने की जिद कर रही होती है।

सेल्सगर्ल:

"सर प्लीज़ कुछ ले लीजिए, सुबह से कोई कस्टमर नहीं मिला…"

सूरज (पूरी इज्ज़त के साथ):

"ठीक है, आप दो पैकेट दे दो। कितने का है?"

सेल्सगर्ल:

"सिर्फ पाँच सौ का…"

(सूरज थोड़ा चौंकता है, फिर मुस्कराकर पैसे दे देता है।)

"लो, पानी भी पी लो… अब खुश?"

(लड़की हल्के से मुस्कुराकर पानी पीती है और चली जाती है।)

आरती ये सब अंदर से देख रही होती है। बाहर निकलते ही थोड़ा ताना मारती है:

आरती:

"क्या बात है, कुछ ज़्यादा ही तरस आ रहा था उस पर?"

सूरज (सामने खड़े होकर):

"अरे नहीं जानू, हम भी तो सेल्स हेंडल करते हैं… धूप, पसीना, तिरस्कार — सब झेलना पड़ता है। और फिर… नारी शक्ति का सम्मान तो हमारा धर्म है!"

(आरती हँसते हुए सूरज को गले लगा लेती है, और सूरज उसका हाथ पकड़कर उसे 'बंदी गृह' की ओर ले जाता है।)

आरती:

"मुझे जल्दी घर भी जाना है…"

सूरज (शरारत से):

"ठीक है जी, छोड़ देंगे… लेकिन सज़ा पूरी होने के बाद!"

अध्याय 27
मुंबई की रात, सपनों का शहर

रात गहराने लगी थी। **गौरव के घर** की बालकनी से मुंबई की चमकती रौशनी और सड़कों पर दौड़ती गाड़ियाँ दिख रही थीं, लेकिन कमरे के भीतर एक अलग ही दुनिया बस रही थी।

कमरे में धुंआ था, हँसी थी, मस्ती थी और थकान भी।

टीवी पर कोई पुराना गाना बज रहा था, पास ही रखी हुई टेबल पर खुली बोतलें और अधजली सिगरेटें पड़ी थीं। चारों दोस्त – **राज**, **विजय**, **सूरज**, और **गौरव**, आराम से फर्श पर गद्दों के सहारे बैठे बीते दिनों की बातें कर रहे थे।

सूरज, थोड़ी नशे में डूबती आवाज़ में बोला—

"यार... घर की बहुत याद आ रही है।"

राज ने उसकी ओर देखा, और हल्की मुस्कान के साथ ताना मारा—

"क्यों बे, दारू की दो घूंट अन्दर जाती नहीं और तुझे घर की याद आने लगती है?"

विजय भी हँस पड़ा—

"सही है भाई, इसको कुछ तो याद आता है... मैं तो सब भूल चुका हूँ।"

गौरव, जो अभी तक चुप बैठा था, बात बदलते हुए बोला—

"और सुनाओ, ऑफिस में क्या चल रहा है? मन लगा या नहीं?"

राज, खिड़की की ओर देखते हुए थोड़ा गंभीर हो गया।

"मन तो लग जाता... लेकिन साला अभी तो लाइफ ही लगी पड़ी है। लगता है पूरी ज़िंदगी यहीं निकल जाएगी। इस शहर जैसा कोई नहीं यार... *भले ही हर दिन खुद को खींचकर जीना पड़ता है... लेकिन इसे छोड़कर जाने का मन ही नहीं करता। इतनी टेंशन में कभी पहले जिए नहीं थे हम।"*

विजय बोला—

"हाँ यार, बस अब जल्दी से बैंक बैलेंस ठीक हो जाए... फिर गाड़ी, घर, सब कुछ लेना है।"

सूरज, हँसते हुए बोला—

"पहली बार कुछ सही कहा कमीने!"

गौरव ने हाथ में ग्लास उठाया और बोला—

"अपुन भी हैप्पी है भाई... बिना नौकरी के भी जितनी मस्ती की है ना, मजा आ गया। सब तुम लोगों की वजह से ही मुमकिन हुआ है। अपने मन की ज़िंदगी जी है इन महीनों में।"

राज ने धीरे से कहा—

"हाँ भाई... और मज़े तो अभी बाकी हैं..."

धीरे-धीरे सबकी आवाज़ें धीमी होती गईं। नशा अब आंखों में नींद बनकर उतरने लगा था।

विजय ने टीवी बंद करने के लिए रिमोट उठाया ही था कि **राज** ने हाथ पकड़ लिया—

"भाई... चलने दे न... थोड़ी देर और..."

राज अकेला बैठा रहा, बाकी तीनों एक-एक करके नींद में खो गए।

टीवी पर अब कोई पुराना लता मंगेशकर जी का गाना बज रहा था।

राज के चेहरे पर थोड़ी थकावट थी, थोड़ी मुस्कान, और आँखों में एक सपना—जिसे शायद उसने अब तक किसी से शेयर नहीं किया था।

अध्याय 28
कभी भी कुछ भी हो सकता है –
मुंबई शहर

मुंबई की एक और सुबह। सूरज ने हमेशा की तरह जल्दी उठकर चाय पी, बाल संवारे, और तैयार होकर ऑफिस निकल गया। पर उसे अंदाज़ा नहीं था कि आज का दिन उसकी ज़िंदगी की दिशा ही बदल देगा।

ऑफिस पहुँचते ही उसका बॉस—संतोष—ने बुला लिया।

बॉस की आवाज़ में पहले जैसी गर्मजोशी नहीं थी, चेहरे पर एक अजीब सी उदासी थी। सूरज ने हँसते हुए कहा—

"गुड मॉर्निंग सर!"

लेकिन जवाब में जो सुना, उससे उसके चेहरे की मुस्कान गायब हो गई।

संतोष ने कहां

"सूरज, एक बुरी खबर है... काफ़ी समय से कंपनी घाटे में चल रही थी। हमने एम्प्लॉयीज़ को नहीं बताया क्योंकि उम्मीद थी कि हालात सुधरेंगे... पर अब लगता है कंपनी बंद करने का टाइम आ गया है।"

"शायद इस महीने सैलरी भी न मिले... और इसी महीने में ऑफिस भी बंद ज़रूर होगा । तुम जल्दी से कोई और जॉब देखना शुरू कर दो। आज अपने क्लाइंट्स के सारे काम निपटा दो... ताकि किसी को शिकायत का मौका न मिले।"

सूरज की आँखों के आगे एक पल को सब धुंधला हो गया।

उसने हल्की आवाज़ में कहा—

"ओके सर... मैं आज शाम तक सब फाइनल कर दूँगा... और आपके संपर्क में रहूँगा..."

ऑफिस से निकलते वक़्त हर डेस्क, हर चेहरा, हर कॉफी मग उसे किसी पुरानी याद की तरह लग रहा था। वो चुपचाप घर लौट आया।

घर का दरवाज़ा खोला, और अंदर आते ही सोफे पर बैठ गया। चेहरा बुझा हुआ था। तभी विजय आता है।

विजय ने पूछा—

"क्या हुआ सूरज, इतना उदास क्यों लग रहा है?"

सूरज ने गहरी साँस ली और कहा—

"भाई... ऑफिस से आ रहा हूँ... बस ऑफिस में कुछ और दिनों का मेहमान हूँ मैं , मेरा मतलब ऑफिस बंद हो रहा है। बॉस ने साफ़ कह दिया है कि कंपनी घाटे में जा रही है... सैलरी भी नहीं मिलेगी।"

विजय चौंक गया—

"मगर तू तो स्पेशल केटेगरी में सेलेक्ट हुआ था ना?"

सूरज ने सिर झुकाते हुए कहा—

"हाँ... मगर अब वो भी किसी काम का नहीं रहा..." जब कंपनी ही बंद हो रही है तो कैसी स्पेशल केटेगरी ?

विजय पास बैठ गया, और धीरे से कंधे पर हाथ रखते हुए बोला—

"कोई बात नहीं यार... ज्यादा टेंशन मत ले... तू टैलेंटेड है, जल्दी ही कुछ और अच्छा मिलेगा। अभी चल खाना खा ले... मैं भी सोने जा रहा हूँ, बॉस ने कल सुबह जल्दी बुलाया है।"

(विजय उठते हुए बड़बड़ाता है...)

"साला... दुनिया के सारे इंपोर्टेन्ट काम मेरे ही बॉस को क्यों मिलते हैं..."

सूरज हल्की सी मुस्कान लाता है, पर दिल अब भी भारी है।

अध्याय 29
अब तेरी बारी

शाम का वक्त था। सूरज, राज और गौरव घर पर थे। दिमाग में ऑफिस की टेंशन अब भी घूम रही थी, मगर माहौल को हल्का बनाए रखने की कोशिश जारी थी।

दरवाज़ा खुला—विजय ऑफिस से लौटा।

उसका चेहरा देखते ही सब समझ गए कि कुछ ठीक नहीं हुआ।

सूरज (मुस्कराते हुए, हल्की शरारत के साथ):

"क्या हुआ भाई... इतने ग़मगीन क्यों हो? कहीं 'बंदी' से झगड़ा तो नहीं हो गया?"

राज (थोड़ा गंभीर होकर):

"भाई, मज़ाक मत कर... लग रहा है कुछ सीरियस है।"

विजय ने चुपचाप बैग सोफे पर फेंका और बोला—

"कल तेरा नंबर आया था, आज मेरा... मेरी भी जॉब गई भाई..."

कमरे में एक पल के लिए सन्नाटा छा गया।

फिर अचानक सूरज कुर्सी से उठकर विजय को कस कर गले लगा लेता है।

सूरज (हँसते हुए):

"मुबारक हो बे... अब हम दोनों बेरोज़गारों की पूरी जिम्मेदारी राज साहब पर आ गई है!"

राज (थोड़ी नटखट मुस्कान के साथ):

लगता है राहू और केतु की भारी कृपा हुई है तुम पर *"हाँ भाई, तुम तो सबके लाडले थे ना..."*

विजय (थके हुए स्वर में, पर अब मुस्कान के साथ):

"येस बॉस, जी बॉस... कुछ भी काम नहीं आया। जिन जिन लोगों को "जी " लगाकर बोला था उन्ही लोगों ने मेरा जीना हराम कर दिया।"

राज (थोड़ा मजाक उड़ाते हुए, पर दिल से) :

"अबे सालों, मैंने कौन-से इंटरव्यू दिए थे! अपुन की जॉब तो नहीं जाने वाली—बिलकुल सेफ ज़ोन में हूँ!"

इतना सुनते ही **सूरज और विजय दोनों का चेहरा फिर उन्सुल्झी टेंशन में हो जाता है**।

गौरव कोने से हल्की हँसी हँसते हुए कहता है:

"राज की ये बात सुनकर तो ऐसा लग रहा है जैसे नौकरी नहीं, कोई महालक्ष्मी का खज़ाना उसके पास हो..."

कमरा फिर से हँसी की आवाज़ों से भर जाता है, लेकिन हर किसी के दिल में एक बेचैन सा सन्नाटा अब भी बैठा हुआ है।

अध्याय 30

"Keep Calm & Kaam Se Kaam"

दोपहर का वक्त था। घर में हल्की सी खामोशी पसरी हुई थी। सभी दोस्त अपने-अपने ख्यालों में गुम थे।

विजय का मोबाइल वाइब्रेट हुआ—'सपना कॉलिंग'।

विजय ने कॉल रिसीव की।

सपना (थोड़ी नाराज़गी के साथ):

"हेल्लो मिस्टर विजय... कल रात एक कॉल तो दूर, एक मैसेज भी नहीं किया तुमने!"

विजय (थके और टूटे हुए लहजे में):

"कुछ नहीं यार, सब बेड़ा गर्क हो गया। मेरी भी जॉब चली गई। परसों सूरज की गई थी... आज मेरा नंबर था।"

सपना (एक पल के लिए चुप, फिर मजबूती से):

"ओ... ये तो वाकई मुश्किल वक्त है। लेकिन सुनो... तुम फिकर मत करो। ये मुंबई है ना... यहाँ एक दरवाज़ा बंद होता है, तो दस और खुल जाते हैं। बस खुद पर यकीन रखो। सब्र रखो। और हाँ—'Keep Calm & Keep... Kaam Se Kaam!' "

विजय (थोड़ी मुस्कराहट के साथ):

"तू ना सच में, तू और तेरे ये मोटिवेशनल डायलॉग्स..."

सपना (हँसते हुए):

"मैं हूँ ना तुम्हारे साथ। भले ही थोड़ी देर के लिए सही... लेकिन दिल से साथ हूँ।"

विजय (हल्का सा फ्लर्ट करते हुए):

"ओके मेरी पार्ट-टाइम गर्लफ्रेंड... अभी फोन रख रहा हूँ, सारे दोस्त यहां हैं, आगे की प्लानिंग करनी है।"

सपना:

"ठीक है मिस्टर फुल टाइम बेरोज़गार, बाद में बात करूँगी!"

दोनों हँसते हैं। कॉल कट हो जाती है।

अध्याय 31

"शॉर्ट्स के पीछे भागता डॉक्टर"

मुंबई की भागती-धौड़ती दोपहर अपने चरम पर थी। स्टेशन के प्लेटफॉर्म्स पर भीड़ थी, ट्रेनों की सीटी, लोगों के शोर और सूरज की चिलचिलाती धूप सब मिलकर एक आदत सी बन चुके थे।

डॉक्टर फोटोग्राफर, अपने कैमरे के साथ एक कोने में खड़ा था—शर्ट आधी बाहर निकली, बाल बिखरे हुए, चेहरे पर एक बेचैन पसीना, और आंखों में मिशन का तनाव।

डॉक्टर (मन ही मन बड़बड़ाता हुआ):

"आज तो बॉस ने कसम खिला दी है... दस फोटो चाहिए, वो भी सिर्फ लेडीज़ की। और वो भी बिना पूछे! भगवान कसम, कोई लड़की तो दिखे... जो भागे नहीं!"

सुबह के 10 बजे से लेकर अब रात के 8 बज गए थे। डॉक्टर का कैमरा आज भी उतना ही अकेला था, जितना उसकी किस्मत। जितनी बार वो कैमरा उठाता, लड़कियाँ ऐसे गायब हो जातीं जैसे मुंबई पुलिस के डर से मुंबई के चोर उचक्के ।

कभी चर्चगेट के बाहर खड़े होकर उसने आंखें नचाईं... कभी मुंबई सेंट्रल की लोकल में बैठकर कैमरा निकाला...

लेकिन हर बार—या तो पुलिसवाले टोकते, या लड़कियाँ मुंह बिचकाकर निकल जातीं।

डॉक्टर (थके हुए अंदाज़ में, खुद से):

"बॉस बोले थे – 'कम से कम दस फोटो... नहीं तो सैलरी काट लूंगा!'

अबे मैं फोटोग्राफर हूँ या सीक्रेट एजेंट?

ये मुंबई की लड़कियाँ हैं या जैम्स बॉन्ड की ट्रेन्ड स्क्वॉड?"

दिन ढलता गया। स्टेशन की लाइटें जल चुकी थीं। ट्रेनों की रफ्तार अब मुंबई की भीड़ को लेकर उन्हें अपनी मंजिल तक का सफ़र करने के लिए निकलने लगी थी.

डॉक्टर अब भी उम्मीद में खड़ा था… अपने कैमरे की स्ट्रैप को घूरता हुआ… सोचता हुआ कि:

"कभी-कभी कैमरे से ज्यादा हिम्मत की ज़रूरत होती है फोटो खींचने के लिए..."

और फिर... रात को सपने सोने चले गए , कभी जागते कभी सोते सपने

अध्याय 32

"अब राज की बारी"

राज खुलेगा राज

राज का ऑफिस आज कुछ ज़्यादा ही शांत लग रहा था। AC की आवाज़ दीवारों से टकरा रही थी, और सामने की स्क्रीन पर बॉस के मेल्स किसी मुसीबत की दस्तक दे रहे थे।

राज ने डेस्क पर रखा फोन उठाया, लंच बॉक्स एक तरफ सरका दिया और विजय का नंबर डायल कर दिया।

राज (धीरे से):

"भाई… लग गई लंका। लगता है कल या परसों मेरा भी नंबर लगने वाला है।"

फोन की दूसरी तरफ चुप्पी थी।

राज (हल्की हंसी में दर्द छुपाते हुए):

"रात को घर ही रहना। कहीं बाहर मत निकलना। और हाँ, सूरज और गौरव को भी बता देना… कोई प्लान-व्लान मत बनाना अब। लगता है 'Mumbai Dreams' का अगला एपिसोड हम सबके साथ ही शूट हो रहा है।"

विजय की आवाज़ आई, बुझी हुई लेकिन दोस्ती से भरी:

विजय:

"समझ गया भाई… तेरे लिए एक सिगरेट रख रहा हूँ, आज बातों में नहीं, खामोशी में बैठेंगे।"

राज ने फोन काट दिया।

कंप्यूटर स्क्रीन पर अब भी काम चल रहा था, लेकिन दिमाग में अब Excel की फॉर्मूला नहीं, ज़िंदगी के फॉर्मूले घूम रहे थे।

"मुंबई में एक रास्ता बंद होता है... तो हज़ार सवाल खुल जाते हैं।"

अध्याय 33

"पूजा का मिलना" धुप में "छाँव"

आज का दोपहर का सूरज कुछ ज़्यादा ही तप रहा था, पर डॉक्टर फोटो की उम्मीदें अब भी ठंडी नहीं हुई थीं। सुबह से दोपहर हो गई थी, दर्जनों चेहरे कैमरे से गुजर चुके थे, लेकिन बॉस के टारगेट पूरे होते नहीं दिख रहे थे।

"अगर आज भी कोई अच्छी फोटो नहीं मिली, तो बॉस फिर से गालियाँ देगा," डॉक्टर बड़बड़ाया, जब वह आज़ाद मैदान की तरफ मुड़ा।

तभी सामने से एक जानी-पहचानी सी चाल दिखी। हल्के नीले रंग की सूती कुर्ती में कोई लड़की तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। डॉक्टर की आँखों में चमक आ गई।

"पूजा जी!" उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई।

लड़की रुकी, पलटी। वही मुस्कान, वही भोले से चेहरे पर चौंकने की मासूमियत। डॉक्टर की तरफ बढ़ते हुए उसने कहा—

पूजा:

"अरे! डॉक्टर सर आप?"

डॉक्टर (थोड़ा ताना मारते हुए):

"हाँ जी हम ही। हम कब से इंतज़ार कर रहे थे आपका। कॉल लगाया, नंबर नहीं लगा, और फिर उम्मीद भी टूटने लगी थी।"

पूजा ने सिर झुकाया, एक हल्की सी थकान भरी मुस्कान के साथ बोली—

"क्या बताऊँ सर... फोन चोरी हो गया था। आपका नंबर भी कहीं लिखा नहीं था, और काम में ऐसी फँसी कि यहाँ आने का वक्त ही नहीं मिला।"

"आज सोचा थोडा-सा सुकून मिलेगा यहाँ... और देखिए, आप मिल गए।"

डॉक्टर का दिल कुछ पल को शांत हो गया। उसने पूजा के हाथ में कुछ छोटा सा सामान देखा — शायद किसी ज़रूरत का छोटा-सा सामान बड़ी मुश्किलों से खरीदा गया था।

डॉक्टर (गंभीर होकर):

"अब फिकर मत करो पूजा जी, जो भी ज़रूरत होगी, मैं पूरा ध्यान रखूंगा।"

पूजा ने नज़रे चुराई, मुस्काई… और धीमे से कहा—

"सच्ची?"

डॉक्टर की मुस्कान अब कैमरे के पीछे नहीं, खुद उसके चेहरे पर थी। दोनों धीरे-धीरे आज़ाद मैदान के किनारे-किनारे टहलते चले गए — कभी खिलखिलाहट, कभी चुप्पी… और कई अधूरे जज़्बातों के बीच एक नई शुरुआत।

अध्याय 34

”दो दिल एक जान" सब कहानी है

ऑफिस का माहौल जैसे किसी तूफान से पहले की शांति थी — मगर राज के लिए, ये शांति भी बेचैनी जैसी लग रही थी।

"राज, ये नोटिस है। कंपनी की हालत तुम जानते ही हो। तीन हफ्तों का वक्त है तुम्हारे पास," बॉस की आवाज़ में नर्मी नहीं, मजबूरी थी।

राज ने कागज़ लिया, आँखें ईमेल्स पर, और दिमाग जैसे किसी गड्ढे में गिरता चला गया।

इसी बीच मोबाइल स्क्रीन पर **सिम्मी** का नाम चमका।

सिम्मी:

"हैलो राज, तुम कहाँ हो?"

राज (थकी हुई आवाज़ में):

"ऑफिस में… और बहुत टेंशन में।"

सिम्मी (थोड़ा हल्का माहौल बनाते हुए):

"अरे छोड़ो ना टेंशन-वेशन, आज इवनिंग में मिल सकते हैं?"

राज के चेहरे पर हल्की मुस्कान आई, लेकिन अगले ही पल कंप्यूटर स्क्रीन पर नया ईमेल झपका।

"आज नहीं यार, दिमाग बहुत खराब है…" राज ने टालते हुए कहा।

सिम्मी:

"बस ऐसे ही… कुछ ज़रूरी बात थी…"

राज:

"कल मिलते हैं, प्लीज़।"

राज ने कॉल कट की और सिर टेबल पर टिका दिया।

इवनिंग में 7:30 बजे, सिम्मी का फिर से कॉल आया।

राज (थोड़ा हल्के मूड में):

"हाँ सिम्मी जी, बोलिए, बहुत याद आ रही है आपकी… अच्छा है, कोई तो है इस दुनिया में… तुम्हें एक बात बतानी थी—"

सिम्मी (बीच में रोकते हुए):

"राज… मैं तुम्हें छोड़ना चाहती हूँ।"

राज सन्न। लगा जैसे सब कुछ रुक गया हो।

"क्या?" उसके मुँह से बस यही निकला।

"मज़ाक मत करो यार, वैसे ही बहुत टेंशन में हूँ।"

सिम्मी:

"मैं कोई मज़ाक नहीं कर रही… आज के बाद मैं तुम्हें कॉल नहीं करूँगी। और तुम भी मत करना।"

राज:

"पर ऐसा क्या हो गया है?"

"इतनी जल्दी कैसे सब बदल गया?"

सिम्मी:

"पता नहीं… जो पहले जैसा था, वो अब नहीं है। मुझे लगता है, अब अलग हो जाना चाहिए।"

राज (आवाज़ धीमी पड़ती जा रही थी):

"प्लीज़… कल सुबह मिलो, एक बार।"

सिम्मी:

"अब ज़रूरत नहीं। गुडबाय, राज।"

कॉल कट हो गया।

राज ने कुछ देर मोबाइल को घूरा… फिर जैसे अचानक कुछ याद आया, बॉस का नंबर डायल कर दिया।

"सर… मुझे अभी जॉब से मत निकालिए… मैं कोशिश कर रहा हूँ…"

बॉस की आवाज़ अब की बार सख्त थी—

"राज, ये सिर्फ तुम्हारे साथ नहीं हो रहा। हम सब जा रहे हैं। जितनी जल्दी हो, नई जॉब ढूंढो। ओके? गुड नाईट।"

फोन कट गया।

राज अब चुपचाप, खाली चेहरा लिए, अपने कमरे में बैठा रहा।

कंधे झुके हुए, और आँखें दरवाज़े की तरफ — जैसे किसी चमत्कार की उम्मीद कर रहे हों।

कुछ देर में सूरज, विजय और गौरव भी घर लौट आए। एक-एक कर सबकी नज़र राज पर पड़ी, पर कोई कुछ नहीं बोला। कमरे में बस खामोशी थी… और राज की टूटती साँसें।

अध्याय 35
"मुंबई में सब कुछ फ़िल्मी है"

घर का माहौल उस रात कुछ और ही था। टीवी ऑन था, लेकिन आवाज़ से ज़्यादा कमरे में टेंशन गूंज रही थी। तीनों — **राज, सूरज, विजय**, अपने-अपने कोने में बैठे थे। बातों में खीझ थी, चेहरे पे हार की लकीरें।

विजय (राज से, चुटकी लेते हुए):

"भाई तेरी तो कंपनी VIP थी… तेरे कैसे लग गए?"

राज (चिढ़ते हुए):

"पहले ही मूड खराब है, और मत बोल…"

सूरज (मुस्कुराकर):

"भाई, तेरा कौन-सा मूड था जो स्पेशल खराब हो गया?"

राज (थोड़ा रुककर, थकी आवाज़ में):

"सिम्मी का कॉल आया था… कह रही थी—

'मैं तुम्हें छोड़ना चाहती हूँ… आज के बाद मुझसे मिलने की कोशिश भी मत करना…'"

एक पल के लिए कमरे में सन्नाटा छा गया। तभी **डोर बेल** बजी।

विजय ने दरवाज़ा खोला और **गौरव** अंदर आया — वही पुरानी मुस्कान लिए, जैसे कुछ हुआ ही ना हो।

गौरव:

"और मेरे शेरों, क्या चल रहा है? नौकरी ही तो गई है… हम भी तो घर पर बैठे हैं न, पिछले कई महीनों से!"

सूरज:

"भाई, तू तो घर बैठे-बैठे भी पैसे कमा लेता है…"

गौरव (हँसते हुए):

"अरे, ज्यादा परेशान मत होना। जब तक तुम सबकी कहीं भी जॉब नहीं लग जाती… मैं तुमसे कोई रेंट नहीं लूँगा।"

कमरे में जैसे हल्का-सा उजाला छा गया हो। सूरज और विजय के चेहरे पर मुस्कान लौट आई।

लेकिन राज अभी भी चुप था।

गौरव (राज की ओर देखकर):

"भाई, तू खुश क्यों नहीं दिख रहा?"

विजय (थोड़ा मज़ाक में):

"गौरव भाई, इसको सिम्मी ने अलविदा कह दिया है… अभी-अभी।"

गौरव कुछ पल को राज को देखता रहा, फिर मुस्कराया—

"ये मुंबई है दोस्त… और यहाँ सब कुछ फ़िल्मी है।"

प्यार इश्क़ और मोहब्बत

राज हल्की साँस लेकर मुस्कराया, और फिर **शायराना अंदाज़** में बोला:

"जो हमें जाएगा छोड़कर…

वो रोएगा फूट-फूटकर…"

कमरे में थोड़ी देर के लिए सब चुप। फिर अचानक विजय जम्हाई लेता है—

"मुझे तो नींद आ रही है यार…"

राज ने मुड़कर उसकी ओर देखा और हल्के हँसी में कहा—

"इसको अभी भी नींद आ रही है!

वाह रे छोरे, तेरा जवाब नहीं…"

तीनों हँस पड़े। कमरे की दीवारों पर फिर से ज़िंदगी की हल्की खनक लौट आई थी।

30 दिन बाद...

अध्याय 36
"EMI की घंटी" दिमाग़ की दही

दोपहर के वक्त घर में शांति थी, लेकिन राज का मन बेचैन। तभी फोन बजा — स्क्रीन पर लिखा था: **"BANK - CUSTOMER SERVICE"**.

राज ने जैसे ही कॉल उठाया, एक बेहद प्रोफेशनल सी आवाज़ आई — साफ़, पर ठंडी।

बैंक लेडी:

"हैलो सर, मैं HBC बैंक से बोल रही हूँ। आपकी इस महीने की EMI बाउंस हो गई है। आप पेमेंट कब तक कर पाएंगे?"

राज (हल्का सा झेंपते हुए, लेकिन आवाज़ में आत्म-संयम रखते हुए):

"हाँ… हाँ मैम, मालूम है मुझे… देखिए, थोड़ी दिक्कत चल रही है इन दिनों… मैं पक्का अगले हफ्ते तक पेमेंट कर दूंगा।"

बैंक लेडी (औपचारिक अंदाज़ में):

"ठीक है सर, हमने आपकी बात रिकॉर्ड कर ली है। कृपया समय पर पेमेंट कर दें, वरना आगे की प्रोसेस शुरू हो जाएगी।"

राज:

"जी... शुक्रिया।"

फोन कट हुआ, लेकिन उस प्रोफेशनल लहजे की आवाज़ जैसे अब भी कमरे में तैर रही थी। राज ने सिर झुकाकर मोबाइल मेज पर रखा और चुपचाप खिड़की से बाहर देखने लगा।

खिड़की के बाहर मुंबई वैसी ही भाग रही थी — तेज़, बेपरवाह।

राज के मन में चल रहा था —

"कमाल है... EMI बाउंस हो गई, और सिम्मी भी... मुझे छोड़ गई।

वो खड़ा हुआ, फ्रिज खोला, पानी पिया और खुद से बोला —

"नेक्स्ट वीक... हाँ, नेक्स्ट वीक तक सब सेट कर दूंगा..."

अध्याय 36 A

"बैलेंस ने जवाब दे दिया" जेब ख़ाली, मगज़ मारी

दोपहर का वक्त था। घर में हल्की सी खामोशी फैली हुई थी। खिड़की से आती धूप के टुकड़े ज़मीन पर बिखरे थे — जैसे उम्मीदें जो अब बिखरने लगी थीं।

सूरज सोफ़े पर बैठा अपने मोबाइल में कुछ सर्च कर रहा था, जब अचानक कॉल आया।

"PERSONAL LOAN - HBC बैंक " लिखा था।

उसने कॉल उठाया।

कॉल सेंटर एक्जीक्यूटिव:

"हैलो सूरज जी, आपकी EMI बाउंस हो गई है। क्या आप कुछ बता सकते हैं, कब तक पेमेंट कर पाएंगे?"

सूरज (थोड़ी हँसी में ढलती थकावट के साथ):

"भाई... कुछ दिन की मोहलत दे दो। अगले हफ्ते तक कर दूंगा, बस थोड़ा जुगाड़ लगाना है।"

एक्जीक्यूटिव:

"ठीक है सर, हम अगले हफ्ते तक वेट करेंगे।"

फोन कट होता है।

उधर विजय अपने कमरे में था। उसके पास भी वही किस्मत दस्तक दे रही थी — मोबाइल की घंटी के रूप में। विजय को भी शाम तक HBC बैंक से कॉल आता है

विजय (फोन उठाते ही):

"हाँ भाई बोलो।"

कस्टमर केयर:

"सर, आपका EMI बाउंस हो गया है। लेट फीस जुड़ चुकी है। क्या आप पेमेंट की कोई डेट बता सकते हैं?"

विजय (थोड़ा झल्लाकर):

"हफ्ते भर में सब भर दूँगा। बकाया नहीं रखता मैं, समझे?" विजय भी अगले कुछ दिनों में पेमेंट भरने की बात करता है

कस्टमर केयर:

"ओके सर, नोट कर लिया है।"

विजय फोन रखता है और दरवाज़े पर लात मारकर बाहर निकल आता है।

विजय:

"अगर पेमेंट टाइम पर ना हो तो ये ये कंपनियाँ तो दीमक की तरह धीरे धीरे खोकली कर देती है, एक दिन लेट क्या हो जाओ, जान खा जाती हैं।"

सूरज (सिर हिलाते हुए):

"हम ही हैं जो सब भुगत रहे हैं — EMI, रेंट, प्यार का TAX और नौकरी का **THE END**."

राज (हँसी दबाते हुए):

"मुंबई में सिर्फ ट्रैफिक ही स्लो है, बाकी सब रफ्तार से भागता है — EMI भी।"

तीनों एक-दूसरे को देखते हैं। चेहरे पर मुस्कान लाने की कोशिश होती है, लेकिन अंदर से सभी जानते हैं — वक्त भारी है।

अध्याय 37

"जो था, अब नहीं रहा" ये मुंबई है यहां सब कुछ फ़िल्मी है

रात के क़रीब 2 बजे थे। घर की लाइटें बुझ चुकी थीं, लेकिन **गौरव के घर के उस छोटे से कमरे में** एक रौशनी अब भी जल रही थी — **राज के मोबाइल की।**

राज बिस्तर पर लेटा हुआ था, लेकिन उसकी आंखें बंद नहीं हो रही थीं। वो छत को घूरते हुए जैसे कहीं खोया हुआ था। उसके कानों में बार-बार वही आवाज़ गूंज रही थी — **सिम्मी की आवाज़।**

"राज, मुझे लगता है अब हमें अलग हो जाना चाहिए..."

वो आँखें बंद करता है, तो उसे वो दिन याद आता है जब सिम्मी ने उसका हाथ पकड़ कर कहा था—

"मुंबई में कितनी भी मुश्किल क्यों ना हो, मैं हमेशा तेरे साथ रहूँगी।"

राज बिस्तर से उठकर पानी पीने जाता है, मगर गला जैसे सूख गया हो। पानी पीने के बाद भी मन हल्का नहीं होता। वो मोबाइल उठाता है, **सिम्मी का चैट ओपन करता है**, फिर कॉल लॉग। उसका हाथ बार-बार "Call" बटन पर जाता है... लेकिन फिर रुक जाता है।

वो खुद से ही मन ही मन बातें करता रहता है —

"क्यूँ किया तूने ऐसा सिम्मी? क्या इतना आसान था मुझे छोड़ देना?"

एक पल को उसका दिल करता है — भाग कर सिम्मी के पास जाए, उससे पूछे, चीखे, झगड़े। मगर अगली ही पल उसे याद आता है — **अब ना नौकरी है, ना प्यार, और ऊपर से बैंक की EMI का बोझ।**

वो पास रखे बैग से बैंक का लेटर निकालता है, जहाँ साफ-साफ लिखा था —

"FINAL REMINDER - EMI BOUNCED. PLEASE PAY IMMEDIATELY TO AVOID LEGAL ACTION."

राज लेटर को फाड़ कर फेंक देता है, और वापस बिस्तर पर लेट जाता है। लेकिन नींद... जैसे उससे कोसों दूर चली गई हो।

एक अकेली आँख से आँसू की एक बूंद चुपचाप तकिए में समा जाती है।

अध्याय 38
"नेता जी , जो जी जान से युवाओं के लिए करते है भाषण-बाज़ी

सुबह के दस बज चुके थे। **गौरव के घर का हॉल** किसी *बॉयज़ हॉस्टल* से कम नहीं लग रहा था — बेडशीटें ईधर उधर, कुर्सियाँ इधर-उधर, और टीवी की आवाज़ सबसे तेज़।

विजय मुँह में ब्रश घुसाए, बेसिन से उठते हुए बड़बड़ा रहा था,

“वाह हमारे नेता जी… कमाल कर रहे हैं। हर बार एक ही स्क्रिप्ट!”

राज, जो कुर्सी पर पसर कर टीवी देख रहा था, ऊब कर बोला,

“भाई मुझे तो भूख लगी है, कोई तो उठ के नाश्ता ले आओ।”

उधर **गौरव** अपनी चाय के साथ अखबार के पन्ने पलट रहा था।

सूरज, अपने अंदाज़ में टीवी के सामने ध्यान से बैठा था, मानो नेता जी का हर शब्द उसके दिल में उतर रहा हो।

तभी विजय ब्रश छोड़कर टॉयलेट की ओर बढ़ा, लेकिन सूरज बिजली की रफ्तार से भागा और उसके आगे घुस गया।

विजय चिल्लाया,

“अबे सूरज! तुझे क्या जल्दी है? तुझे कौन सा इंटरव्यू देने जाना है?”

अंदर से सूरज की आवाज़ आई,

“भाई सब्र रख! जल्दी ही बाहर आऊंगा!”

गौरव, जिसे टीवी पर पॉलिटिक्स से कोई खास लगाव नहीं था, बोला,

"चैनल चेंज कर न यार, ये भाषण अब और नहीं झेल सकता।"

राज ने रिमोट की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा,

"रुक जा थोड़ी देर... देख तो सही नेता जी क्या बोल रहे हैं — शायद हमें ही जॉब दे दें टीवी पर!"

टीवी पर नेता जी दमदार आवाज़ में बोले —

"ये देश युवाओं का देश है! हम अपने किसी भी युवा को बेरोज़गार नहीं रहने देंगे!"

इतना सुनना था कि सूरज जैसे ही बाहर निकला, **भारी ग़ुस्से में टीवी के पास आया**, और स्क्रीन पर ज़ोर से हाथ मारते हुए चिल्लाया:

(गाली अधूरी ही रह गई, सब हँस पड़े)

इसी बीच **विजय बाहर से कुछ खाना ले आया** — वडा पाँव, समोसे, ब्रेड पकौड़े और एक पुरानी आदत — चाय।

सभी दोस्त खाने के साथ-साथ थोड़ी-बहुत हँसी-मज़ाक करते हैं। और तभी गौरव कहता है:

"चलो इवनिंग में जुहू चलते हैं, थोड़ा मूड फ्रेश होगा, बहुत टेंशन ले ली यार।"

सभी ने एक-दूसरे को देखा, और एक साथ बोले —

"Done!"

अध्याय 39
"जुहू की शाम और उम्मीद का एक पोस्टर"

मुंबई की एक और भीगी-भीगी शाम... चारों दोस्त **जुहू बीच** की रेत पर नंगे पांव चल रहे थे। हल्की ठंडी हवा, दूर से आती समंदर की लहरों की आवाज़ और आसमान पर लाली की झलक जैसे इस मुंबई शहर रात की तैयारी में जुट गया हो ।

राज बड़ी उदासी और हलकी ख़ुशी के साथ धीरे-धीरे बोल पड़ा,

“कितने दिनों बाद आए हैं यहाँ... पहले जब आते थे तो जेब में तनख्वाह होती थी, अब बस यादें हैं।”

विजय की आवाज़ में एक टूटते सपनों का भार था,

“सच कहूँ तो... लगता है ये शहर अब हमारा नहीं रहा। एक वक़्त था जब हम इसके लिए जिए जा रहे थे, *अब ये ही शहर हमें निगलने पर तुला है।”*

गौरव, हमेशा की तरह, थोड़ा दार्शनिक होते हुए बोला,

“नहीं भाई, ये मुंबई सबकी है। जिनके पास कुछ नहीं है, वो भी यहीं जीते हैं। हम तो फिर भी साथ हैं, और थोड़ी-बहुत उम्मीद भी है।”

इसी बीच **सूरज** की नज़र एक पास की **दीवार पर लगे एक पोस्टर** पर पड़ी। वह रुक गया। बाकी दोस्त कुछ समझ पाते, इससे पहले वो उंगली से इशारा करके बोला:

“अबे देखो! 'लोन ऑन Low इंटरेस्ट – जो करे आपकी हर मुसीबत का स्वाहा'...!”

गौरव पास जाकर पोस्टर पढ़ने लगा,

"एक ट्राय देने में क्या जाता है। क्या पता कोई रास्ता निकल आए।"

राज ने बिना समय गँवाए **अपना मोबाइल निकाला** और पोस्टर पर छपे नंबर पर कॉल लगाया।

फोन के दूसरी तरफ एक रौबदार आवाज़ आई —

"Hello, yes sir. Loan inquiry? Please call next week, documents ke saath. We will help you start."

राज ने *"Thank you"* कहकर कॉल काटा। जैसे ही उसने बाकी दोस्तों को बताया, **सभी के चेहरे पर एक मुस्कान** दौड़ पड़ी — एक अरसे बाद।

और फिर वही हुआ जो हमेशा होता है, जब चार दिल साथ हों —

सभी एकसाथ एक गाना गाने लगे। कोई लिरिक्स याद कर रहा था, कोई सुर में सुर मिलाने की कोशिश, और कोई सिर्फ ताली बजा रहा था।

वो गाना सिर्फ गाना नहीं था, वो उनकी ज़िंदगी की वापसी का पहला सुर था।

अध्याय 40
EMI की सुबह – लग गई लंका

मुंबई की वो सुबह भी बाकी दिनों जैसी ही थी — नींद, आलस और अधूरी उम्मीदों से भरी। **गौरव के घर** में चारों दोस्त बेसुध सो रहे थे। सूरज की टाँग विजय के ऊपर, और राज का हाथ अपने मोबाइल पर पड़ा हुआ।

अचानक **डोर बेल** बजी — एक लंबी टनटनाहट, जैसे किसी ने दरवाज़ा नहीं, नींद पर पत्थर मारा हो।

राज मुश्किल से आँखें खोलता है, उंगलियाँ आँखों पर मलते हुए दरवाज़े तक जाता है।

दरवाज़ा खोलते ही सामने एक अधेड़ उम्र का आदमी खड़ा था, फाइल और डायरी हाथ में।

राज:

"हेल्लो सर, आप कौन?"

बैंक वाला - विजय का:

"मैं बैंक से हूँ। विजय से मिलना है। उन्होंने EMI की बात की थी पिछले महीने, कहा था ऑनलाइन कर देंगे... मगर अभी तक कुछ मिला नहीं है। कॉल भी नहीं उठा रहे।"

राज (थोड़ा झिझकते हुए):

"अरे विजय तो सुबह-सुबह ही निकल गया था कहीं। मैं आपका मैसेज दे दूँगा जब आएगा।"

बैंक वाला कुछ न बोलते हुए **भारी कदमों से मुड़ गया।** राज ने जल्दी से दरवाज़ा बंद किया और सीधे हाळ की ओर भागा।

राज:

"विजय बेटा, उठ... तेरा बैंक वाला आया था, मैंने तुझे कहीं बाहर बता कर वापस भेजा है!"

विजय (बिस्तर में करवट बदलते हुए):

"हाँ भाई... कॉल पे कॉल कर रहे हैं परसों से, अब घर तक पहुँच गए साले। मैं भी झूठ पे झूठ बोल रहा हूँ कि पेमेंट बस हो ही जाएगा..."

राज ने उसके माथे पर हल्का सा थपका मारा,

"टेंशन मत ले, चल रेडी हो जा, बाहर चलते हैं कुछ खा आते हैं।"

अभी दोनों सोच ही रहे थे कि **डोर बेल फिर से बज उठी।**

सूरज इस बार दौड़कर दरवाज़ा खोलता है। एक और आदमी सामने — फिर वही बैंक वाला अंदाज़, मगर इस बार **राज** के लिए।

बैंक वाला - राज का:

"सर, मैं बैंक से हूँ। क्या राज घर पर हैं? उनकी EMI पेंडिंग है। कॉल्स का कोई जवाब नहीं आ रहा।"

सूरज (तेजी से झूठ गढ़ते हुए):

"अभी तो राज घर पर नहीं हैं। जब आएँगे तो आपका मैसेज दे देंगे।"

राज और विजय दोनों अब सोफे पर बैठे **खामोशी से एक-दूसरे को देख रहे थे।** घर में टेंशन अब घुलने लगी थी।

गौरव, जो अब तक नींद में थे, धीरे-धीरे आँखें मसलते हुए बाहर आया,

"कौन है भाई? किसी बंदी का भाई लग रहा है क्या सुबह-सुबह?"

राज (हल्के कटाक्ष में):

"बंदी नहीं भाई... बैंक वालों के फूफा जी पधारे हैं!"

गौरव हँसते हुए बोला,

"ठीक है, तुम लोग वेट करो। मैं फ्रेश होकर कुछ खाने को लाता हूँ बाहर से। तब तक EMI की सवारी का इंतज़ार करो।"

अध्याय 40-A

EMI वाले पीछा नहीं छोड़ते – जान चाहे EMI ना जाए

गौरव जैसे ही बाहर खाने के लिए निकला, घर में थोड़ी राहत का माहौल बनने लगा था। लेकिन कुछ ही मिनटों बाद जब **विजय दरवाज़ा खोलकर बाहर निकला**, तो सामने का नज़ारा देख कर उसके होश उड़ गए।

विजय जैसे ही सोसाइटी के मैं गेट की तरफ बढ़ रहा था तभी नज़र सीधी उसी आदमी पर पड़ी — लंबा-सा नोटबुक लेकर खड़ा, जैसे गुनहगार को पकड़ने आया हो। उसकी चाल, चेहरा और एक्सप्रेशन पहचानने में देर नहीं लगी।

विजय (मन में):

"अबे ये तो वही है जो उस दिन वेरिफिकेशन के टाइम आया था। हो सकता है सूरज के लिए आया हो , अब साला EMI के पीछे पड़ा है।"

वो एक पल के लिए **जैसे जड़ हो गया**, फिर अगले ही पल **उल्टे पाँव भागा** — बिना पीछे देखे, बस सीधे अंदर की तरफ।

भागते भागते उसके **पैर का बैलेंस बिगड़ा और एकदम से फिसल गया**। फर्श पर गिरते ही एक हल्की सी कराह उसके मुँह से निकली।

विजय (कराहते हुए, फिर फ़ोन निकालते हुए):

"गौरव भाई... सुनो ना... खाने के साथ एक सिगरेट भी ले आना। यहाँ टेंशन कुछ ज्यादा ही हो गई है।

फोन रखते ही वो धीरे-धीरे लंगड़ाते हुए कमरे की ओर बढ़ने लगा — एक हाथ से पीठ सहलाते हुए, और दूसरे से मोबाइल पकड़े, जैसे अब EMI के नहीं, **जिंदगी के वसूली एजेंट** पीछे पड़ गए हों।

अध्याय 40-B
छत वाली दावत – और जिन्दगी ने ली करवट

दिन भर की भागदौड़ और बैंक वालों की बमबारी के बाद **गौरव जब मार्केट से लौटता है**, तो बैग में खाने-पीने का सामान लिए हल्का थका और भारी मन लिए डोर तक पहुंचता है। तभी **डोर बेल फिर से बजती है।**

सूरज (थोड़ा चिढ़ते हुए, खुद से):

"अब कौन आया सुबह-सुबह, EMI वालों की शिफ्ट तो अभी खत्म हो गई थी।"

वो डोर खोलता है, और सामने खड़ी होती है **शालिनी** — वही लड़की जो बिल्डिंग के चौथे माले पर रहती थी। हमेशा की तरह आज भी वो एक प्यारी-सी मुस्कान के साथ खड़ी थी।

शालिनी (खुशमिज़ाजी से):

"हेल्लो तुम सभी! आज रात कहीं मत जाना प्लीज़। मेरे छोटे भाई का बर्थडे है। टेरेस पर छोटा सा सेलिब्रेशन रखा है — तुम सबको आना ही है!"

राज (सोफे से उठते हुए, बड़बड़ाता है):

"भाई ऐसी हालत में टेरेस पर बुला रही है... कहीं कूदकर मरने का इरादा हो तो बता दो, हम सब लाइन में लग जाएंगे।"

विजय (हल्के अंदाज़ में, आंख दबाकर):

"कोई बात नहीं... आज रात छत पर मज़ा करेंगे। क्या पता टेंशन भी हवाओं में उड़ जाए!"

शालिनी मुस्कराते हुए सिर हिलाती है और वापस चली जाती है। उसके जाने के बाद कमरे में हल्की-सी चुप्पी छा जाती है, जैसे सबके मन में कुछ चल रहा हो।

गौरव (थैला रखते हुए):

"चलो ये अच्छा मौका है। दिमाग को कुछ वक्त के लिए ही सही, पर रीसेट करना ज़रूरी है।"

राज (थोड़ा सोचते हुए):

"हां, और क्या पता टेरेस पर कोई नई कहानी शुरू हो जाए..."

अध्याय 41

केक, कॉल और कर्ज जो आसानी से अब पीछा नहीं छोड़ने वाला था

रात के आठ बज चुके थे।

चारों दोस्त घर में तैयारियों में लगे हुए थे — कोई शर्ट पहन रहा था, कोई परफ्यूम छिड़क रहा था, और कोई खुद को आईने में मोटिवेट कर रहा था कि आज की रात कुछ देर के लिए टेंशन को दरवाज़े के बाहर छोड़ देनी है।

डोर बेल बजती है।

गौरव दरवाज़ा खोलता है, सामने शालिनी खड़ी थी। उसके चेहरे पर बच्चों जैसी उत्सुकता थी।

शालिनी (मुस्कुराते हुए):

"रेडी हो सब? केक कटने का टाइम हो गया है... छत पर जल्दी आ जाना, चिंटू इंतज़ार कर रहा है।"

गौरव (हल्के अंदाज़ में):

"बस पंद्रह मिनट, फिर सब रेड कार्पेट पर एंट्री मारेंगे।"

वो मुस्कराते हुए दरवाज़ा बंद कर देता है। सब फिर से तैयारी में लग जाते हैं।

15 मिनट बाद फिर से डोर बेल बजती है।

इस बार राज दरवाज़ा खोलता है। वो सोचता है फिर से शालिनी होगी, लेकिन सामने खड़ा था एक अजनबी।

राज (थोड़ा चौंकते हुए):

"जी, आप कौन?"

बैंक वाला (सख्त लहजे में):

"मैं सूरज से मिलने आया हूँ, बैंक से हूँ। साहब का फोन कल से बंद है, और EMI अब तक नहीं आई।"

राज कुछ कहता, तभी शालिनी सीढ़ियों से वापस आती है।

शालिनी (थोड़ी चौंकती हुई):

"अरे... तुम अभी तक यही हो?"

फिर वो कमरे की ओर देखते हुए जोर से आवाज़ लगाती है:

"सूरज! विजय गौरव, जल्दी करो देर ना हो जाए !"

सूरज जैसे ही बाहर आता है, बैंक वाला अपना गुस्सा उसके ऊपर उंडेल देता है।

बैंक वाला:

"सर, आपको लगता है हम बेवकूफ हैं? कभी कहते हो कल करूँगा, कभी परसों। लोन लेते समय तो बड़ी बड़ी बाते करते हो ।

सूरज (थोड़ा झिझकते हुए):

"फोन ही बंद हो गया था, अभी-अभी आया हूँ घर..."

बात बढ़ने लगती है, तभी राज को गुस्सा आ जाता है।

राज (डटकर बोलता है):

"भाई साहब, ज़रा तमीज़ से बात कीजिए। लोन हमने लिया, क्योंकि बैंक ने दिया। हमारी औकात थी तभी मिला। EMI टाइम पर जाती रही है अब तक, एक बार लेट क्या हुई तुमने तो सभो को कटघेरे में खड़ा कर दिया।"

बैंक वाला (नाक सिकोड़ते हुए):

"ठीक है, एक दिन और देता हूँ... कल तक की मोहलत है।"

वो जाते-जाते घूरता है और फिर मुड़ जाता है।

शालिनी थोड़ी असहज होती है, फिर धीमी आवाज़ में बोलती है:

"चलो अब ऊपर आ जाओ... केक कटने का टाइम हो गया है।"

राज (हल्के तंज में मुस्कराते हुए):

"केक कटेगा, सब में बटेगा... और जो बचेगा वो तुम टिफिन में पैक करवा लेना। हम अभी अर्जेंट बाहर जा रहे हैं, ओके डिअर।"

गौरव बैग से गिफ्ट निकालता है और शालिनी को देता है।

गौरव (शरारत से):

"ये चिंटू के लिए... और उसे मेरी तरफ से एक गाल पर प्यार भरी **किस** भी दे देना।"

चारों दोस्त एक-दूसरे को देख मुस्कराते हैं, और फिर बिना कुछ कहे बाहर निकल जाते हैं — **बार की ओर।**

अध्याय 42

मुंबई की वो रात , जो चारो को अब चारोखाने चित करने वाली थी

बचे कुचे पैसे जो अब खुद बाहर निकलने के लिए अब तड़प रहे थे, बार की हलकी रोशनी, धीमा म्यूज़िक, और ग्लासों की खनक के बीच चार दोस्त एक कोने वाली टेबल पर बैठे थे। सामने रखे थे आधे भरे हुए पैग — और दिमागों में थे पूरे भरे हुए कर्ज।

राज (गुस्से में ग्लास टेबल पर रखते हुए):

"साले बैंक वालों ने तो नाक में दम कर रखा है। दिनभर कॉल पे कॉल — और हर बार वही टेप रिकॉर्डर जैसी बातें। एक बार बोल दिया ना कि पैसे मिलते ही देंगे, फिर भी..."

विजय (सिप लेते हुए):

"इनका कुछ करना पड़ेगा। नहीं तो अगली बार ये सभी गली "मोहल्ले में बदनाम कर देंगे

सूरज (थोड़ा रिलैक्स अंदाज़ में):

"ऐसे नहीं चलेगा। कोई ना कोई आइडिया तो निकालना ही पड़ेगा... वरना ये रातें नींद छीन लेंगी।"

गौरव (थोड़ा सोचते हुए):

"क्यों ना उस बयाज़ वाले को कॉल करें? जो पोस्टर जुहू में देखा था?"

राज (झिझकते हुए):

"भाई उसने तो कहा था नेक्स्ट वीक... अभी कॉल करेंगे तो कहीं नाराज़ ना हो जाए।"

गौरव:

"अरे उसे क्या पता हमारे हालात? कॉल कर ना एक बार... कम से कम कोशिश तो करेंगे।"

राज जेब से फोन निकालता है, और **'बयाज़ वाला'** नाम से सेव किए नंबर पर कॉल करता है। दूसरी तरफ से आवाज़ आती है — रूखी, सीधी और संदेहजनक।

राज:

"हेल्लो सर, मैं राज बोल रहा हूँ। हमने दो दिन पहले कॉल किया था। आपने कहा था नेक्स्ट वीक बात करें... लेकिन सर, मामला अर्जेंट हो गया है।"

बयाज़ वाला (सीधा सवाल):

"तो फिर अभी कॉल क्यों किया?"

राज (थोड़ा घबराते हुए):

"सर हमारे पीछे लोग पड़ गए हैं। EMI वगैरह का बहुत प्रेशर है। प्लीज़, कल ही लोन दिलवा दीजिए।"

बयाज़ वाला (थोड़ी देर चुप रहकर):

"ठीक है। अभी एक एड्रेस भेज रहा हूँ। आज रात ठीक **12:30 बजे** वहाँ पहुंचना। लेट मत होना।"

राज:

"सर, पैसे आज ही मिलेंगे?"

बयाज़ वाला (हँसते हुए):

"भाई... यहाँ रात को ही सौदे होते हैं। वक्त पर आ जाना।"

फोन कट हो जाता है।

राज थोड़ी देर मोबाइल को घूरता है, फिर बाकी दोस्तों की तरफ देखता है।

विजय:

"क्या बोला वो?"

राज:

"भाई आज ही बुला रहा है। नया एड्रेस भेजेगा।"

सूरज:

"मतलब वो एड्रेस जो पोस्टर पर था, वो झाँसा था?"

राज:

"शायद। और शायद ये लोन भी एक खेल हो... पर खेलना पड़ेगा।"

गौरव (थोड़ा घबराकर):

"साला कहीं लफड़ा ना हो जाए... लोन के चक्कर में डंडे ना खाने पड़े।"

राज (हल्के मजाकिया अंदाज़ में):

"भाई अभी तो हम सबको अपने पैरों पर खड़ा होना है — **टांगों** पर, न कि **लॉके अप** में। इसलिए ज्यादा दारू मत पीना... पूरी रात होश में चाहिए।"

इतने में राज के फोन पर मैसेज आता है — एक अजनबी सा एड्रेस।

चारों दोस्त फोन की स्क्रीन को घूरते हैं —

मुंबई की भीड़ से थोड़ी अलग, वो जगह किसी तूफान की दस्तक सी लगती है।

अध्याय 43
"भास्कर अड्डा"
(पोस्टर लोन वाला) वसई

रेस्तरां से निकलकर चारों दोस्त मुंबई की पटरियों पर लम्बी रेखाओं पर दौड़ती लोकल ट्रेन में चढ़े। स्टेशन का नाम था — **वसई**

ट्रेन के सफ़र में न कोई बात हुई, न कोई हँसी। सिर्फ़ एक अजीब सा सन्नाटा था, जो अंदर तक समाया हुआ था। ट्रेन की खिड़कियों से बाहर भागती रोशनियाँ, और दिल में बैठी हुई एक अनजानी घबराहट।

रात के **12:25** पर वो एक पुराने से गेट के सामने खड़े थे — जंग लगा हुआ, भारी और दो गार्डों से घिरा।

सिक्योरिटी गार्ड (रूखे लहजे में):

"हाँ बोलो, किससे मिलना है?"

राज (धीरे से):

"हमें भास्कर से मिलना है।"

(मोबाइल में आया मैसेज दिखाता है।)

गार्ड ने एक नज़र स्क्रीन पर डाली, फिर एक दीवार के पास लगे बटन को दबाया। दरवाज़ा धीरे-धीरे खुला — जैसे किसी रहस्य की किताब का अगला पन्ना।

अंदर का नज़ारा देखकर चारों के कदम वहीं थम गए।

एक पुरानी फैक्ट्री जैसी जगह — पर काम करने वाले लोग किसी सरकारी ऑफिस से भी ज़्यादा व्यवस्थित। कोई खादी में बैठा मोबाइल पर बात कर रहा था, कोई खाकी वर्दी में फाइलें पलट रहा था। कुछ बच्चे कंप्यूटर पर गेम नहीं, बल्कि **डेटा एंट्री** कर रहे थे।

गौरव (धीरे से):

"ये... क्या है यार?"

विजय:

"ये 'अड्डा' नहीं, पूरा नेटवर्क है।"

और तभी...

भास्कर की एंट्री हुई।

सूट-बूट , हाथ में सिगार, चाल में ऐसा कॉन्फिडेंस जैसे सब कुछ पहले से प्लान हो। उसके पास खड़ा आदमी घबराई आवाज़ में बोल रहा था —

आदमी:

"अगर हम एक करोड़ हार गए तो?"

भास्कर (ठंडी मुस्कान के साथ):

"ये अंडरवर्ल्ड की दुनिया है साहब, यहाँ हार-जीत नहीं, जिन्दगी और मौत का खेल खेला जाता है।"

फिर उसने चारों की ओर देखा।

भास्कर:

"तुममें से राज कौन है?"

राज (एक कदम आगे बढ़कर):

"मैं हूँ सर। मैंने ही आपको कॉल किया था।"

भास्कर:

"कितने पैसे चाहिए?"

चारों दोस्त एक-दूसरे की शक्ल देखने लगे। कोई पाँच लाख बोलने को था, कोई दस। थोड़ी देर की फुसफुसाहट के बाद राज बोला —

राज:

"हमें... बीस लाख चाहिए।"

भास्कर (हँसते हुए):

"यहाँ कम से 25 लाख से शुरुआत होती है। अगर मंज़ूर है तो लो वरना दरवाज़ा खुला है।"

इस बार दोस्त बिना सवाल किए चुपचाप एक-दूसरे की आँखों में हामी ढूँढते रहे — और फिर एक साथ सिर हिलाया।

विजय:

"सर डाक्यूमेंट्स में क्या चाहिए?"

भास्कर (गौरव की ओर इशारा करते हुए):

"हम खुद ले लेंगे। ये गौरव ही है ना?"

गौरव (चौंकते हुए):

"आपको कैसे पता?"

भास्कर:

"जब राज का कॉल आया, तभी से तुम्हारी पूरी छानबीन चालू हो गई थी।"

राज थोड़ी घबराई आवाज़ में पूछता है —

राज:

"हमें पैसे कब और कैसे लौटाने हैं?"

भास्कर:

"हर महीने की **10 तारीख**... ₹**50,000**, कैश।"

राज:

"ठीक है सर, मंज़ूर है।"

पैसे थमते ही, चारों दोस्त जैसे झटके से नींद से जागते हैं।

वो वापस निकलने लगते हैं... *तभी गेट की ओर आता एक आदमी राज से टकरा जाता है।*

राज (झटपट):

"सॉरी भाई।"

वो आदमी बिना कुछ कहे आगे बढ़ता है — उसकी आँखों में कुछ अजीब था... कुछ जाना-पहचाना।

राज रुकता नहीं — सिर्फ मुड़कर एक बार देखता है... फिर तेज़ी से बाहर निकल जाता है।

अध्याय 44

"सौदा और सवाल" लोचे की घंटी

रात के ढाई बजे, वसई स्टेशन की हलकी ठंडी हवाए, दीवारों के पास चारों दोस्त खामोश बैठे थे। लोकल ट्रेनें लगभग थम चुकी थीं, और स्टेशन पर बस खामोशी की आवाज़ गूंज रही थी।

पिछले कुछ घंटे किसी फिल्म की तरह बीते थे — पोस्टर से शुरू होकर, एक अनजान एड्रेस, एक गार्ड, एक अजीब सी दुनिया, और फिर भास्कर… अब सबकुछ जैसे ठहर गया हो।

विजय (धीमे स्वर में):

"यार... 25 लाख रुपये।

इतनी बड़ी रकम... ली तो ली, अब लौटाएँगे कैसे?"

राज (हल्के से मुस्कुराते हुए, पर आँखों में एक गहराई):

"भाई आज समझ में आया, पैसा कमाने के लिए

डिग्री नहीं, **कमीना पन** चाहिए।

जिस काम में डर लगे, वहीं से कमाई शुरू होती है।"

थोड़ी देर खामोशी रही।

राज (फिर कहता है):

"हम उतना ही यूज़ करेंगे जितनी ज़रूरत है।

बाकी सब **सेफ** रहेगा… किसी को हाथ नहीं लगाना।"

सूरज:

"हाँ, ठीक है भाई।"

विजय:

"कोई भी बेमतलब का खर्चा नहीं करेगा।"

चारों ने एक-दूसरे की तरफ देखा — उस वक़्त उनके बीच कोई हंसी नहीं थी, बस एक समझदारी थी, एक खामोश सहमति।

पर सिर्फ तीन चेहरे नॉर्मल थे — **गौरव** का चेहरा अजीब तरीके से **उदास** और **डरा हुआ** लग रहा था। उसकी आँखें बार-बार स्टेशन की ट्रैक पर जा टिकतीं, जैसे कोई जवाब वहाँ छुपा हो।

राज (नज़रें गौरव पर टिकाते हुए):

"क्या हुआ गौरव, तू कुछ बोल नहीं रहा?"

गौरव (धीरे से):

"यार... पता नहीं क्यों, डर लग रहा है।

इतने पैसे... इतनी टेंशन... और अब हर महीने का EMI —

भास्कर कोई बैंक नहीं है... वो आदमी कुछ अलग है भाई।"

किसी ने कुछ नहीं कहा। शायद सबने गौरव की बात को अपने-अपने तरीके से **महसूस** किया।

आखिरकार, **सुबह का पहला लोकल** प्लेटफॉर्म पर आ चुका था। भीड़ अभी बहुत कम थी — बस कुछ नाईट शिफ्ट वाले, कुछ अख़बार वाले और कुछ नींद से थकी आत्माएँ।

चारों दोस्त चुपचाप उस ट्रेन में चढ़े। कोई बात नहीं हुई, बस ट्रेन की सीटों से बाहर झाँकते रहे — जैसे हर स्टेशन पर कोई जवाब मिलने की उम्मीद थी।

घर पहुँचते ही, सबने जैसे-जैसे बेग पटके, और बिना बोले, अपने-अपने बेड पर गिर पड़े।

नींद आई नहीं... लेकिन थकान ज़रूर आई थी।

अध्याय 44-A

"सुबह लेकर आई उम्मीदों भरी किरण"

दोपहर के करीब 12 बजे, कमरे में हल्की धूप खिड़की से झांक रही थी। मोबाइल की बैटरी खत्म हो चुकी थी, और घड़ी की टिक-टिक भी थक कर धीमी लग रही थी।

चारों दोस्त अभी तक नींद में थे — या यूँ कहें, **पिछली रात के बोझ** से बाहर नहीं आ पाए थे।

तभी…

"टन टन!"

डोर बेल की आवाज़ ने पूरे घर का आलस तोड़ दिया।

गौरव आँखें मसलता है, और दरवाज़ा खोलता है।

सामने शालिनी खड़ी थी। वही चौथी मंज़िल वाली लड़की, जिसकी मासूमियत हमेशा दोस्ती से थोड़ा ज़्यादा लगती थी।

शालिनी (हंसते हुए):

"हेल्लो… उठ गए सब?

कल रात छत पर मैं कब तक तुम्हारा इंतज़ार करती रही…

ये लो केक!

बचा के रखा था… खा लेना। अच्छा मैं चलती हूँ।"

गौरव (थोड़ा सकपकाकर):

"थैंक्स... और सॉरी।"

शालिनी बस मुस्कराई और मुड़ गई।

गौरव धीरे से दरवाज़ा बंद करता है, और जैसे ही पीछे पलटता है — बाकी तीनों भी नींद से जाग चुके थे।

कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी, सबने **एक-दूसरे की आँखों में देखा और सिर हिलाया।**

राज (हल्के स्वर में):

"चलो... अब वक्त है सही करने का।"

सभी फ्रेश होते हैं, और अपने-अपने बैंक वालों को कॉल करके घर बुलाते हैं।

थोड़ी देर बाद, EMI के पैसे उनके हाथ में दिए जा रहे थे। हाथ काँपते नहीं थे अब... क्यूँकि पहली बार डर के बजाय उनके पास **जवाब और जुगाड़** दोनों थे।

फिर... वही रसीद, वही दस्तख़त, वही "थैंक यू सर" की आवाज़।

और इस बार — किसी की आँखों में ग्लानि नहीं थी।

बस एक संतोष...

कि चाहे जैसे भी, **पहली किश्त** तो चुका दी।

अध्याय 45
"पैसे आए, तो प्लान बना"

शाम होते-होते कमरे का माहौल **एकदम बदला-बदला** सा था।

वो चुप्पी, वो तनाव… सब छू मंतर।

पैसे मिल गए थे, EMI चली गई थी, और अब…

"अब क्या करें?" यही सवाल चारों के बीच तैर रहा था।

सूरज ने सबसे पहले चुप्पी तोड़ी।

सूरज (जोश में):

"भाई… गोवा चलते हैं!

कसम से… लन्दन वाली फीलिंग आ जाएगी।

मैंने YouTube पर विडियो देखे हैं — समंदर, शैक, पार्टी!"

विजय (तपाक से):

"भाई… इतनी मुसीबतों से निकले हैं,

क्यों ना माता रानी के दर्शन करने वैष्णो देवी चलें?"

सूरज (तेज़ी से पलटते हुए):

"वो जगह ना बिल्कुल सही नहीं है भाई!

तुझे पता है कितना खतरा होता है वहां।

खाई, पहाड़ी, भीड़ — कुछ भी हो सकता है!"

विजय (कंधे उचकाते हुए):

"भाई… वो सब कभी-कभी ही होता है।

जो लिखा है, वो तो होकर रहेगा ना।"

राज (हँसते हुए):

"हमारी किस्मत भी कभी-कभी ही वाली है

वरना तो EMI वालों ने हमारी रिंगटोन तक बना ली थी।"

तभी गौरव कमरे में दाखिल होता है — **हाथ में बिस्किट का पैकेट और ठंडी बोतल।**

गौरव (चेहरा देखकर):

"अब क्या हो रहा है यहाँ?"

राज (मुस्कराते हुए):

"प्लानिंग चल रही है — गोवा vs वैष्णो देवी।"

गौरव एक पल सोचता है… फिर कहता है —

गौरव (साधारण टोन में):

"भाई, चलो आज की रात ग्रांट रोड चलते हैं…

थोड़ी हवा भी बदल जाएगी,

थोड़ा मूड भी।"

सब चुप। फिर एक साथ — "ठीक है!"

और एक बार फिर… चारों दोस्त एक नए प्लान की ओर निकलते हैं।

न किसी लोन की चिंता,

न किसी बैंक वाले की याद।

बस यारियां और रात।

अध्याय 45A
"गौरव और ग्रांट रोड का टकराव"

मुंबई की वो रात, जब चार दोस्त अंधेरी स्टेशन से **"ग्रांट रोड"** की तरफ़ निकल पड़े थे —

किसी बड़े दर्शन या शांति की तलाश में नहीं…

बस *थोड़ी हलचल, थोड़ी मस्ती* की उम्मीद में।

ट्रेन की सीटी, लोकल की भीड़, और सीट पर बैठते ही सूरज का डायलॉग —

सूरज:

"भाई... *'मुम्बई लोकल में बैठना भी एक इश्क़ है',*

पर हमारा इश्क़ आज कहीं और टिकेगा।"

सभी हँसते हैं, और जल्द ही पहुंच जाते हैं — **ग्रांट रोड**।

गौरव सीधा ले जाता है एक पुरानी बिल्डिंग में, **लाल रोशनी की उस दुनिया में**,

जहाँ जितने दरवाज़े और **राज कुछ छुपे हुए** ज़्यादा होते हैं।

अंदर पहुंचते ही जैसे कोई मेले में घुस आए हों —

हर किसी के लिए एक अलग 'एंटरटेनमेंट' तय।

राज, सूरज और विजय तो *झटपट अपनी पसंद* चुन लेते हैं।

राज (इशारे में):

"हेल्लो, तुम... वही जिसे मैं ढूंढ रहा था।"

सूरज:

"ये तो मेरी किस्मत निकली..."

विजय:

"अरे हम तो यूँ ही बातें करने आए हैं…"

सब ठीक चल रहा था, जब बारी आई गौरव की।

पर गौरव को लड़की नहीं भाई — टेंशन दिखती है।

वो पीछे हटता है।

गौरव:

"नहीं यार, मुझे एक अर्जेंट काम याद आ गया है।"

और तभी... पीछे से — एक **गन** उसके सिर पर।

गुंडा (धीरे से):

"क्या हुआ हीरो? इतनी रात को कौन-सा ऑफिस खुला है?"

गौरव (डरते हुए):

"सर, ज़रूरी कॉल है… नहीं गया तो नौकरी से निकाला जाऊंगा।"

गुंडा (गंभीर टोन में):

"अब तो तू कुछ करके ही जाएगा…

लड़की की इज़्ज़त का सवाल है।"

गौरव (हकबकाते हुए):

"यहाँ भी…?" इज्ज़त का सवाल

आखिर… मन मार कर गौरव अन्दर चला गया।

कुछ देर बाद…

सभी दोस्त बाहर आते हैं — हँसते, मुस्कुराते, चहकते।

बस एक… **गौरव** चुप।

राज:

"क्या हुआ भाई? मुँह क्यों लटक गया?"

गौरव (सिर झुकाकर):

"भाई… बड़ी मुश्किल से बचकर आया हूँ।

आज तो मेरी इज़्ज़त लूट ही जाती।"

राज (चौंक कर):

"क्या? हुआ क्या?"

गौरव:

"मत पूछ भाई… आज की रात…

मेरी आखरी रात भी बन सकती थी।"

सूरज (विजय से कान में):

"वैसे ही फायरिंग की या छतरी भी ली?"

विजय (सीधा सा जवाब):

"हम तो सिर्फ बात करने गए थे…"

राज (हँसते हुए):

"भाई… इससे अच्छा होता

'नाईट शो' देख लेते।"

गौरव:

राज तू तो Truelover था बे , अब क्या हुआ

राज (हँसते हुए):

अबे तुझे क्या पता मैंने उसके साथ कुछ किया, या क्या क्या बातें की , *भाई अपुन तो राज़ की बातें जानने गए थे*

(और सब हँसते-हँसते स्टेशन की ओर निकल जाते हैं —

पीछे छोड़ते हुए ग्रांट रोड की वो *अल्हड़ और खतरनाक* रात।)

अध्याय 46
"अंतिम इच्छा - डांस बार"

रात का वक्त — *गौरव का घर।*

चारों दोस्त अब उस महीने भर की तसल्ली से बाहर आ चुके थे —

ब्याज चुकाया, किस्तें भरीं, और अब बारी थी — दिल बहलाने की।

सूरज (लेट कर हाथ फैलाए हुए):

"यार एक महीना हो गया,

थोड़ी मस्ती-वस्ती हो जाए तो क्या हर्ज है?"

राज (हँसते हुए):

"क्यों बे, पिछली मस्ती से पेट नहीं भरा?

अब कहाँ जाना है, किसी शांति निकेतन?" प्यारे कमीनों नौकरी करनी है या नहीं ?

विजय (आँखों में चमक):

भाई नौकरी तो मिल ही जाएगी, मगर उसके बाद ये वाली आज़ादी फिर कभी नहीं मिलेगी "भाई… डांस बार चलें?

मुंबई में बस यही एक जगह रह गई है,

जहाँ हम चारों की एंट्री नहीं हुई।"

राज:

"भाई… मेरा तो कोई जानकार नहीं है वहाँ,

तू देख ले।"

विजय:

"एक दोस्त है मेरा,

उसका दोस्त शायद जानता हो,

मुंबई की हर गली से वाकिफ है।

कॉल करता हूँ — वाया वाया ही सही,

लोकेशन तो मिल ही जाएगी।"

राज (चुटकी लेते हुए):

"भाई हम रेलवे से भारत दर्शन को नहीं निकले,

जो 'वाया-वाया' होकर जाएँगे।

सीधा बोल — अड्डा कहाँ है?"

(तभी गौरव वॉशरूम से बाहर आता है, बालों में पानी टपक रहा होता है)

गौरव:

"क्या प्लानिंग चल रही है भई?"

राज:

"डांस बार जाना है,

आख़िरी इच्छा है भाई।

तुम्हें कुछ पता है?"

गौरव (कंधे उचकाते हुए):

"ठीक है, दस बजे तक रेडी हो जाना।

हम सब **ग्रांट रोड** जाने वाले हैं।"

राज (हड़बड़ाते हुए):

"गौरव भाई... लास्ट टाइम क्या हुआ था,

याद है न? फिर भी वहीं जाना है?"

गौरव (सीरियस टोन में... फिर हल्की मुस्कान):

"भाई… मज़ाक मत करो,

वो अड्डा मेरा नहीं था।"

(सब एक साथ हँस पड़ते हैं)

मुंबई की एक और रात —

फिर से अंधेरी से **ग्रांट रोड** की ओर

कुछ खोने नहीं...

बस **थोड़ा जीने** की उम्मीद में।

अध्याय 47
"डांस बार और ईमानदार से डर"

मुंबई की एक और रात — ग्रांट रोड का डांस बार।

जैसे ही चारों दोस्त अंदर दाखिल होते हैं,

आँखें खुली की खुली रह जाती हैं।

सुनहरी लाइट्स, सजी-धजी लड़कियाँ, हाई वोल्टेज म्यूज़िक —

जिस मुंबई को अब तक बस परदे पर देखा था,

आज वो उनके सामने थी —

ज़िंदा, चमकती और खतरनाक।

राज (हैरानी से):

"वाह यार... क्या चीज़ है,

मुंबई के अंदर और कितना खज़ाना छुपा है!"

सूरज (हँसते हुए):

"भाई मैं तो हर हफ्ते यहीं आने की सेटिंग करूँगा।"

विजय (सावधानी से):

"संभलकर यार... ये शरीफों की जगह नहीं लगती।"

गौरव (थोड़ा अकड़ के):

"डोंट वरी... मैं हूँ ना।

आज की रात सिर्फ मज़े करो, बस मज़े।"

म्यूज़िक बढ़ता है,

डांस फ्लोर जल उठता है,

और चारों दोस्त भीड़ में घुल जाते हैं...

गाना खत्म ही हुआ था कि—

धड़धड़धड़!!

दरवाज़े खुलते हैं और पुलिस की टीम अंदर घुस आती है।

एक गोली चलती है... लोग चीखते हैं... बार में अफरातफरी मच जाती है।

पुलिस (गंभीर आवाज में):

"जो जहाँ है, वहीं रहे।

भागने की कोशिश मत करना।"

राज वहीं पास में खड़ा था, पुलिस की नज़र उसी पर पड़ी।

राज (घबराए हुए):

"सर हम पहली बार आए हैं,

हमें जाने दीजिए... हमें नहीं पता था कि यहाँ आना इतना रिस्की हो सकता है।"

पुलिस (हल्की मुस्कान के साथ):

"कोई बात नहीं...

फिर से आना, बार-बार आना,

बस हमें कुछ दिए बिना मत जाना।"

तभी एक गुंडा झपटता है पुलिस की तरफ।

लेकिन वो पुलिसवाला — बिना हिले —

गुंडे की गर्दन अपने कंधे से दबोच लेता है।

गुंडा (दम घुटती आवाज में):

“तेरे जैसे पुलिस वाले मेरे भाई के आगे-पीछे घूमते हैं।

पुलिस स्टेशन के अंदर जाते ही, अपुन बाहर!”

पुलिस (गंभीर और ठोस लहजा):

“पुलिसवालों को सिर्फ पकड़ने का नहीं...

कभी-कभी ठोकने का भी काम मिलता है।”

एक और गोली — गुंडे की सारी हवा बाज़ी वही पर ढेर हो जाती है।

राज (पुलिस की तरफ देखते हुए):

“ये तो बड़ा ही ईमानदार लग रहा है भाई...

लोग बुरी पुलिस से डरते हैं,

हम एक ईमानदार पुलिस वाले से डर रहे हैं।”

पुलिस बैग चेक करती है — उसमें 20,000 कैश।

राज (गिड़गिड़ाते हुए):

“सर... कुछ तो रहने दीजिए,

हमें घर भी जाना है।”

पुलिस (हँसते हुए):

“घर जाने के पैसे तो तुम्हारी जेब में भी होंगे,

शरीफज़ादों...”

(पुलिस पैसे लेकर बाहर निकल जाती है)

चारों दोस्त **उदासी और झल्लाहट** में एक-दूसरे की शक्ल देखने लगते हैं।

राज (विजय और सूरज से):

"क्यों भाई? तेरी तो मस्त वाली सेटिंग थी।"

गौरव (थोड़े झेंपते हुए):

"भाई डांस बार वालों से सेटिंग थी...

पुलिस वालों से नहीं!"

(एक पल सन्नाटा — फिर सब ठहाका मार कर हँस पड़ते हैं)

सूरज:

"ठीक है ठीक है...

पर मज़ा बहुत आया यार!"

और जैसे ही सुबह की ट्रेन की सीटी सुनाई देती है,

चारों दोस्त ग्रांट रोड स्टेशन की ओर निकल पड़ते हैं —

थोड़े ठगे हुए... पर दिल से जिए हुए।

अध्याय 48
"रात, एक्सीडेंट और वक़्त की दौड़"

रात के करीब 1:30 बजे।

मुंबई की सोई हुई गलियों में कहीं एक दरवाज़ा बार-बार बजता है।

ट्रिन ट्रिन… ट्रिन ट्रिन…

राज की आँख खुलती है।

नींद से भरे कदमों के साथ दरवाज़ा खोलता है — सामने शालिनी खड़ी है।

उसकी आँखें लाल हैं, चेहरा आँसुओं से भीगा हुआ।

राज (चौंकते हुए):

"शालिनी? ये क्या हुआ? तुम रो क्यों रही हो?"

शालिनी (हिचकियों में):

"राज… मुझे अभी हॉस्पिटल से कॉल आया है…

मम्मी और छोटा भाई… दोनों का एक्सीडेंट हो गया है…

वो Bandra गए थे किसी रिश्तेदार से मिलने… ऑटो पलट गया…"

राज का चेहरा तुरंत गंभीर हो जाता है।

वो बाकी दोस्तों को आवाज़ देता है — सूरज, विजय, गौरव।

राज:

"जल्दी उठो सब… हॉस्पिटल चलना है…

शालिनी की फैमिली का एक्सीडेंट हो गया है।"

बिना कोई सवाल-जवाब किए, सब तैयार हो जाते हैं।

रात की सड़कें, तेज़ बाइक की आवाज़ें और दिल में दौड़ती चिंता…

कुछ ही मिनटों में वे हॉस्पिटल पहुँचते हैं।

राज सीधा डॉक्टर के पास जाता है।

राज:

“डॉक्टर साहब, कैसे हैं सभी?”

डॉक्टर (थोड़े चिंतित लहजे में):

“शालिनी की मम्मी को हल्की चोट आई है।

ऑटो वाला भी ठीक है, मगर बच्चा…

उसकी हालत बहुत नाज़ुक है।

इंटरनल ब्लीडिंग है — तुरंत ऑपरेशन करना होगा।

कम से कम 20 लाख का खर्चा आएगा।

5 लाख अभी जमा कराइए।”

पूरा ग्रुप एक-दूसरे की शक्ल देखने लगता है —

कुछ ही हफ्ते पहले लिया गया कर्ज़…

प्लान की हुई मस्ती…

और अब अचानक ज़िन्दगी का असली इम्तिहान।

शालिनी (हाथ जोड़ती है, आँखों से आँसू बहते जा रहे):

“प्लीज़… अब सिर्फ आप ही लोग हो…

मेरे भाई को बचा सकते हो…”

राज (गंभीरता से सूरज और विजय की तरफ देखकर):

“तुम दोनों फौरन घर जाओ… सारा पैसा ले आओ।

हम पूरी रकम देंगे।”

राज डॉक्टर की तरफ बढ़ता है।

राज (साहस से):

“डॉक्टर साहब… एक घंटे में पैसे मिल जाएंगे।

आप ऑपरेशन शुरू कीजिए।”

डॉक्टर (सिर हिलाता है):

“ठीक है… हम तैयारी शुरू करते हैं।”

ऑपरेशन थिएटर की लाल बत्ती जल जाती है।

हॉल में सन्नाटा पसरा है।

शालिनी एक कोने में बैठी है — आँखें मूँदकर प्रार्थना कर रही है।

राज उसका हाथ पकड़ता है…

राज (धीरे से):

“कुछ नहीं होगा… तुम्हारा भाई बिल्कुल ठीक हो जाएगा।”

विजय और सूरज जल्द ही बैग लेकर लौटते हैं —

पैसा काउंटर पर जमा होता है।

अब सबकी निगाहें उस बंद दरवाज़े पर टिक जाती हैं,

जिसके अंदर ज़िन्दगी और मौत की लड़ाई जारी है।

अध्याय 49
“सुबह लेकर आई राहत भाई सांस”

सुबह की पहली किरणें हॉस्पिटल की खिड़कियों से अंदर झाँक रही थीं।

ऑपरेशन थिएटर के बाहर बैठे सबकी आँखें लाल थीं — जागे हुए,

डरे हुए, पर उम्मीद से भरे हुए।

डॉक्टर थिएटर से बाहर आता है।

डॉक्टर (थककर लेकिन मुस्कराते हुए):

"बच्चा अब खतरे से बाहर है।

सुबह तक होश में आ जाएगा,

फिर आप लोग मिल सकते हैं।"

राज, सूरज, विजय, गौरव — सभी हाथ जोड़कर डॉक्टर को धन्यवाद देते हैं।

राज:

"बहुत-बहुत शुक्रिया, सर।"

सुबह की रौशनी में बच्चों के वार्ड का दरवाज़ा खुलता है।

चिंटू की आँखें खुलती हैं।

वो धीरे से उठता है, और मासूमियत से पूछता है…

चिंटू:

"शालिनी दीदी… मेरा वीडियो गेम कहाँ है?

और मम्मा?"

शालिनी (आँखों में आंसू और होठों पर मुस्कान):

"घर चलो… वहां तुम्हारे लिए बहुत सारे नए खिलौने हैं…

और मम्मा बाहर तुम्हारे लिए खाना ले रही हैं।"

वो झुककर उसके हाथों को चूमती है।

हर किसी की आँखें नम हैं, मगर दिल राहत से भर चुका है।

विजय (राज को कोनी मारते हुए):

"साले… ये डायलॉग तो हम बोलने वाले थे।

'हम पूरी मदद करेंगे' वाला इम्प्रैशन हमने भी सेट किया था।"

सूरज (हँसते हुए):

"हाँ भाई… तुम्हारा तो लव एंगल फुल सेट हो गया।"

गौरव (राज के कान में फुसफुसाते हुए):

"साले… इतने साल से वो हमारे साथ रह रही थी,

हमारे गले कभी नहीं लगी…

और तेरे गले लग गई।

सिम्मी से शालिनी तक — ये 'S' शायद तेरा कभी भी पीछा नहीं छोड़ने वाला भाई

राज मुस्कराता है, लेकिन कुछ कह नहीं पाता।

शालिनी धीरे से राज की तरफ बढ़ती है,

और उसे एक टाइट हग दे देती है।

उसके आँसू अब राहत के आँसू हैं।

सभी दोस्त तालियाँ बजाते हैं और एक साथ चिल्लाते हैं —

"मुबारक हो भाई!!"

हॉल में ठहाके गूंजते हैं।

कभी अजनबी थी ये शालिनी,

आज सबकी अपनी बन चुकी थी।

अध्याय 50
“पैसों की परछाई” कब तक साथ देगी

कुछ दिन बाद।

मुंबई की एक पुरानी बार।

नीली रौशनी में सजी टेबल पर रखे हुए खाली ग्लास,

जैसे वक्त की रफ्तार को दर्शा रहे हों।

सभी दोस्त कुर्सियों पर टिके हुए हैं — आँखों में सवाल, हाथों में शराब।

राज गहरी साँस लेता है।

राज (थके हुए अंदाज़ में):

"यार… जॉब का तो कोई अता-पता नहीं…

और पैसे भी…"

विजय (बीच में टोकते हुए, थोड़ा चिढ़ते हुए):

"पैसे ‘होने वाले’ नहीं हैं भाई…

सीधे-सीधे बोल — *‘पैसे ख़त्म हो गए हैं।’*"

सूरज (सच्चाई की चुभन लिए):

"सब कुछ तो बच्चे की दवा में लग गया भाई…

सोचा भी नहीं था ऐसे होगा।"

राज (धीरे से मुस्कराकर):

"तो क्या करते सूरज?

किसी की जान बचाना थी —

और उस वक़्त हम ही थे जिनके पास जवाब था।"

(सभी थोड़ी देर के लिए चुप हो जाते हैं।

ग्लासों से बर्फ की आवाज़ गूंजती है — जैसे सन्नाटे में कुछ कह रही हो।)

गौरव (थोड़ी उम्मीद से):

"कोई ना कोई आइडिया निकलेगा भाई…

हम चार हैं… और चार दिमाग,

कुछ ना कुछ तो करेंगे।"

(कोई जवाब नहीं देता… लेकिन सबकी आँखों में एक भरोसा झलकता है।

शायद थक गए हैं, लेकिन हारे नहीं हैं।)

(फ्रेम स्लो मोशन में जाता है —

चारों उठते हैं,

बिल पे पैसे रखते हैं,

थोड़ा लड़खड़ाते हुए बार से बाहर निकलते हैं।

बाहर की हवा में नमी है, पर उम्मीद बाकी है। और राज आसमान की और देखता है)

अध्याय 51

नेताओं की फ़ोटो – बेफ़िक्र होकर करे जनता की फ़िक्र

दोपहर का वक्त।

धूप में पसीना और भीड़ ही भीड़।

आज़ाद मैदान में आज एक बड़ी राजनीतिक रैली है।

हर कोने से नारे गूंज रहे हैं।

डॉक्टर फोटो।

कंधे पर लटकता कैमरा, आँखों में पैनी नज़र।

डॉक्टर फोटो (हल्की मुस्कान के साथ):

"चलो, आज नेताओ की फोटो ही ले ली जाए।

बेचारे, कितनी फिक्र करते हैं हमारे लिए।

हम जैसे आम आदमी की तो जान भी ले लें,

तो भी कहते हैं — ये तो सिस्टम है।"

(वो कैमरा उठाता है और क्लिक करता है।

कभी स्टेज की तरफ, कभी भीड़ की तरफ,

कभी पास में खड़े पुलिस वालों पर।

हर एक तस्वीर में कोई ना कोई कहानी कैद होती है।)

(एक बच्चे की फोटो लेता है जो झंडा लहराते हुए उछल रहा है —

फिर एक नेताजी की फोटो, जो माइक पर चिल्ला रहे हैं

"हम लाएंगे परिवर्तन!")

डॉक्टर फोटो (धीरे से बुदबुदाते हुए):

"परिवर्तन तो आएगा... पर पहले तस्वीर बदलनी होगी।"

(डॉक्टर कैमरे की स्क्रीन देखता है, फिर कैमरा बैग में रखता है,

और मैदान के कोने से निकल जाता है।

क्लिक की आवाजें अब नारों में दब जाती हैं।)

अध्याय 52
“कर्ज़ की परछाई”

दोपहर का सन्नाटा।

गौरव का घर।

टीवी की हल्की आवाज़ और सब सोए हुए।

राज मोबाइल पर कॉल उठाता है।

📞 *फोन स्क्रीन पर अनजान नंबर फ्लैश करता है।*

राज (नींद से उठते हुए):

"हेल्लो... कौन?"

भास्कर (साफ़ और सख्त आवाज़ में):

"राज?"

राज (चौंक कर):

"हाँ बोलिए, कौन?"

भास्कर:

"मैं भास्कर बोल रहा हूँ।

आने वाली दस तारीख को पैसे रेडी रखना...

याद है ना?"

राज (झल्लाते हुए):

"सर हर बार किसी नए नंबर से कॉल करते हो,

कुछ समझ नहीं आता।

हाँ याद है... आपको पैसे मिल जाएंगे।"

📞 *राज बिना कुछ और सुने कॉल काट देता है।*

(राज एक गहरी सांस लेता है,

पानी का ग्लास उठाता है,

और खिड़की के बाहर देखता है —

जैसे सोच रहा हो कि बाहर जितनी धूप है,

उससे कहीं ज्यादा गर्मी उसके हालात में है।

अध्याय 53
“काजू-बादाम वाला रिश्ता”

गौरव का घर।

दिन का समय।

डोर बेल बजती है। विजय दरवाज़ा खोलता है।

सामने शालिनी खड़ी होती है, हाथ में स्टील का डब्बा।

विजय (मुस्कुराते हुए):

"हाँ शालिनी जी, कहिए क्या बात है? कैसे हैं आप?"

शालिनी (शर्मीले लेकिन अपनेपन से):

"राज घर पर है?

मैंने तुम सब के लिए हलवा बनाया है।"

विजय (आँख मारते हुए, हल्के मजाक में):

"रियली? *हम सब* के लिए?"

(शालिनी हँसती है, डब्बा पकड़ाती है और बिना कुछ कहे चली जाती है।)

(विजय दरवाज़ा बंद करता है, फिर ज़ोर से चिल्लाता है):

"भाइयो... शालिनी जी ने *राज के लिए*

काजू-बादाम वाला हलवा भेजा है!"

(घर के अंदर से ठहाके गूंजते हैं।

गौरव, सूरज और राज कमरे से बाहर आते हैं,

राज हल्के से मुस्कुराता है लेकिन कुछ कहता नहीं।

सिर्फ डब्बे को देखकर गालों पर हल्की लालिमा आ जाती है।)

(गौरव धीरे से कान में कहता है):

"भाई... हलवा ही नहीं, दिल भी पिघल रहा है लगता है।"

अध्याय 54
“वापसी उसी मोड़ पर”

गौरव का घर।

दोपहर का वक्त।

राज सबको आवाज़ देता है, सब धीरे-धीरे कमरे में इकट्ठा होते हैं।

राज (आवाज़ लगाते हुए):

"सुनो बे… भास्कर का कॉल आया था अभी।

कह रहा है — दस तारीख को पैसे चाहिए ही चाहिए।"

(सभी दोस्त एक-दूसरे को देख कर चुप हो जाते हैं।)

सूरज (हिचकिचाते हुए):

"पैसे तो अपने पास हैं नहीं।

क्यों ना… एक बार *वहाँ* जाकर उससे बात कर लेते हैं?"

गौरव (गंभीर लहजे में):

"भाई… वहां जाना अब खतरे से खाली नहीं है।

भूल गया क्या कितनी खतरनाक जगह लग रही थी, हो सकता है , ये जानकार हमारे पास पैसा नहीं है वही हमें भी बैठा ले, हर बार किस्मत साथ नहीं देती।"

राज (ठंडी साँस लेते हुए):

"जाना तो पड़ेगा ही गौरव…

हमारे पास कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं है।"

(सभी दोस्त चुप हो जाते हैं।

कमरे में एक भारी सन्नाटा फैल जाता है।

बैकग्राउंड में घड़ी की टिक-टिक सुनाई देती है।

राज धीरे-धीरे दीवार की तरफ देखता है — जैसे सोच रहा हो,

'ये कैसी ज़िन्दगी है भाई… हर मोड़ पे उधारी खड़ी मिलती है।')

अध्याय 55
“कॉल जो नहीं लगा”
क्या मामला है

सुबह से शाम , शाम से रात हो जाती है ।

राज अपने फोन पर भास्कर का नंबर डायल कर रहा है।

बार-बार कॉल कट जा रही है।

राज (फोन पर):

"साला… सुबह से ट्राय कर रहा हूँ।

ना फोन लग रहा, ना मैसेज जा रहा है ।"

(किचन से आती चाय की खुशबू में भी राज बेचैनी ढूंढ रहा है।)

सूरज (कुर्सी पर बैठते हुए विजय से):

"भाई मेरी तो EMI बाउंस हो गई।

किस्मत का ऐसा तमाचा पड़ा है कि अब तो आवाज़ भी नहीं आ रही।"

विजय (थकी हुई मुस्कान के साथ):

"मेरी भी हो गई।

अब तो बैंक वाले भी गाली देने लगे हैं नाम सुनते ही।"

(तभी विजय, राज को देखता है — जो अब भी फोन हाथ में लिए उदास खड़ा है)

विजय (राज से):

"तुझे क्या हुआ बे? इतना टेंशन क्यूँ ले रहा है?"

राज (धीमे स्वर में):

"सुबह से भास्कर को कॉल कर रहा हूँ।

ना कॉल लग रहा है… ना कोई जवाब।

डर लग रहा है… कहीं कुछ उल्टा-पुल्टा ना हो गया हो।"

विजय (कंधा थपथपाते हुए):

"छोड़, कल देखेंगे। चाय पी और ताज़ा हो ले ।

तेरा सोच-सोच के मोबाइल भी थक गया होगा।"

गौरव (दरवाजे की चौखट से टेक लगाकर):

"कर भला तो हो भला…

जो किया है, वो सामने आएगा।

टेंशन मत लो… सुबह नई खबर लाएगी।"

(धीरे-धीरे लाइट डिम होती है।

सभी दोस्त अपने-अपने कोने में सोने चले जाते हैं।

राज अकेला सोने से पहले एक बार और फोन चेक करता है —

“No Service” लिखा हुआ चमक रहा होता है।

वो सिरहाने फोन रखकर करवट बदल लेता है।)

अध्याय 56
“तालों के पीछे दोस्ती”

गौरव का घर

(सुबह-सुबह डोर बेल की आवाज़।

गौरव नींद में उठते हुए दरवाज़ा खोलता है।)

गौरव:

"हाँ भाई रुको... कौन है?"

(सामने दो आदमी खड़े हैं — चेहरे पर सख्ती और कपड़ों में पहचान का टैग नहीं)

बैंक वाले 1:

"हम बैंक से आए हैं। मुझे सूरज से मिलना है।"

बैंक वाले 2:

"और मुझे विजय से। EMI बाउंस हुई है।"

गौरव (थोड़ी झेंप के साथ):

"ओह... ठीक है सर, आप प्लीज़ पाँच मिनट रुकिए।

मैं दोनों को बुलाता हूँ।"

(गौरव अंदर जाता है और सूरज व विजय को उठाता है।)

सूरज:

"सर, कल तक पैसे ऑनलाइन ट्रांसफर हो जाएंगे।

थोड़ा टाइम दीजिए बस।"

विजय:

"सर, आप चाहें तो मेरा नंबर ले लीजिए, या अपना दे दीजिए,

पैमेंट होते ही मैं खुद कॉल कर लूंगा।"

(दोनों बैंक वाले थोड़ी नाराज़गी लेकिन समझदारी के साथ निकल जाते हैं।)

दोहपर का समय - गौरव का घर

गौरव (मूड हल्का करने की कोशिश में):

"चलो यार, कुछ खा-पी लेते हैं।

काफी दिन हो गए बाहर घूमे हुए…

चलो पार्क चलते हैं।"

(सब दोस्त तैयार होकर घर से बाहर निकल जाते हैं)

पार्क - शाम का समय

(सभी दोस्त बेंच पर बैठे हुए हैं, चाय पीते हुए पुरानी बातों पर हँसी-मज़ाक कर रहे हैं।

फ्रेम में पीछे से एक कॉल आता है — राज के फोन पर "शालिनी कॉलिंग" फ्लैश होता है)

राज (फोन उठाते हुए):

"हेलो शालिनी, सब ठीक?"

शालिनी (घबराई हुई आवाज़ में):

"राज! तुम सब कहाँ हो?

तुम्हारे घर तीन-चार अजीब से आदमी आए थे।

शक्ल से तो गुंडे लग रहे थे…"

राज (हैरानी से):

"गुंडे? क्या कर रहे थे वो?"

शालिनी:

"उन्होंने घर का ताला तोड़कर अपना ताला लगा दिया।

मुझे कुछ समझ नहीं आया… तुमने क्या उनसे पैसे लिए थे?"

राज (थोड़ी देर चुप रहकर):

"हाँ… कुछ पुराना लोन है।

मैं तुझसे मिलकर सब बताता हूँ।

तू दरवाज़ा मत खोलना किसी के लिए।

हम देर रात तक लौट आएंगे।"

(राज फोन काटता है, बाकी दोस्तों की तरफ देखता है)

राज (धीमे लेकिन पक्का स्वर):

"वक़्त आ गया है… अब हमें फेस करना पड़ेगा।"

(शाम अब हलके हलके अँधेरे का रूप धारण करने में लग जाती है , और नीचे बैठे चार दोस्त सोच में डूबे हैं)

अध्याय 57

“छत कहीं और सही, साथ अपना हो”

पार्क – रात का समय

(चारों दोस्त पार्क की एक बेंच पर बैठे हैं, आसपास अंधेरा और सन्नाटा है।)

राज (धीरे-धीरे):

"अब हम घर भी नहीं जा सकते…"

विजय (थकी आवाज़ में):

"अब क्या करें… कहाँ जाएँ?"

सूरज:

"राज भाई, कुछ तो जुगाड़ निकालो यार…"

गौरव (सिर झुकाते हुए):

"एक के बाद एक… मुसीबतें रुक ही नहीं रही…"

(राज जेब से फोन निकालता है और शालिनी को कॉल करता है)

शालिनी (फोन उठाते ही):

"हाँ राज, क्या हुआ? तुम घर पर कब तक आओगे?"

राज (संकोच में):

"वही सोच रहा था… जब तक हम कोई और इंतजाम नहीं कर पाते,

क्या हम सिर्फ रात को… कुछ दिन… तुम्हारे घर रुक सकते हैं?"

(शालिनी बिना रुके बोलती है)

शालिनी:

"ये भी कोई पूछने की बात है?

मैंने तुम सब के लिए पहले से तैयारी शुरू कर दी है।

समय से आ जाना — और हाँ, खाना भी यहीं खाओ।"

(राज मुस्कुराते हुए फोन काटता है)

विजय:

"क्या हुआ? कहाँ रुकेंगे अब?"

राज (हल्की राहत की सांस के साथ):

"सब सेट है… शालिनी ने बोला, हम सब उसके घर रुक सकते हैं।

खाना भी वहीं मिलेगा।"

(चारों दोस्त एक-दूसरे की तरफ देखते हैं और हल्का मुस्कुरा उठते हैं)

गौरव (आँखें बंद करके):

"कभी-कभी किसी की मुस्कान ही पूरी दुनिया लगती है…"

सूरज:

"और उस दुनिया में हमारे लिए रूम भी है!"

(सब हँसते हैं और नीला आसमान जो अब रात को तारों में जगमगा रहा है, चारों दोस्तों की परछाइयाँ ज़मीन पर फैल जाती हैं)

अध्याय 58
“सांसे अभी बाकी हैं”

शालिनी के घर पर सभी दोस्त है

(सभी दोस्त डाइनिंग टेबल पर बैठे हैं। चाय और नाश्ता चल रहा है। माहौल थोड़ी देर को शांत है)

राज (हल्की मुस्कान के साथ):

"यार ऐसा लग रहा है जैसे सब कुछ नार्मल है…"

(अचानक नीचे से जोर की आवाज़ आती है — लोगों के बोलने और बहस करने की)

शालिनी (चौंककर):

"ये शोर कैसा? लगता है नीचे वाले फ्लोर से आ रही है, मैं देखती हूँ…"

राज (झट से बोलता है):

"अगर कोई हमसे मिलने आये तो मना कर देना…"

(शालिनी नीचे जाती है, वहाँ 4-5 आदमी खड़े हैं — कुछ कागज़, फाइलें लिए हुए)

शालिनी (शांत मगर सख्त लहजे में):

"हैलो, आप लोग कौन हैं? किससे मिलना है?"

बैंक वाले (लगभग एक साथ बोलते हैं):

"राज, सूरज और विजय से। उनके नंबर बंद हैं,

ना कॉल उठाते हैं ना जवाब देते हैं।"

शालिनी (थोड़ा सोचकर):

"ये लोग काफी दिनों से घर नहीं आए हैं…

अगर आए तो मैं आपका मैसेज दे दूंगी।"

(बैंक वाले आपस में कुछ कहते हैं और फिर वहां से निकल जाते हैं)

(शालिनी ऊपर आती है, दोस्त उसे उत्सुकता से देखते हैं)

विजय:

"क्या हुआ? कौन था नीचे?"

शालिनी:

"बैंक से लोग थे… तुम तीनों को ढूंढ रहे थे।"

गौरव (साँस छोड़ते हुए):

"और तुमने क्या कहा?"

शालिनी (सीधे):

"बोल दिया — कई दिनों से नहीं आए…

अगर आए तो खबर दे दूंगी। बस, चले गए।"

राज (थोड़ा मुस्कुराते हुए, हल्के मज़ाक में):

"सुबह ही तो इन्हीं से टाइम लिया था…

पता नहीं कौन से वाले थे…

पर थैंक यू जी — बड़ी समझदार हो गई हो!"

(सभी हल्के से मुस्कुराते हैं, लेकिन माहौल में टेंशन अब भी बनी रहती है)

राज (धीरे से):

"लगता है अब यहाँ रुकना सही नहीं होगा…" किसी ने भी बाहर आते जाते देख लिया तो अच्छा नहीं होगा , बैंक वालों से तो एक बार निपट सकते थे, मगर ये सेल गुंडे , ये ज़रूर बयाज़ वाले होंगे , कमीनों ने अपना ताला तोड़कर खुद का लगा दिया।

विजय:

"तो क्या करें?"

गौरव:

"किसी अपने से मदद मांगनी पड़ेगी…"

(सभी एक नजर एक-दूसरे पर डालते हैं और तय कर लेते हैं — आज शाम को निकलना ही होगा)

(सभी दोस्त रात ढलते ही बैग और हल्की-फुल्की चीज़ें लेकर घर से बाहर निकलते हैं — एक और अनिश्चित सफर की शुरुआत)

अध्याय 59
"एक रात की छांव"
अपने दोस्त अमर के घर

(राज दरवाजे की बेल बजाता है। थोड़ी देर में दरवाज़ा खुलता है। सामने अमर है — पुराना दोस्त, जो राज को देखकर चौंकता और खुश होता है)

अमर (हैरानी और खुशी के साथ):

"अरे राज भाई! कैसे हो? अंदर आओ... सब अंदर आओ। क्या चल रहा है आजकल? कोई जॉब वगैरह लगी?"

(सभी दोस्त थके-थके अंदर आते हैं)

(सोफे पर बैठते हुए, राज गहरी सांस लेता है)

राज (थोड़ा थके स्वर में):

"नहीं भाई, उल्टा हालात और खराब हो गए हैं।

जॉब जाने के बाद से EMI वगैरह सब मिस हो रही है। खर्चा भी बुरी तरह गड़बड़ा गया है।"

अमर (थोड़ा गंभीर होकर):

"समझ सकता हूँ... मैं भी TRY कर रहा हूँ यार।

तू टेंशन मत ले — कुछ ना कुछ तो होगा ही।"

(थोड़ी देर की चुप्पी के बाद)

अमर (थोड़ा झिझकते हुए):

"भाई एक बात कहनी थी —

मैं तुम सबको सिर्फ आज रात ही रख सकता हूँ।

कल मेरे मम्मी-पापा आने वाले हैं गांव से, तो थोड़ा मुश्किल हो जाएगा।

सॉरी भाई… बुरा मत मानना।"

राज (हलकी मुस्कान के साथ):

"अरे पागल है क्या? इतना भी बहुत है।

कल तक हम कुछ ना कुछ इंतजाम कर लेंगे।"

(विजय, सूरज और गौरव चुपचाप एक-दूसरे को देखते हैं — थके हुए लेकिन राज की पॉज़िटिव बात से थोड़ी राहत मिलती है)

(सभी दोस्त अपना सामान एक कोने में रखते हैं और सोने की तैयारी करते हैं — ज़मीन पर चादर बिछाते हुए)

(सभी धीरे-धीरे लेटते हैं, कुछ लोग छत की ओर देखते हैं, कुछ एक-दूसरे से हल्की बात कर रहे हैं) नींद ना आने के बाद भी आँखों का भारी नींद पर जोरदार प्रहार करता है और का आँख लगती है)

अध्याय 60
"रिंगिंग फोन, टूटती उम्मीदें"

(धूप की हल्की किरणें खिड़की से कमरे में आ रही हैं। सभी दोस्त ज़मीन पर बिछे गद्दों पर सो रहे हैं। तभी एक के बाद एक मोबाइल की रिंगटोन गूंजती है)

राज (नींद में ही मोबाइल उठाते हुए):

"अबे किसका कॉल है... ओह ये फिर बैंक वाले।

कसम से, जीना हराम कर दिया है इन लोगों ने।

और ये? बयाज़ वाले का मिस कॉल… कमाल है!"

(उधर विजय, सूरज और गौरव भी उठते हैं — सभी के मोबाइल बज रहे हैं या मिस कॉल दिखा रहे हैं)

विजय (मोबाइल स्क्रीन देखकर):

"भाई इधर भी बैंक वालों ने आंधी मचा रखी है।"

सूरज (चिढ़ते हुए):

"अबे ये फिर कॉल कर रहा है... क्या बोलूं अब इसे?"

राज (कड़क आवाज में):

"किसी का भी कॉल अटेंड मत करो।

पहले दिमाग ठंडा करो, फिर सोचेंगे।"

गौरव (थोड़ा मासूमियत से):

"भाई मुझे तो भूख लगी है…"

(पीछे से अमर आवाज लगाता है, जो किचन की तरफ बढ़ रहा है)

अमर (मुस्कुराते हुए):

"डोंट वरी गौरव भाई, मैं कुछ खाने के लिए ले आता हूँ।

तुम लोग रिलैक्स करो।"

(अमर बाहर चला जाता है। सभी दोस्त आपस में धीरे-धीरे बातचीत करते हैं)

राज (थोड़ा थके हुए लहजे में):

"अब तो इतने पैसे भी नहीं बचे कि गेस्ट हाउस में एक महीना काट सकें…"

(सभी चुप हो जाते हैं। सूरज की आंखों में टेंशन साफ़ दिख रही है — वो अपना चेहरा छुपा लेता है, धीरे-धीरे सब बैग पैक कर रहे हैं, राज खामोश बैठा है। सभी को अब यहां से भी निकलना है)

अध्याय 61
“पूरा मुंबई बेरोज़गारी ने घुमा दिया”

(पांच दिन बीत चुके हैं। मुंबई की अलग-अलग गलियों में दोस्तों के घरों में सहारा ढूँढते-ढूँढते अब सब थक चुके हैं। आज सभी गौरव के किसी पुराने दोस्त के घर टिके हैं। सब एक कमरे में बैठे हैं – हल्की बातें हो रही हैं, मगर सूरज एक कोने में चुप बैठा है।)

राज (सूरज को देखते हुए):

"क्या हुआ सूरज? इतना गुमसुम क्यों है?

देख यार, सब सही हो जाएगा…

हम साथ हैं, मिलकर रास्ता निकाल ही लेंगे।"

सूरज (धीरे से मुस्कुराने की कोशिश करता है):

"बस ऐसे ही… सोच रहा हूँ…

क्या सोचा था, और क्या हो गया।

कितने सपने लेकर हम सब इस शहर में आए थे।

अब लगता है, जैसे वो सपने भी किसी और के हो गए हैं।"

(कमरे में एक पल को खामोशी छा जाती है। सभी दोस्तों की आँखों में भी वही थकान और अधूरी उम्मीद झलकती है)

राज (थोड़ा पास आकर, दोस्ताना अंदाज़ में):

"सही कहा तूने…

मगर सपनों को छोड़ देना, ये हम जैसे लोगों का स्टाइल नहीं है।

यही वक्त है जब हमें खुद पर भरोसा दिखाना है।

हमारा दिन भी आएगा यार।"

(सूरज अपनी नजरें नीचे झुका लेता है, और धीमे से बोलता है)

"मैं थोड़ी देर अकेला रहना चाहता हूँ… बस थोड़ा… खुद से मिलने के लिए।"

(राज सिर हिलाता है। सूरज उठकर बाहर चला जाता है – सूरज अँधेरी सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए सोच में डूबा है। शहर की हलचल दूर कहीं सुनाई देती है… मगर सूरज के चेहरे पर एक गहराई और चुप्पी छा जाती है)

अध्याय 61 A

साया बन गए दोस्त

(सूरज हमेशा के लिए अस्त)

राज

(परेशानी में)

"सूरज पता नहीं कहाँ चला गया, कॉल भी अटेंड नहीं कर रहा है..."

विजय

"यार उदास तो बहुत था... लेकिन बिना बताये चले जाना?"

(राज फिर से कॉल करता है – अचानक सूरज गलती से कॉल उठा लेता है।)

राज

"हेलो सूरज... सूरज!"

(कॉल कट)

गौरव

"क्या हुआ राज?"

राज

"बस एक सेकंड के लिए कॉल अटेंड हुआ... बैकग्राउंड में स्टेशन की अनाउंसमेंट थी... शायद अंधेरी स्टेशन है!"

(तभी विजय के मोबाइल में सूरज का मेसेज आता है – “अपना ख्याल रखना दोस्तों।”)

गौरव

(घबराकर)

"भाई... वो कुछ उल्टा-पुल्टा ना कर बैठे!"

(तीनों बिना देर किए ऑटो पकड़कर अंधेरी स्टेशन की तरफ भागते हैं)

(तीनों स्टेशन पर दौड़ते हैं। हर प्लेटफॉर्म, हर कोना छान रहे हैं। राज कॉल करता जा रहा है, लेकिन फोन बंद जा रहा है। शोरगुल में एक आवाज़ आती है –)

पब्लिक (चिल्लाते हुए):

"गया गया! अब नहीं बचेगा!!"

(तीनों दोस्त चौक जाते हैं।)

विजय

"भाई कुछ गड़बड़ है, जल्दी चलो!"

(तीनों ब्रिज से प्लेटफॉर्म की ओर भागते हैं। ट्रेन स्टेशन से धीरे धीरे गुजर चुकी होती है। भीड़ एक तरफ जमा है, मानो पब्लिक का शोर सुन दोस्तों की सांस ही अटक गई हो

तभी सभी दोस्तों की नज़र पटरी पर जाती है

(एक कुत्ते का पिल्ला बाल-बाल बचता है।)

(राज की नज़र एक कोने में जाती है – सूरज अकेला बैठा है, फूट-फूट कर रो रहा है।)

राज (भागते हुए, चिल्लाकर)

"साले! कमीने!! कॉल क्यों नहीं उठा रहा था?? पागल हो गया है क्या?"

हम अभी सब एक साथ है, सही सलामत और जिन्दा

(सभी दोस्त दौड़कर सूरज के पास आते है और सूरज को गालियाँ देते हुए गले लगाते हैं। सूरज और ज़ोर से रोने लगता है।)

सूरज (आंसुओं में डूबा हुआ):

"अब सब बर्बाद हो चुका है यार… सब…"

राज

(उसे कसकर गले लगाता है)

"भाई, सुन…

मरेंगे नहीं हम…

मरेंगी हमारी परेशानिया… जिन्दगी नहीं!

हम सब साथ हैं – और जब साथ हैं, तो रास्ता भी ज़रूर निकलेगा!"

(तीनों दोस्त उसे पकड़े रहते हैं। सूरज थोड़ा मुस्कराता है, और आंसू पोंछते हुए कहता है –)

सूरज (आंखें साफ करते हुए):

"अब हम नहीं मरेंगे…

मरेंगी हमारी सारी परेशानियाँ… सही कहाँ राज भाई

राज :

जिन्दगी उलझी है…

हमारा दिमाग नहीं।"

(चारों दोस्त प्लेटफॉर्म पर बैठते हैं – थके, टूटे हुए… लेकिन अब पहले से ज़्यादा जुड़े हुए। ट्रेन दूर जाती हुई, और धुंदली होती जाती है, और सभी दोस्तों के चेहरे नै उमीदो के साथ एक दम साफ़ साफ़ जमागाने लगते है, और राज के

दिमाग में अचानक एक ऑफिस की घटना दिमाग में घूम जाती है जो उसे अन्दर तक हिला डालती है)

INTERVAL

अध्याय 62
विलन से हीरो – सपना या हक़ीकत

(एक कोने में सभी दोस्त उदास, थके, चुपचाप बैठे हैं। सूरज का चेहरा अभी भी उतरा हुआ है। एक चुप्पी है, जो डर और हिम्मत के बीच फँसी है। तभी राज उठता है, और हवा में ताकते हुए बोलता है)

राज

(धीरे से, मगर ठहराव के साथ)

"यार... अगर हम कुछ ऐसा करें… जिससे हम सिर्फ अपने लिए नहीं, किसी और के लिए भी कुछ बन जाएं?"

(सभी दोस्त उसे देखने लगते हैं, राज अब जोश में आता है)

(सभी दोस्त ऐसा क्या है , जिससे हम सभी की सारी परेशानियों से मुक्ति मिल जाये)

राज

ऑफिस में काम के दोरान एक बार एक औरत अपने गुमशुदा बच्चे का विज्ञापन देने आई थी , बड़ी परेशां थी मानो कुछ मिनटों में ही उसका दम निकल जाये, पूरा स्टाफ उसे देख रहा था , और रोते रोते सिर्फ एक ही लाइन , मेरा सब कुछ ले लो , मगर मेरा बच्चा ढूंड कर दे दो , मैं ये बात आज तक नहीं भूल पाया हु

"सुनो! मेरे दिमाग में एक आईडिया है…

क्यों ना हम मुंबई में लापता हुए बच्चों को ढूंढने का काम करें?

समाज की नज़रों में हम अभी जीरो हैं, आगे चलकर हीरो बन सकते है

सरकार इनाम देती है, मीडिया कवर करती है... और पुलिस भी हमारी पीठ धपधपाती नज़र आएगी !"

गौरव

(थोड़ा उठते हुए)

"भाई... बात तो सही है। ये काम छोटा नहीं है... मगर नेक है।"

सूरज

"लेकिन ये इतना आसान नहीं होगा, यार... इन केसों के पीछे पूरा रैकेट होता है... हम कैसे...?"

विजय

"सच कहूँ तो डर लग रहा है। कई बार पुलिस तक पीछे हट जाती है। और हम चार लोग...?"

गौरव

(राज की तरफ देखते हुए)

"मगर हमारे पास खोने को बचा भी क्या है... कम से कम ये करेंगे तो खुद से नज़र मिला पाएंगे।"

राज

"और अगर हम एक भी बच्चा वापस ला सके...

तो क्या पता उसी बच्चे की मुस्कराहट हमारी सारी हार को जीत में बदल दे!"

(एक हल्की हवा चलती है... पेड़ों की पत्तियाँ सरसराने लगती हैं... जैसे वक़्त ने उनकी बात सुन ली हो)

राज

"आज से हम हर लापता इंसान की रिपोर्ट, फोटो, अखबार की कटिंग, पुलिस स्टेटमेंट्स… सब इकट्ठा करेंगे।

कल से एरिया डिवाइड कर लेंगे।

हर गली, हर पोस्टर, हर गुमशुदा की कहानी हमारी जंग होगी।"

(सभी दोस्त अब धीरे-धीरे खड़े हो जाते हैं — आँखों में डर नहीं, उम्मीद है। खुद पर भरोसा अभी भी कमजोर है, मगर एक-दूसरे पर पूरा है।)

(राज नीचे बैठ जाता है, पीठ से बैग टिकाकर। फिर गौरव, फिर विजय, और आखिर में सूरज चारों एक सर्कल बनाकर बैठते हैं। शाम गहराती है, और चांदनी फैलने लगती है।)

अध्याय 63
तलाश और जिम्मेदारी – जान अटक गई

मुंबई की भागती-दौड़ती ज़िन्दगी में अब ये चारों दोस्त भी शामिल हो चुके थे। स्टेशन के पास एक छोटे से शौचालय में नहा-धोकर, तैयार होकर, उन्होंने दिन की शुरुआत की। उनकी आंखों में सिर्फ़ एक ही मक़सद था—किसी लापता बच्चे की तलाश करना, जिसकी सूचना के लिए बड़ी इनाम की राशि का दावा किया गया था।

राज और विजय ने दादर से चर्चगेट के बीच की ट्रेनें पकड़ीं, तो वहीं सूरज और गौरव ने दादर से विरार की लाइन को कवर किया। स्टेशन, ऑटो स्टैंड, अख़बार की दुकानें—मुंबई की हर गली, हर कोना खंगाल डाला गया।

राज

"सूरज और मैं दादर से चर्चगेट और तुम दोनों दादर से विरार जाना। हम कल सेंट्रल लाइन से हार्बर लाइन तक कवर करेंगे। बस, ऑटो, प्लेटफार्म, न्यूज़पेपर—सब कुछ!"

गौरव

"ठीक है राज, हम सभी रेडी हैं। कॉल पर अपडेट करते रहेंगे।"

पाँच दिन गुजर गए। हर एक के चेहरे पर थकावट की लकीरें साफ़ दिखने लगीं। पर न तो कोई बड़ी इनामी सूचना मिली, न ही किसी अमीर बाप की खोई हुई औलाद का सुराग।

पाँचवे दिन की दोपहर, विजय को एक पोस्टर दिखता है जिसमें एक बच्चे की फोटो होती है। वो बच्चा बेहद मासूम और खूबसूरत होता है। पोस्टर पर नंबर होता है, मगर इनाम का कोई ज़िक्र नहीं होता।

विजय (पोस्टर देखते हुए)

"भाई हालत बुरी हो गई है... पता नहीं अब क्या होगा।"

सूरज (हल्के-फुल्के अंदाज़ में)

"मुंबई के मज़े... बिना जॉब के पूरी मुंबई घूम लिए... वरना टाइम नहीं मिलता था!"

राज

"कोई बात नहीं... कुछ प्लान करते हैं।"

विजय

"यार ये एक बच्चे का पोस्टर है। नंबर तो है मगर इनाम की राशि नहीं है। बच्चा देखने में बहुत सुंदर है, लगता है किसी बड़े बाप की औलाद है। एक बार कॉल करके देखता हूँ।"

विजय नंबर डायल करता है। कॉल एक औरत उठाती है। आवाज़ में घबराहट और उम्मीद की झलक होती है।

औरत (गंभीर आवाज़ में)

"हेल्लो... कौन बोल रहा है?"

विजय

"मैं विजय। हमें ये नंबर एक लापता बच्चे के पोस्टर पर मिला है... आप कौन?"

औरत

"हाँ हाँ... ये हमारा ही नंबर है... तुम्हें कुछ पता चला क्या?"

विजय

"नहीं, अभी तक कुछ नहीं पता चला। आप कहाँ रहते हैं?"

औरत

"सर, साहब बच्चे को ढूंढ कर दे दो... हम बहुत ही गरीब लोग हैं... मलाड के पास खोली में रहते हैं। तुम चाहो तो मेरे गहने, ये घर, अब तक की कमाई... सब कुछ ले लेना... मगर मेरा बच्चा ढूंढ दो।" (औरत का रोना बड़ा ही दुखदाई और तड़प से भरा हुआ था)

(तभी उसका पति फोन ले लेता है)

औरत का पति

"सर, ये हमारा ही बच्चा है। अगर आपको कुछ भी पता चले तो हमें ज़रूर बताइए। वैसे आप क्या करते हैं?"

विजय

"हम इस समय मुंबई में लापता बच्चों को ढूंढने का काम कर रहे हैं।"

औरत का पति

"ओके सर, हम इंतज़ार करेंगे आपके कॉल का।"

कॉल कट होते ही विजय का चेहरा उतर जाता है। राज उसे देखता है और पूछता है:

राज

"क्या हुआ?"

विजय

"जिसको अभी कॉल किया... वो कोई अमीर बाप की औलाद नहीं थी... बहुत ही गरीब थे। हमें कुछ तो करना होगा। हम अब तक ये सब

पैसे के लिए कर रहे थे... मगर अब लग रहा है ये हमारी भी जिम्मेदारी है।"

राज (गंभीरता से सिर हिलाते हुए)

"हाँ मेरे भाई, सही कहा तुमने।"

अध्याय 63 A
पांच करोड़ की उम्मीद

मुंबई की तेज़ रफ्तार में अब ये चारों दोस्त धीरे-धीरे थकने लगे थे। पाँच दिन की तलाश, भागदौड़, स्टेशन से स्टेशन की खाक छानना, हर गली, हर नुक्कड़ पर उम्मीदें टटोलना — सबने मिलकर इनकी हिम्मत को तो नहीं, मगर शरीर को थका दिया था।

दोपहर का वक़्त था। सूरज हल्का-सा चढ़ आया था और गर्मी अपने पूरे तेवर में थी। चारों दोस्त अब मुंबई सेंट्रल के बाहर एक छोटे-से **टी स्टॉल** पर बैठ गए। कुछ पल का आराम, एक कप चाय और थोड़ी-सी शांति की उम्मीद लिए।

राज (थका हुआ, आंखें मसलते हुए)

"साहब जी, चाय पिलाओ एकदम मस्त..."

बाकी दोस्त भी धीरे-धीरे स्टॉल के पास आकर चाय ऑर्डर करते हैं। उनकी बातचीत अब थकी हुई, मगर सच्ची लगती है।

गौरव (हार मानते हुए)

"भाई बहुत हो गया... यहाँ-वहाँ भागने से अच्छा है, तुम सभी अपने-अपने गाँव निकल लो।"

सूरज (धीरे से)

"बात तो सही है..."

विजय (गुस्से में)

"क्या सही है बे? घर वालों को क्या जवाब देंगे? और गुंडे वहाँ तक भी पहुँच गए तो?"

राज (संघर्ष को समझते हुए)

"सही बात है... अभी हमने कोशिश ही कितनी की है। थोड़ी और करते हैं, देखते हैं कुछ अच्छा हो जाएगा।"

इतने में ही पास में लगे टीवी स्क्रीन पर NDTV चैनल की एक ब्रेकिंग न्यूज़ आती है —

"मुंबई के मशहूर बिजनेसमैन राकेश सूर्यवंशी की बच्ची लापता, सूचना देने वाले को मिलेगा 5 करोड़ का इनाम।"

ये सुनते ही सबकी आंखें चमक उठती हैं। चेहरे की थकान कुछ पलों के लिए जैसे गायब हो जाती है। चारों दोस्त एक-दूसरे की तरफ देखते हैं — जैसे कोई नई उम्मीद की किरण फूट पड़ी हो।

राज तुरंत अपने मोबाइल में गूगल पर सर्च करता है। बाकी दोस्त भी एक अलग जोश में आकर वहाँ से उठते हैं और पास के पार्क की ओर बढ़ जाते हैं।

अब उनके कदमों में थकावट नहीं, बल्कि एक नई ऊर्जा थी — **पांच करोड़ की उम्मीद**।

अध्याय 64
सुराग की तलाश – मुसीबत के साक्षात दर्शन

मुंबई सेंट्रल के पास वाले एक छोटे से पार्क में चारों दोस्त बैठे हुए थे। थकान के बावजूद उनके चेहरों पर एक अलग सी लगन साफ दिखाई दे रही थी। पार्क की ठंडी मिट्टी और हवा के झोंके उनके दिमाग में चल रही गर्माहट को शांत नहीं कर पा रहे थे। राज मोबाइल में लगातार कुछ सर्च कर रहा था, बाकी तीनों भी अपने-अपने तरीकों से सोच में डूबे हुए थे।

राज (मोबाइल स्क्रीन पर नज़रें गड़ाए)

"यार कुछ ठीक-ठाक निकल कर नहीं आ रहा है, आखिर हम कहाँ से शुरू करें? ये लापता हुए बच्चों का सुराग आखिर कहीं तो होगा।"

गौरव (सोचते हुए)

"मैं अपने कुछ खास दोस्तों को कॉल करता हूँ, क्या पता वहाँ से कुछ हेल्प मिल जाए।"

सूरज और विजय गौरव की बात सुन रहे थे, तभी राज अचानक बोल पड़ा, जैसे उसे कुछ सूझ गया हो।

राज (थोड़ी उत्तेजना के साथ)

"मेरे ख्याल से हमें ग्रांट रोड जाना चाहिए। उस इलाके में शायद हमें कोई क्लू मिल जाए। मतलब यार, वो जगह ही ऐसी है... उस अड्डे पर कुछ ज़्यादा ही शरीफ लोग आते हैं... क्यों? सही कहा ना?"

गौरव (राज की ओर देखता है)

"यार, बात तो तुम सही कर रहे हो। वहाँ जाने में कोई बुराई नहीं है। बताओ, कब का प्लान करें?"

राज (आत्मविश्वास से)

"हम आज रात ही अड्डे पर चलेंगे।"

चारों दोस्त अब चुपचाप बैठ गए। हवा में हल्की ठंडक थी, और रात धीरे-धीरे करीब आ रही थी। लेकिन इस बार ये कोई आम रात नहीं थी — ये एक सुराग की रात थी।

अध्याय 65
Grant Road की रात

मुंबई की सड़कों पर रात का सन्नाटा गहराता जा रहा था। घड़ी की सुइयाँ 12:30 पर टिक चुकी थीं जब चारों दोस्त ग्रांट रोड के बदनाम अड्डे पर पहुँचे। गलियों में सिर्फ जलती बुझती रोशनी और अजीब साए फैले थे। हर मोड़, हर कोने में अंधेरा जैसे अपनी बाहें फैलाए खड़ा था।

वे चारों चुपचाप गलियों की खाक छानते रहे — जैसे किसी छुपे हुए राज की तलाश में हों। तभी एक वीरान और टूटी-फूटी बिल्डिंग उनकी नज़रों में आई।

राज की आँखें चमकीं, "हमें यहाँ **कुछ ना कुछ ज़रूर मिलेगा**, देख लेना... **मेरा मन कह रहा है**।"

गौरव ने चारों तरफ नज़र दौड़ाई और ठंडी सांस लेते हुए कहा, "हाँ भाई, इतनी सुनसान जगह पर सिर्फ **कुत्ते ही मिल सकते हैं**।"

विजय की डर भरी निगाहों ने चारों ओर देखा, "कैसी जगह है ये? **मुंबई में भी ऐसी कोई जगह होगी, सोचा नहीं था।**"

गौरव मुस्कराया, "ये मुंबई है यार... यहाँ कुछ भी हो सकता है।"

राज की नज़र एक पुरानी बिल्डिंग पर गई, उसकी उंगली उसकी तरफ इशारा कर रही थी, "वो देखो... **शायद एक पुरानी बिल्डिंग है**... हमें वहाँ चलना चाहिए।"

वो सब धीरे-धीरे उस खंडहर जैसी बिल्डिंग में दाखिल हुए। मोबाइल की टॉर्च जल चुकी थी। हवा में सीलन और सड़न की मिली-जुली गंध थी। गौरव की आवाज़ उभरी, "भाई यहाँ इंसान तो नहीं, पर **भूत ज़रूर मिलेंगे।**"

अचानक राज रुक गया। उसकी आँखें चौकन्नी हो गईं। उसने कान लगाए।

"हेलो... सुनो... मुझे यहाँ से किसी की आवाज़ आ रही है..."

राज टॉर्च की रौशनी के साथ आगे बढ़ा, और सामने एक बच्ची को ज़मीन पर पड़े पाया। बाकी दोस्त भी उसके पास पहुँच गए। गौरव की चीख-सी निकली:

"भाई यहाँ कुछ तो लोचा है... हमें जल्दी से निकलना चाहिए! ये बच्ची तो मरी पड़ी है... तुम्हें आवाज़ किसकी आई थी?"

तभी बिल्डिंग के दूसरी तरफ से किसी के कदमों की आहट आई। चारों दोस्त दबे पाँव वहाँ से निकलने की कोशिश करने लगे। पर तभी... तभी पेट्रोलिंग पर निकली पुलिस की नज़र भी उस बच्ची पर पड़ी। सायरन की हल्की आवाज़ के साथ शोर मच गया।

पुलिस के साथ दो कांस्टेबल दौड़े आए। आवाज़ सुनकर एक कपल बिल्डिंग के भीतर से बाहर निकला। पुलिस ने उन्हें तुरंत पकड़ लिया।

"**तुम दोनों कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?**" पुलिसवाले की कड़कती आवाज़ गूंजी।

लड़की गिड़गिड़ाई, "**साहब जी, मैं तो धंधे वाली हूँ... मुझे जाने दो।**"

"**यहाँ एक बच्ची की लाश पड़ी है...**"

"**हमें कुछ नहीं पता साहब... सच में!**"

पुलिसवाला कांस्टेबल को आदेश देता है, "इन दोनों को पकड़कर रखो!" तभी... किसी ने कुछ गिराया या दौड़ा — एक ज़ोरदार आवाज़ हुई।

पुलिसवाले की नज़र दूसरी दिशा में गई। "**कौन है वहाँ?**"

राज फुसफुसाया, "**निकल लो बेटा... पुलिस वाला है!**"

चारों भाग पड़े।

विजय की हांफती आवाज़ निकली, "**साली ये हमारी फूटी किस्मत कब पीछा छोड़ेगी!**"

सूरज ने चिल्लाकर कहा, "**अबे साले किस्मत की छोड़! ये पुलिसवालों ने पकड़ लिया तो एक पैर पर कत्थक करवाएंगे!**"

गौरव झल्लाया, "**बहन के भाइयों, बातें बाद में कर लेना... जल्दी भागो!**"

चारों दोस्त स्टेशन के पास वाली दीवार की तरफ दौड़ते हैं। गौरव और विजय बिना सोचे कूद जाते हैं। राज भी झटपट दीवार लांघता है।

सिर्फ सूरज पीछे रह जाता है — जैसे ही वह कूदता है, एक आवारा कुत्ता उसका बायाँ पैर पकड़ लेता है।

"**छोड़ बे कमीने!**" सूरज झटपट उसे लात मारता है। किसी तरह एक जूता कुत्ते के मुँह में छूट जाता है... और सूरज भी दीवार के पार हो जाता है।

चारों भागते हुए किसी अंधेरी गली में जाकर रुकते हैं, हांफते, पसीने से तरबतर... और इस बार पहली बार उनके चेहरे पर डर के साथ **जिम्मेदारी** भी झलकती है।

अध्याय 66

जिम्मेदारी बड़ी भारी – रातों के ख़िलाड़ी

भागते-भागते चारों दोस्त थककर चूर हो चुके थे। स्टेशन से सीधे वो पास के एक पुराने पार्क में आकर बैठ गए। सबके चेहरे पर थकान के साथ-साथ डर और उलझन साफ झलक रही थी। रात की खामोशी के बीच, उनके मन की बेचैनी सबसे ज़्यादा शोर मचा रही थी।

सूरज (थका हुआ, बेहद हताश)

"भाई भूल जाओ, भाड़ में जाए दुनिया-दारी, निकल लो गाँव, आज हाथ लग गए होते तो जेल में पड़े होते।"

विजय (राज की ओर देखते हुए)

"राज भाई, कोई और दूसरा रास्ता देखो।"

गौरव (बेचैन)

"समझ नहीं आ रहा ये हो क्या रहा है, हर बार एक नई मुसीबत।"

राज कुछ देर चुप रहा। वो जानता था कि हालात बदतर हो रहे हैं, लेकिन हार मानने का नाम उसके खून में नहीं था।

राज (धीरे मगर ठोस आवाज में)

"हमारे पास और कोई रास्ता भी तो नहीं है। हम इतने सारे पैसे कोई और दूसरे तरीके से नहीं कमा सकते।"

सूरज (गुस्से और थकान से भरा)

"बैंक वालों, बयाज़ वालों की धमकियाँ कम पड़ गई थीं, जो भगवान तूने ये पुलिस वाले भी पीछे पड़वा दिए... बस भाई, बहुत हो गया, कोई और रास्ता निकालो।"

राज ने लंबी सांस ली। उसके चेहरे पर एक ठहरी हुई गंभीरता थी। उसकी आंखों में कहीं न कहीं अब भी उम्मीद थी ।

राज (पुरे संकल्प के साथ)

***"जितनी बड़ी जिम्मेदारी होगी, उतनी बड़ी परेशानी भी होगी।* कसम खाई थी एक साथ रहने की। तुम सब भी मेरा साथ नहीं दोगे तो भी अकेला ही जाऊँगा। कल रात ही फिर से, जिसको साथ चलना है चलो।"**

चारों दोस्त चुप हो गए। एक पल के लिए उनकी आंखें एक-दूसरे से मिलीं और फिर सूरज बोला:

सूरज (थोड़ा नरम पड़ते हुए)

"ठीक है, मगर कल रात नहीं, तीन दिन बाद सही रहेगा। तब तक शायद हमारा मामला सुलझ जाए।"

राज (हल्की मुस्कान के साथ)

"ठीक है, समझदार हो... चलो कुछ खाने के लिए देखते हैं, कुछ मिलेगा या सुबह का वेट करना पड़ेगा।"

चारों दोस्त एक-दूसरे की तरफ देखते हैं और हल्के से हंस पड़ते हैं। शायद कुछ सेकंड के लिए ही सही, लेकिन इस हंसी में एक उम्मीद छिपी होती है… एक साथ होने की ताकत।

अध्याय 67
भूख, बिस्कुट और इंतज़ार

दिन भर की थकावट और बेचैनी के बाद, चारों दोस्त अब एक ही बात का इंतज़ार कर रहे थे — **रात के दो बजे** का। तीन दिनों तक वो सभी सुबह से लेकर शाम तक पार्क और गलियों में यूं ही भटकते रहे, कभी बैठते, कभी उठते, कभी इधर, कभी उधर। वक्त बिताने के लिए ये उनकी आदत नहीं, मजबूरी बन चुकी थी।

शाम ढलते-ढलते वे सब ग्रांट रोड स्टेशन की ओर निकल पड़े। वहां की हल्की रौशनी, दूर बजते लोकल ट्रेन के हॉर्न और हवा में फैली नम खामोशी… एक अजीब बेचैनी घुली हुई थी।

राज (सभी से धीमे स्वर में, उम्मीद जताते हुए)

"बस आज रात और… मुझे लगता है कुछ तो बात बनेगी।"

गौरव (थोड़ा थका मगर आशावादी)

"देखते हैं, क्या होता है आगे-आगे…"

रात अब पूरी तरह से उतर चुकी थी। वे पार्क में चक्कर काटते हुए एक-दूसरे की आंखों से बातें कर रहे थे। कुछ भी बोलने की ज़रूरत नहीं थी — थकान और भूख सबके चेहरों पर साफ लिखी थी। और फिर... घड़ी ने बारह बजा दिए।

राज (धीरे से, वक्त पर नजर रखते हुए)

"जब तक दो नहीं बज जाते, हम सभी यही रहेंगे… अभी तो सिर्फ बारह ही बजे हैं।"

सावधानी बरतने के लिए सभी ने अपने चेहरे को रूमाल से हल्का-सा ढक रखा था। माहौल में संदेह और तैयारी दोनों थी।

सूरज (पेट पकड़ते हुए, गले में सूखापन के साथ)

"ज़रूर भाई, मगर भूख का क्या करें… बहुत तेज लगी है।"

अभी वो कुछ सोच ही रहे थे कि तभी एक अधेड़ उम्र का आदमी पास के फुटपाथ से गुजरता है। उसके हाथ में बिस्कुट का पैकेट है। वह एक आवारा कुत्ते को बिस्कुट डालता है, लेकिन कुत्ता उसे सूंघकर वापस मुड़ जाता है।

गौरव और सूरज की आंखें बिस्कुट पर टिकी हुई थीं — जैसे वो बिस्कुट नहीं, किसी होटल की प्लेट हो। तभी दूसरा कुत्ता आता है और बिस्कुट पर सुसु करके चला जाता है। कुछ ही पल में वही पहला कुत्ता वापस लौटता है… और अब बिस्कुट खाने लगता है।

ये अजीब और मज़ेदार दृश्य देखकर राज के चेहरे पर एक हल्की मुस्कान आती है। वो उस आदमी की ओर देखता है और कहता है:

राज (हँसी दबाते हुए)

"इन कुत्तों को शायद मीठे बिस्कुट नहीं, नमकीन बिस्कुट पसंद हैं।"

और फिर चारों हँस पड़ते हैं। कुछ सेकंड के लिए ही सही, लेकिन इस हँसी में उनकी थकान, तनाव और भूख सब बह जाते हैं… जैसे ज़िन्दगी ने एक छोटा-सा ब्रेक दे दिया हो।

अध्याय 68

पोस्टर पर सूरज – ये तो होना ही था

रात के दो बजते ही चारों दोस्त ग्रांट रोड के उस अड्डे पर पहुंच गए थे। थकान अब भी उनके शरीर में थी, मगर आंखों में सतर्कता और दिल में उम्मीद की थोड़ी सी लौ बाकी थी। हर कदम फूँक-फूँक कर रखा जा रहा था, जैसे कहीं कोई जाल बिछा हो, और वो जरा सी चूक में फँस जाएँ।

राज दीवारों पर नज़र फेरते हुए आगे बढ़ रहा था। तभी एक रंग-बिरंगा पोस्टर उसकी आँखों में चुभ गया। उसने जैसे ही गौर से देखा, उसके चेहरे पर एक अजीब-सी मुस्कान फैल गई और वो ज़ोर से हँस पड़ा।

राज (हँसी रोकते हुए, बाकी दोस्तों को बुलाते हुए)

"अरे सुनो... ये देखो, मुझे तो सूरज लग रहा है!"

तीनों दोस्त फौरन पास आ गए और उस पोस्टर को घूरने लगे। फिर जैसे सबकी आंखों में यकीन और हँसी एक साथ भर आई।

सूरज (हक्का-बक्का, मगर खुद को पहचानते हुए)

"अबे ये तो मैं ही लग रहा हूँ!"

विजय (हँसी दबाते हुए)

"बेटा, लग नहीं रहा… ये तू ही है।"

गौरव (आश्चर्य से)

"हाँ यार… पर ये हुआ कैसे? अब ये कौन सी नई मुसीबत है?"

राज का चेहरा अब गंभीर होता जा रहा था। वो हालात की गंभीरता को जल्दी समझ चुका था। उसने गहरी साँस लेते हुए जवाब दिया:

राज (धीरे-धीरे मगर साफ शब्दों में)

"ज्यादा दिमाग लगाने की ज़रूरत नहीं है। अब पुलिस वाले हमें ही उस बच्ची का कातिल समझने लगे हैं। भागते वक़्त ज़रूर किसी CCTV में सूरज आ गया होगा।"

एक पल की चुप्पी छा जाती है। फिर अचानक विजय मज़ाकिया लहजे में बोल पड़ता है:

विजय (हँसते हुए)

"भाई, एक लाख का इंतज़ाम हो गया!"

सूरज (हँसते हुए, इशारा समझते हुए)

"साले, मैं समझ रहा हूँ... तू किसके लिए बोल रहा है!"

चारों दोस्त ठहाके लगाने लगते हैं, मानो तनाव की दीवार में थोड़ी सी दरार पड़ गई हो। हँसी के इन पलों में वो पलभर को भूल जाते हैं कि उन पर अब पुलिस का शक गहरा हो चुका है।

रात धीरे-धीरे सुबह की ओर बढ़ रही थी। मगर उनकी उम्मीद अब भी अंधेरे में थी। कुछ घंटे और यूँ ही वहां-वहां घूमने के बाद, जब थकान हावी हो गई और सड़कों पर सन्नाटा गहराने लगा — तब चारों अपने अड्डे की ओर लौट चले।

अध्याय 69
आधी बात, अधूरी कॉल

दोपहर का वक्त था। धूप हल्की-हल्की सरक रही थी। चारों दोस्त एक पार्क के कोने में बैठे सुस्ताने की कोशिश कर रहे थे। तभी राज के मोबाइल पर घंटी बजी — स्क्रीन पर नाम चमका: **शालिनी**। राज की आंखों में जैसे अचानक सुकून उतर आया।

उसने तुरंत कॉल उठाया।

शालिनी (फ़ोन पर, आवाज़ में चिंता)

"हेल्लो राज, कैसे हो? कहाँ हो, तुम्हारा कॉल भी नहीं लगता!"

राज (थका हुआ लेकिन हल्की मुस्कान के साथ)

"बस ठीक है... दिन-रात यहाँ-वहाँ भटक रहे हैं। तुम बताओ, सब कैसे है? कोई घर पर आया क्या?"

शालिनी

"घर पर तो बैंक वाले कई बार आ चुके हैं... जाने दो। तुम बताओ, तुम्हें कुछ पैसों की ज़रूरत है? मैं लेकर आऊँ?"

राज कुछ कह ही रहा था कि अचानक उसका फ़ोन बंद हो गया। बैटरी पूरी तरह खत्म हो चुकी थी।

राज झल्लाते हुए बाकी दोस्तों की तरफ मुड़ा।

राज (जल्दबाज़ी में)

"तुम्हारे पास शालिनी का नंबर है? मेरा फोन बंद हो गया!"

गौरव (सिर हिलाते हुए)

"मेरे पास तो नहीं है।"

गौरव ने सूरज और विजय से भी पूछा, मगर किसी के पास नंबर नहीं था। थोड़ी देर के लिए राज का चेहरा बुझ सा गया।

विजय (मुस्कराते हुए, माहौल हल्का करने की कोशिश में)

"कोई बात नहीं, भले ही बैटरी डाउन हुई है... मगर शालिनी से बात करके तू जरूर चार्ज हो गया!"

सभी हल्के से हँस पड़े। राज ने भी मुस्कान के साथ जवाब दिया:

राज (छेड़ते हुए)

"क्यों? तुम्हारी वाली कहाँ गई? बड़े दिन हो गए कोई बात नहीं हुई?"

विजय (थोड़े मायूसी में)

"जॉब गई... बंदी भी गई।"

सूरज (फिर अपनी खास स्टाइल में)

"गौरव ने सही कहा था — ये मुंबई है, यहाँ कुछ भी हो सकता है। भाई, अब बंदी-वंदी की बात मत करो। अब किसी भी लड़की को लाइन-वाइन नहीं मारेंगे!"

राज (हँसते हुए)

"अच्छा... ये बात है? देखते हैं शरीफज़ादे कब तक ख़ामोश रहते हैं!"

हँसी-मज़ाक के इस दौर के बाद सब थककर पार्क की घास पर ही लेट गए। नींद जैसे ज़िंदगी के कुछ पलों से बचाने आ गई हो। और अगले पल सब खामोश, खुले आसमान के नीचे — सपनों में कहीं और खो गए।

अध्याय 70

एक अनजाना चेहरा, एक जानी-पहचानी उम्मीद

रात गहराने लगी थी। मुंबई की सड़कों पर अब चुप्पी और थकावट का साया बिछ चुका था। चारों दोस्त — राज, सूरज, गौरव और विजय — पार्क के बाहर सड़क किनारे धीरे-धीरे चलते जा रहे थे। पेट भूख से गुज़र रहा थी और चेहरों पर एक थकी हुई खामोशी थी।

सड़क पर अचानक सायरन की आवाज़ गूंजी। एक **PCR वैन** होर्न बजाते हुए उनकी ओर तेजी से आई। चारों चौंक गए।

राज झटपट फुटपाथ की ओर दौड़ा — **भागते हुए उसका कंधा एक आदमी से ज़ोर से टकरा गया।**

दोनों कुछ पल के लिए ठिठक गए।

राज ने उस आदमी की तरफ ध्यान से देखा... और फिर जैसे उसकी आंखें चमक उठीं।

राज (हैरानी और उम्मीद से)

"हेल्लो सर, आप यहाँ? आपने मुझे पहचाना?"

वह आदमी थोड़ी उलझन में था — एक फोटोग्राफर, जिसकी उम्र और चेहरे पर अनुभव की रेखाएं थीं।

डॉक्टर फोटोग्राफर (संकोच से)

"आप कौन? मैंने आपको नहीं पहचाना। आप मुझे कैसे जानते हैं?"

राज (आश्वस्त भाव से)

"सर, आप बहुत बार हमारी कंपनी में ऐड देने आते थे, तभी मैंने आपको देखा था। मुझे अभी आपकी हेल्प की ज़रूरत है।"

फोटोग्राफर की नजरें अब गौर से राज के चेहरे को देखने लगीं — कहीं न कहीं कुछ जाना-पहचाना सा लगा।

डॉक्टर फोटोग्राफर

"हाँ बोलो, मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ?"

राज (थोड़ा रुककर, लेकिन सच्चाई से भरा हुआ)

"सर, जॉब जाने के बाद हम एक ऐसी मुसीबत में फँस गए हैं... जहाँ से बचना अब मुश्किल सा लग रहा है। जितने बचने के प्लान बन रहे हैं, उतना ही ज्यादा और फँसते जा रहे हैं।"

राज ने डॉक्टर को संक्षेप में वो सब बता दिया जो अब तक हुआ था — नौकरी का जाना, बैंक लोन और फिर बयाज़ के पैसे लापता बच्चे, इनाम, पुलिस की भागदौड़, भूख, डर, और टूटती उम्मीदें।

डॉक्टर फोटोग्राफर कुछ देर सोचता रहा, फिर बिना कुछ कहे एक हल्की मुस्कान के साथ बोला:

"चलों, मेरे साथ। इस वक्त सबसे पहले तुम्हें सुकून चाहिए... और एक ठिकाना।"

चारों दोस्त उसे देख रहे थे — पहली बार किसी अजनबी के भीतर उन्हें अपनापन दिखा।

फिर वो सब बिना कुछ कहे डॉक्टर के पीछे-पीछे चल दिए — शहर की तेज़ रफ्तार रात में एक नई दिशा की ओर।

अध्याय 71

वो फोटो... और वो बच्ची

डॉक्टर फोटोग्राफर का घर एक साधारण लेकिन सलीके से सजा हुआ दो कमरे का मकान था। जब चारों दोस्त वहाँ पहुँचे तो पहली बार उन्हें ऐसा लगा मानो ज़िंदगी थोड़ी थम गई हो। भाग-दौड़ से थके शरीर को एक शांत ठिकाना मिल गया था।

डॉक्टर ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा,

"ये है हमारा घर, तुम सब आराम करो। तब तक मैं तुम्हारे लिए कुछ खाना ऑर्डर कर देता हूँ।"

राज की नज़र सीधे दीवार पर टंगी बड़ी-बड़ी तस्वीरों पर गई — हर तस्वीर में कोई न कोई लड़की मुस्कुरा रही थी, कुछ ब्लैक एंड वाइट, कुछ रंगीन। टेबल पर भी कुछ फोटो बिखरी हुई थीं। राज दीवार की ओर देखते हुए मुस्कराया,

"वाह! क्या शौक है... इतनी लड़कियों की फ़ोटो?"

गौरव थककर सोफे पर गिर पड़ा।

"भाई मुझे तो थोड़ा आराम करने दो..."

सूरज, जो टेबल पर रखी तस्वीरों में उलझा हुआ था, सिर खुजलाते हुए बोला,

"ये मामला क्या है? कुछ समझ नहीं आ रहा है..."

और फिर खुद ही हँसने लगा।

विजय ने लंबी साँस लेते हुए कहा,

"बस जान बच गई... इतना ही काफ़ी है। अब आराम से सोचेंगे, आगे क्या करना है।"

डॉक्टर मुस्कराते हुए पास आया,

"राज, पहले कुछ खाना खा लेना, फिर आराम से काम कर लेना।"

तभी डोरबेल बजी — खाना आ गया था। डॉक्टर ने टेबल पर थालियाँ लगाईं और सबको खाने के लिए बुलाया। लेकिन सूरज की आँखें अभी भी तस्वीरों पर टिकी थीं।

"अरे... *ये तो उसी बच्ची की फ़ोटो है, जिस पर पूरे पाँच करोड़ का इनाम है!*" सूरज की आवाज़ में हैरानी साफ़ झलक रही थी।

वो सब को पास बुलाता है। राज के हाथ में तस्वीर देते हुए वह कहता है,

"देखो ज़रा, यही है ना?"

राज तस्वीर पर नज़र डालते ही चौंक पड़ा,

"हाँ यार, ये तो वही बच्ची है..."

अब गौरव और विजय भी फ़ोटो देखने लगे। सबकी आँखों में हैरानी के साथ-साथ उम्मीद की झलक थी।

डॉक्टर हक्का-बक्का हो गया,

"भाई साहब, ये सब चल क्या रहा है? कोई मुझे भी बताएगा कुछ?"

राज ने संयम से जवाब दिया,

"सर, आपने ये सभी फ़ोटो कब और कहाँ खींची?"

"अभी कुछ दिन पहले," डॉक्टर ने बताया, **"आज़ाद मैदान में नेताओं की रैली हो रही थी। ये सब फ़ोटो वहीं की हैं।"**

राज ने एक और तस्वीर उठाई — उसमें एक आदमी, उसी बच्ची को कार में बैठा रहा था।

"सर, इस फ़ोटो में ये आदमी कौन है?"

डॉक्टर ने गौर से देखा और फिर हल्के से मुस्कराया,

"कुछ कह नहीं सकते... हो सकता है इनका ड्राइवर हो।"

राज की आँखों में चिंगारी सी जल उठी।

"हमें कल ही इस आदमी से मिलना है। जिस बिज़नेसमैन की बच्ची लापता हुई है, उनका नाम राकेश सूर्यवंशी है। हमें कल ही उनके घर जाना है। हो सकता है ये उन्हीं का ड्राइवर हो!"

यह कहने के बाद सब चुपचाप खाना खाने लगे। माहौल थोड़ी देर के लिए फिर से सामान्य हो गया।

रात अब गहराने लगी थी... और ये चार दोस्त — जो कल तक सड़कों पर भटक रहे थे — अब एक ऐसी कड़ी के पास थे, जो शायद उनकी पूरी किस्मत बदल सकती थी।

अध्याय 72
अनेक सवाल , जवाब ख़ाली

अगली सुबह की धूप कुछ अलग थी — जैसे उसके साथ उम्मीद भी जागी हो। राज, सूरज, गौरव और विजय डॉक्टर फोटोग्राफर के साथ मुंबई के एक पॉश इलाके की ओर बढ़े। वहाँ उनका अगला मक़सद था — राकेश सूर्यवंशी का बंगला। वही राकेश, जिसकी बच्ची के लापता होने की खबर अब पूरे देश में सनसनी बन चुकी थी।

बंगले का गेट खुलते ही एक सुरक्षाकर्मी ने उन्हें अन्दर आने दिया। भारी-भरकम दरवाज़ों के पार, राकेश एक ऑफिसनुमा कमरे में बैठा था। राज ने आगे बढ़ते हुए शांति से कहा:

"सर, गुड मॉर्निंग। मैं राज... आपसे ख़ास मिलने आया हूँ। मैंने आपकी बच्ची की खबर टीवी पर देखी थी। मैं पहले मीडिया में काम करता था... और मुंबई में लापता हुए बच्चों की खबरों पर मेरी खास नज़र रहती थी।"

राकेश ने गंभीरता से सिर हिलाया।

"हाँ, ज़रूर... बताओ, तुम क्या पूछना चाहते हो? मैं तुम्हारी हर मदद करूँगा। आखिर ये मेरी बेटी की ज़िंदगी का सवाल है।"

राज ने नज़रे मिलाते हुए पूछा,

"सर, क्या आपकी किसी से कोई दुश्मनी थी?"

राकेश कुछ सोचते हुए बोला,

"नहीं... मुझे तो नहीं लगता। लेकिन... इतने बड़े बिज़नेसमैन का कोई दुश्मन ना हो — ये भी मुश्किल है।"

राज ने जेब से एक फोटो निकाली और आगे बढ़ा दी,

"ये फोटो आपकी बेटी की ही है?"

राकेश ने फ़ोटो पर एक नज़र डाली और उसकी आँखों में भावनाएँ उमड़ पड़ीं।

"हाँ, ये तो मेरी ही बेटी की फ़ोटो है। और ये रैली वाले दिन की ही है... लेकिन ये फोटो तुम्हारे पास कहाँ से आई?"

डॉक्टर फोटोग्राफर ने झट से जवाब दिया,

"सर, ये फ़ोटो मैंने ली थी। मैं एक एजेंसी में फोटोग्राफर हूँ। मुंबई में होने वाले हर छोटे-बड़े इवेंट की तस्वीरें इकट्ठा करता हूँ।"

विजय ने हल्की सी दबी हँसी में कहा,

"सही बोला — छोटे बड़े इवेंट..."

राज ने बात को गंभीर दिशा दी,

"राकेश सर, इस फोटो में जो आदमी दिख रहा है... क्या हम उससे पूछताछ कर सकते हैं?"

राकेश ने बग़ैर देर किए कहा,

"हाँ, ये मेरा ड्राइवर अशोक है। मैं अभी उसे बुलवाता हूँ। आप उससे बात कर सकते हैं।"

ड्राइवर अशोक कमरे में आया — लंबा, दुबला और थोड़ा सहमा हुआ। राज ने तस्वीर दिखाते हुए पूछा:

"क्या आप ही हैं जो इस फोटो में नज़र आ रहे हैं?"

ड्राइवर ने सिर झुकाते हुए जवाब दिया,

"हाँ, ये मैं ही हूँ। उस दिन साहब के कहने पर मैंने बच्ची को घर तक छोड़ा था। मेन गेट तक गया, बच्ची गाड़ी से उतरी और मैं तुरंत निकल गया। मुझे लगा वो अन्दर चली गई... बस उसी दिन से वो लापता है।"

राज ने अब एक और अहम सवाल किया:

"राकेश सर, उस रैली में आपको किसने इन्वाइट किया था?"

राकेश ने तुरंत जवाब दिया ,

"मुझे मेरे करीबी दोस्त, वहाँ के MP जसवंत मालगुड़े ने बुलाया था।"

राज ने एक तेज़ सवाल दागा:

"क्या आपको जसवंत मालगुड़े पर कोई शक है?"

राकेश हल्के से मुस्कराया,

"नहीं... वो मेरा सबसे भरोसेमंद आदमी है। हमारी दोस्ती दस साल पुरानी है। वो राजनीति का बड़ा खिलाड़ी है, लेकिन मुझे नहीं लगता वो ऐसा कुछ कर सकता है। वो बस अपने काम से मतलब रखता है।"

राज ने एक गहरी बात कही, जो सीधे राकेश के ज़ेहन में उतर गई:

"सर... *राजनीती वही करे, जो राज 'नीजी' रखे।"*

राज ने उठते हुए कहा,

"सर, हम अब चलते हैं। जैसे ही कुछ पता चलेगा, हम आपको इन्फॉर्म करेंगे।"

राकेश उसे जाता देख चुप हो गया। राज की बातों में उसे कुछ गहराई सी महसूस हुई... शायद कोई अनदेखा सच।

अध्याय 73
भिवंडी का सुराग

रात गहराती जा रही थी, लेकिन डॉक्टर फोटोग्राफर के घर का माहौल अब भी बेचैनियों से भरा हुआ था। चारों दोस्त एक टेबल के चारों ओर बैठे थे — चेहरों पर थकान, मगर आंखों में उम्मीद की आखिरी चमक बाकी थी।

राज ने गहरी साँस ली और कहा:

"अब समय बहुत ही कम है... हमें जल्दी से जल्दी कुछ करना होगा..."

डॉक्टर फोटोग्राफर ने उनकी तरफ देखा और धीमे स्वर में बोला:

"मेरा एक दोस्त है... वो शायद हमारी कुछ मदद कर सकता है। उसे मुंबई में लापता हुए बच्चों के बारे में ख़ास जानकारी रहती है... और शायद उन अड्डों का भी पता हो जहाँ ऐसे बच्चों को छिपाया जाता है।"

राज ने एक उम्मीद भरी नज़र से डॉक्टर की तरफ देखा। डॉक्टर ने बिना देर किए अपने फोन की स्क्रीन पर उंगलियाँ चला दीं और नंबर डायल कर दिया।

कुछ मिनटों की बातचीत के बाद डॉक्टर ने फोन काटा और सबकी तरफ पलटकर बोला:

"उसने एक एड्रेस दिया है — भिवंडी में। वहाँ एक जगह है जहाँ कुछ अजीब हलचल देखी गई है।"

सभी दोस्त एक-दूसरे की ओर देखने लगे, जैसे किसी अंधेरे में टॉर्च की किरण दिखाई दी हो।

"तो फिर क्या सोचना..." सूरज बोला, **"चलो इसी रात चलते हैं!"**

गौरव ने हामी भरी, और विजय ने झट से अपना बैग उठाया।

"अब जो भी करना है, इसी रात करना है। अगर ये कड़ी सही निकली, तो हमें बहुत कुछ पता चल सकता है।" राज ने जोशीली आवाज़ में कहा।

कुछ ही मिनटों में चारों तैयार थे। भिवंडी की ओर एक और अनजानी, खतरनाक लेकिन ज़रूरी यात्रा शुरू हो चुकी थी...

अध्याय 74
पंचर की रात – लाइफ पंचर – ट्रक ड्राईवर

रात के तीसरे पहर में एक कार मुंबई की सुनसान हाइवे पर सरक रही थी। स्टीयरिंग व्हील पर डॉक्टर फोटोग्राफर था, बाकी चारों दोस्त — राज ड्राईवर के साथ और सूरज, गौरव और विजय — पिछली सीटों पर चुपचाप बैठे थे। हर कोई अपनी सोच में डूबा हुआ था। इस रात की यह यात्रा सिर्फ एक अड्डे तक नहीं थी — यह यात्रा थी उनकी उम्मीदों की आखिरी कड़ी तक।

हाइवे पर सन्नाटा पसरा था। गाड़ी की हेडलाइट्स दूर तक अंधेरे को चीरती जा रही थीं। अचानक, एक ज़ोरदार *"धपाक !"* की आवाज़ हुई — और कार एक झटके से एक तरफ झुक गई।

डॉक्टर फोटोग्राफर घबराकर बोला,

"लगता है टायर पंचर हो गया..."

राज ने झल्लाकर सिर पीट लिया और ठंडी हँसी में बोला,

"भाई टायर नहीं, *हमारी तो लाइफ पंचर हो गई है*... सर जल्दी से टायर चेंज कर दो!"

डॉक्टर कार के बाहर झाँकते हुए बोला,

"भाई... स्टेपनी भी पंचर ही है..."

अब चारों के चेहरे सफ़ेद पड़ गए।

विजय ने ताना मारा,

"सब कुछ पंचर ही है आजकल हमारी जिंदगानी में... सर आप यही रुकिए, हम लिफ्ट लेकर चलते हैं। अगर हम सुबह सात बजे तक वहां नहीं पहुंचे तो पक्का हम सभी के ज़रूर बारह बज जायेंगे।"

चारों दोस्त सड़क किनारे आ गए। लंबी रात, सुनसान हाइवे, और दूर तक कोई उम्मीद की गाड़ी नहीं दिखाई दे रही थी।

कुछ मिनटों बाद, एक भारी ट्रक धीमे-धीमे उनकी ओर आता दिखा।

राज ने हाथ दिखाया और जोर जोर से हिलाया

ट्रक वाला साइड में आकर रुक गया, तभी राज और सभी दोस्त भागकर ट्रक वाले के पास गए

राज आगे बढ़ा और विनम्र स्वर में कहा,

"हेल्लो साहब जी, हमें भिवंडी हाईवे तक पहुंचना है। कितना लोगे?"

ट्रक ड्राइवर ने उन्हें ऊपर से नीचे तक देखा और हँसकर बोला,

"200 दूंगा!"

राज चौंका,

"सर, हमें तो आपको पैसे देने हैं!"

अभी राज कुछ और कहता कि उसके पीछे से एक हिल-डुल **टाइम पास बंदा** धीमे से ट्रक की तरफ बढ़ा। ट्रक ड्राइवर ने फौरन हाथ जोड़कर कहा,

"भाई साहब, मैं आपको नहीं कह रहा था... आप सब तो फ्री में ही चलो!"

अब सब समझ चुके थे ट्रक ड्राइवर ने क्या समझा था। हँसी का माहौल बना और सब ट्रक में चढ़ गए।

सुबह के 6 बजे, ट्रक भिवंडी के बाहरी इलाके में रुका। लंबी रात के बाद पहली बार सूरज की किरणें चेहरे पर पड़ीं, और हर किसी को ऐसा लगा जैसे मंज़िल एक कदम और करीब आ गई हो...

अध्याय 75
साए पीछे-पीछे – लापता हो गए

दिन ढलने लगा था। राकेश सूर्यवंशी का आलीशान बंगला, जो आम दिनों में शांति और सलीके का प्रतीक लगता था, आज अजीब सी निगाहों के घेरे में था।

गेट के बाहर खड़ी एक पुरानी काली SUV की खिड़की के पीछे से दो आँखें लगातार बंगले की ओर देख रही थीं। आँखों में ना कोई भावना थी, ना कोई सवाल — बस एक मिशन।

वे **MP जसवंत मालगुड़े** के आदमी थे। चेहरों पर कोई डर नहीं, चाल में कोई हड़बड़ी नहीं — जैसे सब पहले से तय था।

उनका मकसद साफ था — **राज और उसके दोस्तों की हर हरकत पर नज़र रखना।**

जैसे ही राज और उसके दोस्त डॉक्टर फोटोग्राफर के साथ कार में भिवंडी की ओर निकले, वो SUV कुछ मिनटों बाद ही उनके पीछे हो ली। कार की खिड़कियों के पीछे से दिखते हुए चेहरे अब उन्हें नजर में नहीं आ रहे थे, पर उनका रास्ता MP के आदमियों को मालूम था।

SUV हाईवे पर उसी स्पीड में चल रही थी, जैसे वो कार का हिस्सा हो।

एक साया जो अंधेरे के साथ चलता है... बिना आवाज़ के।

दिन कब ढल गया, पता ही नहीं चला।

हाइवे अब रात के आगोश में था।

कार के पीछे चलती SUV की हैडलाइट्स बार-बार बुझ रही थीं — ताकि उनकी मौजूदगी का एहसास न हो।

MP जसवंत मालगुड़े का आदेश साफ था —

"उनकी हर चाल पर नज़र रखो...

हवा में तनाव घुल चुका था।

राज और उसके दोस्तों को इसका ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था... कि अब सिर्फ वो किसी को ढूंढ नहीं रहे थे... कोई अब उन्हें भी ढूंढ रहा था।

अध्याय 76

खोए हुए निशान

सुबह की हल्की रोशनी भिवंडी की गलियों पर उतर चुकी थी। हर कोना वीरान, हर गली जैसे किसी भूले-बिसरे राज़ को अपने भीतर समेटे हुए थी। चारों दोस्त — **राज, सूरज, गौरव और विजय** — शहर के एक पुराने पते की ओर बढ़ रहे थे।

राज के हाथ में लिखा हुआ एक कागज़ था, जिसे डॉक्टर फोटोग्राफर के दोस्त ने बड़ी सतर्कता से भेजा था। उस पते पर पहुँचते ही उनकी नजर एक तंग सी गली के नुक्कड़ पर खड़े अधेड़ उम्र के आदमी पर पड़ी।

राज ने आगे बढ़कर धीमी आवाज़ में पूछा,

"सर... यहाँ कोई उमेश जी रहते हैं? हमें उनसे मिलना है।"

आदमी ने घूरते हुए कहा,

"हाँ, मैं ही उमेश हूँ... लेकिन तुम्हें मेरा नाम किसने बताया?"

राज ने शांत और विनम्र लहजे में जवाब दिया,

"हमारे एक खास दोस्त हैं, उनके जरिए आपका जिक्र हुआ था। हम एक जरूरी तलाश में हैं, उम्मीद थी शायद यहाँ से कुछ सुराग मिल जाए।"

उमेश की आंखों में अचानक सख्ती आ गई।

"तुम लोगों को गलतफहमी हो गई है। यहाँ अब कुछ नहीं मिलता। ये अड्डा अब खत्म हो चुका है।"

वो मुड़ने लगा।

चारों दोस्त भी मायूस होकर वहां से लौटने लगे।

लेकिन तभी...

उमेश की आवाज़ पीछे से आई,

"रुको।"

वो चारों पलटे।

"देखो, कुछ महीने पहले पुलिस ने यहाँ रेड डाली थी। अब ये जगह काम की नहीं रही। लेकिन अगर तुम वाकई सच कह रहे हो... तो एक जगह है जहाँ अब भी कुछ सुराग मिल सकते हैं।"

उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई — जैसे खुद भी किसी साए से बच रहा हो। फिर धीरे से एक फटा-सा कागज़ जेब से निकाल कर राज को दिया।

"ये एक ख़ुफ़िया अड्डा है। मुंबई के अंदर है, लेकिन कोई नहीं जानता सीधे। यहाँ जाओ — हो सकता है तुम्हें वो मिले जिसे तुम ढूंढ रहे हो। पर याद रखना... मेरा नाम कहीं नहीं आना चाहिए।"

राज ने धीरे से सिर हिलाया।

"आपका नाम किसी को नहीं पता चलेगा। शुक्रिया सर।"

चारों दोस्त बिना कुछ बोले आगे बढ़ गए।

अब उनके पास **एक नया पता था, और दिलों में एक नई उम्मीद।**

अध्याय 77
वापसी उसी मोड़ पर – जिन्दगी या मौत

सुबह की हल्की धूप भिवंडी की गलियों से गुजरते हुए भी चारों दोस्तों के चेहरों तक नहीं पहुँच पाई थी। उनके माथे पर पसरी चिंता की लकीरें किसी गहरे तूफ़ान का इशारा कर रही थीं। जैसे ही राज ने मुंबई का एड्रेस देखा तो सभी की आँखे फटी की फटी रह गई, ये तो वसई का ही अड्डा था जहां से सभी ने बयाज़ पर पैसे लिए थे

गौरव ने पहली बार खुलकर डर को लफ़्ज़ दिए।

"राज, अगर इस बार हम वसई अड्डे पर गए... तो जिन्दा लौटने की कोई गारंटी नहीं है।"

राज थोड़ी देर चुप रहा, फिर उसकी आवाज़ में वही जाना-पहचाना ठहराव और बेबाकी लौट आई।

"जाना तो पड़ेगा ही गौरव। हम हर बार बुरे हालातों से बचे हैं, हो सकता है किस्मत इस बार भी हमारे साथ हो।"

सूरज ने नज़रे चुराते हुए पूछा,

"पर वहां जाकर कहेंगे क्या? वो तो हमें देखते ही पहचान लेंगे..."

विजय ने कहां ,

"हाँ भाई, बिना कोई वजह के अगर गए, तो शक तो होगा ही।"

राज ने सबकी बात सुनते हुए आंखें बंद कर लीं — और फिर खुलते ही जैसे प्लान तैयार था।

"हम कहेंगे... कि हम बयाज़ का पैसा लौटाने ही आ रहे थे। हमारे पास पैसे थे, मगर रास्ते में किसी ने बैग चुरा लिया।"

तीनों एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। साइलेंस में भी हल्की सहमति थी।

रात गहराने लगी।

हर मिनट उनके डर को और गहरा कर रहा था, लेकिन अब रुकने का वक्त नहीं था।

अगली रात — चारों दोस्त पुराने दुश्मनों की गली में, **वसई अड्डे** पर पहुँच चुके थे। वही अड्डा जहाँ कभी वो उधार लेकर निकले थे, और फिर वापसी का कोई रास्ता नहीं दिखा था।

अब उन्हें वही रास्ता दोबारा पार करना था... या वहीं रुक जाना था।

अध्याय 78

वापसी, मगर इस बार बेख़ौफ़

रात का वक्त था। वसई अड्डे की हवा में अब भी वही पुराना खौफ़ घुला हुआ था।

चारों दोस्त चुपचाप उस जगह लौटे थे, जहाँ से कभी कर्ज़ लेकर निकले थे और फिर भागते चले गए थे।

अब... उन्हीं पलों का सामना करना था।

"हेल्लो सर, कैसे हो आप? हमें भास्कर जी से मिलने जाना है,"

राज ने गार्ड से विनम्रता से कहा, मगर उसकी नज़रें अब भी सतर्क थीं।

गार्ड ने एक नजर सभी पर डाली और फिर मोबाइल निकाल कर भास्कर को कॉल लगाया। कुछ सेकंड बाद फोन रखकर बोला,

"ठीक है, तुम सब अंदर जाओ।"

राज ने फुसफुसाकर साथियों को चेताया,

"संभल कर चलना... यहाँ कुछ भी हो सकता है।"

वो अभी कुछ कदम ही चले थे कि सामने से भास्कर खुद प्रकट हुआ। वही रौब, वही चाल, मगर आज उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

"क्यों भाग रहे थे... इतने परेशान क्यों लग रहे हो?"

उसने पूछा, जैसे कोई पुराना दोस्त हल्का मज़ाक कर रहा हो।

"हमने तो बस एक कॉल किया था... और हाँ, अपने कुछ लोगों को भेजा था बात करने के लिए।"

"तो क्या आपको पैसे नहीं चाहिए थे?" राज ने सीधा सवाल किया।

भास्कर हँसते हुए बोला,

"बिलकुल नहीं। यही तो बताने के लिए कॉल कर रहे थे बार-बार।"

गौरव, जो अब तक चुप था, अचानक बोल उठा,

"तो फिर आपने अपने गुंडे क्यूँ भेजे थे?"

भास्कर की आंखों में हलकी चमक आ गई।

"ओये! वो गुंडे नहीं थे... मेरे आदमी थे। बस साइन लेने आये थे घर के कागजों पर। तुम साइन कर देते, वहीं रहते, ना ही हमें ताला लगाना पड़ता। मगर तुम भाग गए..."

राज ने जवाब दिया,

"हमें लगा... आप कुछ और करने वाले हैं।"

गौरव ने बात संभालते हुए कहा,

"ठीक है, आप वो फ्लैट ले लीजिए... जब हम पूरा पैसा दे देंगे, तब कागज़ वापस कर दीजिए।"

भास्कर ने सिर हिलाया।

"ठीक है, लेकिन अब दोगुना लगेगा। 25 लिए थे, अब 40 देने पड़ेंगे। कर सकते हो तो फ्लैट तुम्हारा।"

राज मुस्कराया।

"हमें मंज़ूर है।"

थोड़ी राहत भरी हवा चारों दोस्तों के बीच बहने लगी।

"लगता है आज रात यहाँ कोई महफ़िल सजने वाली है,"

राज ने चुटकी ली।

"क्यों नहीं!"

भास्कर ने खुले दिल से कहा,

"जाओ, जो मर्ज़ी खाओ-पियो... ऐश करो।"

चारों दोस्त अंदर तो चले गए... मगर इस बार वो मेहमान नहीं थे। वो निगाहें थे, जो हर कोने पर नज़र रख रही थीं।

महफ़िल तो थी, मगर प्लानिंग की। जंग की तैयारी अब पूरी थी।

अध्याय 79
गुंडे खुद हुए लापता

रात के सन्नाटे में एक SUV मुंबई की सुनसान सड़कों पर दौड़ रही थी। उसके अंदर बैठे कुछ साये, कुछ चेहरों की तलाश में थे।

जसवंत मालगुड़े के गुंडे थे वो—हर कोने, हर गली में अपनी आँखें जमाए।

"उन चारों को ढूंढ निकालो, चाहे जैसे भी हो,"

जसवंत मालगुड़े ने साफ़ कहा था।

लेकिन आसान कहाँ था ये काम?

कुछ ही घंटों पहले वो लड़के जैसे धुएँ की तरह आँखों से ओझल हो गए थे।

एक गुंडा, अपने झल्लाए चेहरे के साथ फोन पर जसवंत मालगुड़े को कॉल लगाता है।

"सर, हम उनका पीछा कर ही रहे थे... मगर ड्राईवर चिंकी को सु सु लगा तो सिर्फ एक मिनट के लिए गाड़ी साइड में लगे थी, मगर हम उनकी ही गाडी का पीछा कर रहे थे, मगर जब करीब आये तो वो नहीं थे, तब से हम पूरी कोशिश कर रहे है, मगर पता नहीं कैसे... वो सब हमारी आँखों से अचानक गायब हो गए।"

जसवंत मालगुड़े की आवाज़ जैसे आग के अंगारों पर लिपटी हुई थी।

"मुझे कुछ नहीं सुनना!"

उसकी आवाज़ गूंजती है,

"कल का दिन मेरे लिए बहुत खास है। उन्हें ढूंढ निकालो। अभी के अभी!"

गुंडा सहम कर बोलता है

"ठीक है सर, हम सब मिलकर उनका पता लगाते हैं।"

फोन कटते ही सब एक-दूसरे की तरफ देखते हैं।

"चलो... वसई के अड्डे की तरफ निकलते हैं, हो सकता है वो वहीँ हों।"

SUV फिर से स्टार्ट होती है, और गाड़ी अँधेरे को चीरती हुई निकल पड़ती है...

मकसद साफ़ था—उन लड़कों को ढूंढना, चाहे जैसे भी।

अध्याय 80

आख़िरी जश्न या अगली जंग ?

वसई अड्डे पर रात अपने पूरे रंग में थी। रोशनी, शराब और शोरगुल के बीच भास्कर की पार्टी ज़ोरों पर थी।

राज ने मुस्कुराते हुए भास्कर से कहा,

"बहुत बहुत मेहरबानी सर, बड़े दिनों बाद कोई ख़ुशी महसूस हुई है।"

भास्कर ठहाका लगाता है—

"जाओ, ऐश करो। आज रात सिर्फ मस्ती की रात है!"

लेकिन मस्ती करने की एक्टिंग करना । राज सब दोस्तों से धीरे से कहता है—

"कोई दारू नहीं पिएगा। बस एक्टिंग करना है। गिलास हाथ में रखो, नाचो-गाओ, मगर ध्यान पूरी तरह मिशन पर होना चाहिए।"

सभी दोस्त सहमति में सिर हिलाते हैं।

गाने बज रहे हैं, लोग झूम रहे हैं, दोस्त भी उसी भीड़ में शामिल हो जाते हैं…

तभी राज की नज़र एक अनजान चेहरे पर पड़ती है।

"अरे… ये तो जसवंत मालगुड़े का PA है!"

उसकी चाल, उसकी निगाहें और उसके इशारे भास्कर की तरफ़ इशारा कर रहे थे। कुछ तो गड़बड़ थी।

राज तुरंत सभी दोस्तों को बताता है—

"मैं इसके पीछे जाता हूँ। तुम लोग यहाँ सब संभालना। डॉक्टर, गाड़ी बाहर तैयार रखना। कुछ बड़ा होने वाला है।"

राज चुपचाप PA का पीछा करता है…

PA एक गुप्त दरवाज़े से अंदर जाता है।

राज भी उसी राह में उतर जाता है, मगर तभी एक बाउंसर की आवाज़ आती है—

"तू यहाँ क्या कर रहा है?"

राज थोड़ी देर के लिए लड़खड़ाता है, फिर शराबी की एक्टिंग करते हुए बोलता है—

"भाई, सु सु करने आया हूँ… बाथरूम कहाँ है भाई?"

बाउंसर उसकी हालत देखकर कहता है,

"बाथरूम ऊपर है, अब यहाँ नीचे मत आना।"

राज मुस्कुराते हुए ऊपर चला जाता है, और जैसे ही बाउंसर की नज़र हटती है, वो तेज़ी से अपने दोस्तों को पूरी जानकारी दे देता है।

"बच्ची यहीं है… यही अंदर... हम प्लान फाइनल करते हैं।"

मगर... तभी—

सायरन की आवाज़, शोर, अफरा-तफरी... **पुलिस की रेड!**

और वही पुलिसवाला, जो पहले किसी डांस बार में मिला था, अब सीधा विजय की ओर पिस्तौल तान देता है—

"अबे! तुम? तुम तो बोले थे कि ऐसी जगह नहीं आते! बेटा इस बार तू अंदर जायेगा… और जो भी पैसा है, बाहर कर दे!"

लेकिन तभी—

दूसरी ओर से अचानक गोलियाँ चलने लगती हैं।

गोलियों की आवाज़ में डर, भगदड़ और भागती ज़िंदगी…

राज इस अफरा-तफरी का पूरा फायदा उठाता है।

वो दोस्तों को इशारा करता है—"अब!"

राज सीधे उस गुप्त कमरे की ओर दौड़ता है, जहाँ बच्ची बंद थी।

दरवाज़ा तोड़कर बच्ची को कंधों पर उठाता है, और तेजी से बाहर की ओर भागता है।

पुलिस अब गुंडों को पकड़ने में जुटी थी…

सभी दोस्त एक-एक करके डॉक्टर की कार तक पहुँचते हैं… और राज के साथ उस बच्ची को लेकर वसई अड्डा छोड़ देते हैं।

सुबह का सूरज अभी निकला नहीं था, पर उनके चेहरों पर एक रौशनी थी—उम्मीद की।

वे सीधे **शालिनी के घर** पहुँचते हैं, वही बच्ची को सुरक्षित रखने का फैसला करते है।

उधर— जसवंत मालगुड़े का PA किसी गली के कोने से फोन लगाता है।

"सर, पुलिस की रेड पड़ गई। हम तो किसी तरह बच निकले, मगर बच्ची का क्या हुआ, ये नहीं पता।"

जसवंत मालगुड़े की साँस थमती है… और शब्द बर्फ़ की तरह गिरते हैं—

"अगर बच्ची नहीं मिली... तो हम सबका कल ख़त्म समझो..."

अध्याय 81
सौ करोड़ की चुप्पी

अगली सुबह थी... मगर राकेश सूर्यवंशी के घर में रात जैसा सन्नाटा पसरा था।

और राकेश सूर्यवंशी की आँखों से नींद कोसों दूर थी।

उसी वक्त जसवंत मालगुड़े अपने निजी सहायक के साथ राकेश के बंगले में दाखिल होता है। चेहरे पर मुस्कान थी, लेकिन आवाज़ में राजनीति की ठंडक।

"हैलो सर, कैसे हैं आप?"

"इतनी टेंशन मत लीजिए, हमारे आदमी और पुलिस दोनों बच्ची को ढूँढने में लगे हुए हैं।"

राकेश का चेहरा थका हुआ था, लेकिन उसकी आँखों में गुस्सा झलक रहा था।

"टेंशन तो रहेगी ही ठाकुर साहब, वो हमारी इकलौती बेटी है... और उसकी माँ का हाल देखा नहीं जाता..."

जसवंत मालगुड़े के चेहरे की मुस्कान एक पल को गायब होती है, मगर फिर वो उसी सियासी अंदाज़ में बोलता है—

"आप उसकी टेंशन मुझ पर छोड़ दीजिए, मगर एक बात और है... अगले महीने चुनाव है, और अगर अभी 50 करोड़ ट्रांसफर हो जाएँ तो..."

राकेश का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

"क्या? तुम्हें अभी भी अपने चुनाव की पड़ी है?"

जसवंत मालगुड़े ने तुरंत संयमित होते हुए कहा—

"देखिए सर, मुझे भी दुख है आपकी बेटी का, मगर... हमारा भी बहुत कुछ दांव पर लगा है..."

तभी राकेश का फ़ोन बजता है। वह फ़ोन उठाता है—

"हाँ, मैं राकेश सूर्यवंशी..."

सामने से एक जानी-पहचानी मगर सख़्त आवाज़ आती है, जो सीधे दिल में चुभ जाती है—

"अगर अपनी बेटी को ज़िंदा देखना चाहते हो, तो सौ करोड़ का इंतज़ाम करो... और अगला कॉल सुनो, एड्रेस मिलेगा..."

राकेश एक पल को सुन्न पड़ जाता है। पूरा बदन सिहर उठता है।

जसवंत मालगुड़े नज़रों से पूछता है— "किसका फ़ोन था?"

राकेश धीरे से कहता है—

"जिसका डर था, वही हुआ। फिरौती वालों का कॉल था... सौ करोड़ माँगे हैं..."

"क्या? सौ करोड़?"

"हाँ... और मुझे अकेले जाना होगा।"

जसवंत मालगुड़े तुरंत बोलता है—

"सर आपको ऐसा कुछ करने की ज़रूरत नहीं है, पुलिस हमारे साथ है। मैं स्पेशल यूनिट भेजूंगा आपके साथ..."

मगर राकेश सूर्यवंशी अब ठान चुका था। उसका चेहरा एकदम सख़्त हो गया था।

"अब और कुछ नहीं सुनना मुझे... ये मेरी बच्ची की ज़िंदगी का सवाल है। और जहाँ तक तुम्हारे पैसों की बात है, कल तक तुम्हारे अकाउंट में पूरे 50 करोड़ पहुँच जाएंगे। मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो..."

कहते हुए राकेश धीरे से उठता है, और सबको बाहर का रास्ता दिखा देता है।

अध्याय 82
"राज-नीति का पर्दाफाश"

गहरी रात थी... और राकेश सूर्यवंशी एक पुरानी, वीरान सी बिल्डिंग के सामने खड़ा था।

हाथ में भारी बैग था—*सौ करोड़ की फिरौती का बोझ* । उसकी आँखें इधर-उधर कुछ तलाश रही थीं, मगर माहौल में सिर्फ डर था... और दूर से आती कुत्तों के भौंकने की आवाज़।

उसने जेब से फोन निकाला और उसी नंबर पर कॉल किया जिससे उसे लोकेशन मिली थी।

"मैं पहुँच गया हूँ। अब क्या?"

सामने से आवाज़ आई—

"मैंने तुम्हें देख लिया है... वहीं खड़े रहो। ठीक दो मिनट में मेरा आदमी तुम्हारे पास आएगा। उसे बैग दे देना।"

राकेश सूर्यवंशी का दिल काँप रहा था। वो गुस्से और डर दोनों से भरा हुआ बोला—

"मगर मेरी बच्ची...?"

कॉलर हँसते हुए बोला—

"इतना पैसा कहाँ लेकर जाओगे? पाँच मिनट बाद तुम्हारी बेटी भी मिल जाएगी… तुम बस मेरी बात मानो।"

राकेश ने गहरी साँस ली और जवाब दिया—

"ठीक है।"

दो मिनट बाद एक संदिग्ध आदमी उसकी तरफ बढ़ा।

राकेश सूर्यवंशी ने बिना सवाल किए बैग उसके हाथ में दे दिया।

वो आदमी मुड़कर जाने ही वाला था कि **अचानक सिविल ड्रेस में पुलिसवालों ने उसे पकड़ लिया।**

ये सब बाहर खड़ी जसवंत मालगुड़े और उसका PA देख रहे थे।

जसवंत मालगुड़े गाड़ी स्टार्ट करता है, मगर तभी चारों तरफ से पुलिस वालों ने उसे घेर लेती हैं।

जसवंत मालगुड़े गाड़ी से बाहर आता है... और सामने राज खड़ा होता है।

राज की आँखों में जीत की चमक थी—

"जसवंत मालगुड़े, तुम्हारा खेल अब खत्म हो चुका है... और हाँ, बच्ची हमारे पास ही है।"

जसवंत मालगुड़े की आँखें फटी की फटी रह जाती हैं। तभी शालिनी बच्ची को गोद में लिए वहां आ जाती है।

बच्ची PA को देखते ही चीखती है— "मम्मी यही था! यही था वहाँ!"

राकेश सूर्यवंशी आगे आता है—

"जसवंत मालगुड़े ! तुम इतने नीचे गिर जाओगे, सोचा नहीं था।"

जसवंत मालगुड़े अब मुखौटे उतार चुका था। **उसकी आवाज़ में झुंझलाहट थी—**

"मुझे 200 करोड़ की ज़रूरत थी... और तुमने सिर्फ 50 के लिए मुझे टालते रहे। हर काम तुम्हारे लिए मैंने एक कॉल पर किया। मगर तुमने मेरी कीमत नहीं समझी। और बच्ची का अपहरण... वो मेरा मास्टरस्ट्रोक था। रैली से बेहतर मौका और क्या होता?"

राज एक कदम आगे बढ़ा, और मुस्कराते हुए कहा—

"जसवंत मालगुड़े ... तुम 20 साल से राजनीति कर रहे हो, मगर एक बात भूल गए..."

"...'राजनीति वही करे... जो राज निजी रखे।'"

तभी पुलिस जसवंत मालगुड़े और उसके आदमियों को गिरफ़्तार कर लेती है।

बच्ची की मां बच्ची को सीने से लगाकर रोती है।

मीडिया वाले कैमरे और माइक लेकर टूट पड़ते हैं।

सवालों की बौछार, कैमरों की चमक और पुलिस की सायरन—हर तरफ बस एक ही खबर थी: "सत्ता के चेहरे से नक़ाब उतर चुका है।"

अध्याय 83

"पंचर लाइफ से बॉलीवुड तक"

सुबह की हल्की धूप खिड़की से भीतर आ रही थी। चारों तरफ अख़बारों की सुर्खियाँ थीं— *"मुंबई में किडनैपिंग रैकेट का भंडाफोड़", सभी लापता हुए बच्चे मिले अपने परिवार से, "जसवंत मालगुड़े की गिरफ़्तारी", "छोटे शहर के युवाओं ने किया कमाल।"*

राज अख़बार लहराते हुए दोस्तों के कमरे में घुसा, और बारी-बारी सबके पिछवाड़े पर हल्के किक मारते हुए चिल्लाया—

"उठो मेरे प्यारे कमीनों! देखो अख़बार में हमारी फोटो! आज तो पार्टी बनती है!"

सभी दोस्त नींद में आँखें मलते हुए उठे।

सूरज जम्हाई लेता हुआ बोला—

"भाई... डांस बार छोड़ कर कही भी चलना ... कल भी सपने में गोलियाँ चल रही थीं!"

विजय मुस्कुराया—

"अबकी बार कोई नया अड्डा ढूंढेंगे!"

गौरव बालों में हाथ फेरते हुए बोला—

"अब नौकरी-धंधे की जरूरत नहीं भाई... अब तो फिल्म लाइन में जाना चाहिए। हीरो टाइप लग रहे हैं सब!"

राज थोड़ा संजीदा होकर बोला—

"दिल्ली से निकलते वक़्त यही सपना था... काश मुंबई में मुझे कोई फिल्मी काम मिल जाए..."

गौरव झट बोला—

"भाई, मेरी जान-पहचान में एक राइटर है, आज रात को बुला लेता हूँ!"

इसी बीच राज के फोन पर राकेश सूर्यवंशी का कॉल आता है। वो सभी को अपने ऑफिस बुलाते हैं।

ऑफिस के रिसेप्शन पर बैठे हुए दोस्त अब गौरव के राइटर दोस्तों की कहानी सुन रहे थे— "पंचर लाइफ"। जैसे ही राकेश फ्री होते हैं, वो सभी को केबिन में बुला लेते हैं।

राकेश सूर्यवंशी मुस्कराते हुए बोले

"कैसे हो मेरे हीरोज़?"

सभी ने एक साथ कहा

"All is well, सर!"

राकेश सूर्यवंशी ने पूछा—

"अब क्या प्लान है आगे का?"

राज कुछ कहने ही वाला था कि गौरव बीच में कूद पड़ा—

"सर, इसे फिल्म में काम करना है... बोल नहीं पा रहा, मगर हीरो बनने का टैलेंट है!"

राकेश सूर्यवंशी हँसते हुए बोले—

"अरे, क्यों नहीं! तुम सबने जो किया वो बड़ी बात थी... बताओ, कब मिलना है किसी प्रोड्यूसर से?"

राज ने फौरन कहा—

"सर, राइटर दोस्त बाहर ही बैठे हैं... फिल्म का नाम है 'पंचर लाइफ'..."

राकेश मुस्कराते हुए बोले—

"लगता है तुम्हारी ही ज़िंदगी की कहानी है... बुलाओ उन्हें अन्दर!"

राइटर दोस्त अन्दर आए, राकेश सूर्यवंशी को नमस्ते किया, और स्क्रिप्ट की बात शुरू हुई।

राकेश ने कहा—

"राज, कल एक एड्रेस मिलेगा, वहाँ जाना। तुम्हारा काम हो जाएगा।"

जैसे-जैसे बातचीत खत्म होती है, आवाज़ें धीमी होती जाती हैं... राकेश ऑफिस से बाहर निकलते हैं, और दोस्त उछलते-कूदते हुए बाहर आते हैं।

पार्श्व में एक उत्साहभरा सॉन्ग बज रहा है... कैमरा राज पर आता है— जो अब शूटिंग कर रहा है। उसके चेहरे पर आत्मविश्वास है, आँखों में चमक और पास में कैमरा।

और इस तरह... एक पंचर लाइफ बन गई एक फिल्म।

The End... या शायद... The Beginning.

उपन्यास 'Puncher Life' की झलकियाँ (Key Highlights)

1. **संघर्ष की शुरुआत:** एक शहर से दूसरे शहर जाकर नौकरी पाना, फिर उस नौकरी को खो देना — और इसके बाद जीवन में आने वाली परेशानियों की गहराई को रियलिस्टिक तरीके से दर्शाया गया है।
2. **पैसा बनाम प्यार:** असल ज़िंदगी में अक्सर पैसा प्यार पर भारी पड़ता है। यह **उपन्यास** इसी सच्चाई को कड़वी मगर सच्ची रोशनी में सामने लाती है।
3. **सच्ची दोस्ती की परिभाषा:** दोस्ती सिर्फ मौज-मस्ती और घूमने-फिरने का नाम नहीं है। जब ज़रूरत पड़े, तो दोस्त ही परिवार की तरह खड़े होते हैं — इस भावना को पूरी ईमानदारी से दर्शाया गया है।
4. **गुमशुदा बच्चों का दर्द:** जब कोई बच्चा लापता होता है, तो उसके परिवार पर क्या बीतती है — यह **उपन्यास** उस भावनात्मक त्रासदी को दिल छू लेने वाले अंदाज़ में दिखाती है।
5. **उधारी और ब्याज़ का जाल:** नौकरी जाने के बाद बैंक कर्ज़ और ब्याज़दारों का दबाव किसी भी इंसान को कैसे आत्महत्या तक के किनारे पर पहुँचा सकता है — इस सच को **उपन्यास** बड़ी संजीदगी से सामने लाती है।

6. **भ्रष्टाचार की जड़ें:** समाज के हर कोने में फैले भ्रष्टाचार को बारीकी से उजागर किया गया है — चाहे वो राजनैतिक गलियारा हो, पुलिस महकमा या कोई आम संस्था।

7. **मस्ती, म्यूज़िक और मुंबई का असली फ्लेवर: उपन्यास** में आपको ऑफिस की मस्ती, दोस्तों के साथ घर की हलचल, मुंबई की नाइट लाइफ़, डांस बार की चमक-दमक, पुलिस का रफ़्तार भरा अंदाज़, टपोरी स्टाइल, सड़क और गलियों की नोक-झोंक और कॉमेडी का भरपूर डोज मिलेगा — जो आपको हँसने पर मजबूर कर देगा।

लेखक परिचय

राकेश कुमार 'सर्वोदय' का जन्म हरियाणा के रेवाड़ी डिस्ट्रिक्ट में हुआ, पर उनका बचपन, शिक्षा और व्यक्तित्व का निर्माण दिल्ली की गलियों में हुआ। 'सर्वोदय' शब्द उन्हें बचपन से ही आकर्षित करता था, जो आगे चलकर उनके नाम का स्थायी हिस्सा बन गया। मुंबई में लोग उन्हें स्नेहपूर्वक 'Raka Bhai Radhe' के नाम से भी जानते हैं।

राकेश ने दिल्ली स्थित अपनी बारहवी तक की पढाई Govt. Sarvodaya Bal Vidyalaya D Block Janak Puri से पूरी की, जिसके ठीक सामने पिछले 44 सालों से प्रसिद OMI छोले भठूरे की शॉप है। इसके तुरन्त बाद दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. (पार्ट टाइम) की पढ़ाई की और साथ ही एशिया की प्रतिष्ठित संस्था I.T.I पूसा से मोटर मैकेनिक का दो वर्षीय नियमित कोर्स पूरा किया। इसके बाद उन्होंने तीस हजारी स्थित दिल्ली पुलिस मोटर ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट से एक वर्ष की अप्रेंटिसशिप करते हुए राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की।

जनवरी 2004 से मई 2005 तक उन्होंने दिल्ली स्थित Connaught Place हिंदुस्तान टाइम्स में ऑडिट एग्ज़ीक्यूटिव की भूमिका निभाई और वहीं से उनकी मुंबई यात्रा का "प्रारंभ" हुआ। मुंबई में काम के साथ-साथ उन्होंने Sikkim Manipal University से Marketing में 2 साल का पार्ट टाइम MBA भी पूरा किया। मीडिया की चकाचौंध और संघर्षों ने धीरे-धीरे उन्हें लेखन की ओर मोड़ दिया, जहाँ उन्होंने कविताएँ, संवाद और कहानियाँ रचना प्रारंभ कीं।

करीब दस वर्षों तक मीडिया इंडस्ट्री से जुड़े रहने के बाद, अक्टूबर 2017 में उनके एक करीबी सहयोगी, बॉस श्री राजन गुप्ता जी जब फिल्म निर्माता बने, तो राकेश की फिल्मी यात्रा को नई उड़ान मिली। अक्टूबर 2020 से फरवरी 2021 के बीच उन्होंने अपनी पहली हिंदी फ़िल्म "Puncher LIFE" की स्क्रिप्ट पूरी कर ली। हालांकि, दिल्ली-मुंबई की आपाधापी और जीवन संघर्षों के चलते फिल्म निर्माण अधूरा रह गया।

यहीं से जन्म हुआ एक विचार का — उस अधूरी फिल्म को एक पूर्ण उपन्यास के रूप में जीवंत करने का। और इसी सोच ने जन्म दिया इस पुस्तक को "Puncher LIFE" ।

यह सिर्फ़ एक कहानी नहीं, बल्कि उन तमाम जिंदगियों की झलक है जो रोज़मर्रा की पंचर होती सड़कों पर भी मुस्कुराते हुए चलना नहीं छोड़तीं।

"Jeena इसी का नाम है..."

विशेष आभार मेरे पिताजी स्वर्गीय श्री श्रीराम जी का, जो अब इस दुनिया में नहीं है, जीवित रहते अगर बच्चों को कुछ कामयाबी मिल जाये तो अच्छा है, मगर जिंदगी कब तक रहने वाली है ये सब कोन जानता हैं।

Rakesh Kumar Sarvodaya
Email :- rakesh1000@gmail.com

"राजनीती वही करे, जो राज 'नीजी' रखे।"